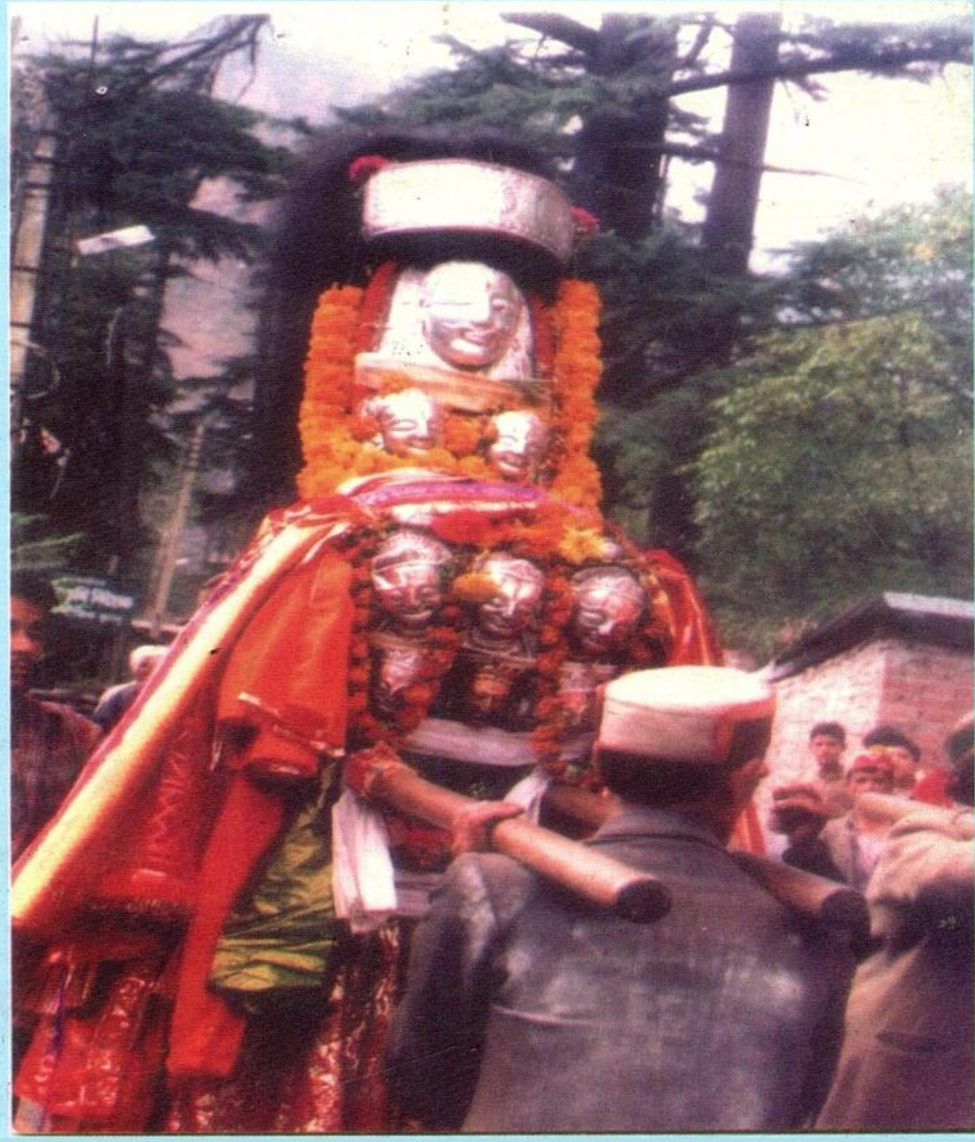
डॉ. सूरत ठाकुर

हिमाचल की देव-भार्याएं



हिमाचल की देव-भार्थाएं

डॉ. सूरत ठाकुर
एम.ए., पीएच.डी.(संगीत),
एन.डी. (नेचुरोपैथी),
पी.जे.एम.सी. पत्रकारिता एवं जनसंचार

अक्षरधाम प्रकाशन
करनाल रोड,
कैथल-136027 (हरियाणा)

ISBN-978-93-82341-86-4

अक्षरधाम प्रकाशन
करनाल रोड,
कैथल-136027 (हरियाणा)
फ़ोन : 01746-235862, 09215897365
E mail : akshardhamparkashan@gmail.com

●

मूल्य : भारत में ₹ 200.00
विदेश में 20 $ (यू. एस. डालर)
प्रथम संस्करण : 2013

●

मुद्रक : सुकीर्ति प्रिंटर्ज,
करनाल रोड, कैथल

₹ 200.00

विषय अनुमणिका

प्राक्कथन

लोक गाथाओं का लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य में अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। आज की जीवन शैली के प्रवाह में जिस प्रकार से हमारा सांस्कृतिक जीवन विचलित हुआ है, उससे लोक संस्कृति की समर्थ शक्ति लोक साहित्य की अक्षय निधि का निरन्तर क्षय हो रहा है जिसमें लोक गाथाओं की अनेक महत्वपूर्ण कड़ियां विलुप्त हो चुकी हैं। अभी तक ये लोकनिधि जितनी बची है, उसके संरक्षण के सजग प्रयास की त्वरित आवश्यकता है।

देवभूमि हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाओं में देव भार्थाओं की समृद्ध परम्परा विद्यमान है। देव भार्थाओं को देवपर्वों में सुनाने का एक निश्चित विधान है। देव-आस्था प्रधान समाज द्वारा देव विधान के निष्ठापूर्वक अनुपालन के फलस्वरूप ये भार्थाएं पर्याप्त सुरक्षित रही हैं, लेकिन कालचक्र की गति के साथ इनमें भी धीरे-धीरे अनेक न्यूनताएं प्रवेश कर रही हैं। अतः सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में सदा सचेष्ट, लोक साहित्य के गूढ़ अध्येता डॉ. सूरत ठाकुर का हिमाचल प्रदेश की देव भार्थाओं का प्रस्तुत संकलन एक अद्वितीय ऐतिहासिक कार्य है। देव भार्थाएं जिन्हें गाथा, गणाई आदि नामों से जाना जाता है, में सम्बन्धित देवी देवता का अपना कथा वृत सुनाया जाता है। सामान्यतः इसे देवता के गूर निश्चित देव पर्वों के अवसर पर सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य दिनों में इसे सुनाने की प्रथा नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में इन भार्थाओं को लिपिबद्ध करना डॉ. सूरत ठाकुर की अपने संकल्प के प्रति दृढ़ता तथा इनकी कार्य कुशलता का परिचय है। लेखक भार्था के मौलिक रूप को अपरिवर्तित रखने के पक्षध ार हैं। इसलिए इन्होंने इनके मूल रूप में परिवर्तन नहीं किया है। इनका मानना है कि इसमें भावी अनुसन्धान के लिए मौलिक स्रोत सामग्री प्रामाणिक रूप में सुलभ होगी जिससे वास्तविक परिप्रेक्ष्य में तथ्यपरक यथार्थ मूल्यांकन सम्भव होगा।

भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता के पुरुषोत्तम योग नामक 15वें अध्याय के 18वें श्लोक में कहते हैं कि मैं नाशवान् पदार्थों से तो सर्वथा अतीत हूं और अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूं। इसलिए लोक और वेद

में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ-

यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादीप चोत्तमः।
अतोस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।

यहां लोके वेदे च के कथन में लोक की स्वीकार्य महिमा सर्वप्रतिष्ठित गीता शास्त्र में स्वीकृत है। महर्षि वेदव्यास ने महाभारत के उद्योग पर्व में कहा है कि कोई भी व्यक्ति लोक का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करके ही सर्वदर्शन एवं सर्वज्ञान में सम्पन्न हो सकता है-

प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः।

डॉ. सूरत ठाकुर की कृति में लोक का प्रत्यक्ष दर्शन है और लोक के इस प्रत्यक्ष दर्शन में वैदिक संस्कृति से अनुप्राणित भारतवर्ष की राष्ट्रीय सनातन चिन्तन धारा का साक्षात् प्रवाह है।

यदा-कदा कुछ विद्वान लोक संस्कृति का राष्ट्र की सनातन संस्कृति से भिन्न एक अलग ही अस्तित्व स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। लोकमानस एवं लोक संस्कृति में राष्ट्र का सर्व समावेशी चैतन्य स्वतः स्फूर्त होता है। देव भार्थाओं में यह चैतन्य अधिक मुखरित पाया जाता है। इस पुस्तक की देव भार्थाओं में भी जहां आंचलिक परिवेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के विविध आयाम अभिव्यक्त होते हैं, वहां इनमें भावनात्मक राष्ट्रीय एकता की सहज अनुभूति अन्तर्निहित है।

निस्संदेह यह कृति भावी अनसंधित्सुओं के लिए मील पत्थर साबित होगी और सुधी पाठकों में समादृत होगी। हार्दिक शुभकामनाएं।

-डॉ. विद्याचन्द ठाकुर
पूर्व उपनिदेशक,
भाषा एवं संस्कृति विभाग, हि०प्र०
गांव-खोड़ा आगे, डाकघर-पीज
ज़िला-कुल्लू हि.प्र.-175101

लेखकीय

हिमाचल प्रदेश में हर घर, हर कुल तथा गांव में किसी न किसी देवता की अराधना होती है। ये देवता ही लोगों के जीवन की धुरी होते हैं। इनसे पूछकर ही हर ग्रामवासी अपने खेत-खलियानों में काम करता है, नये घर का निर्माण करता है तथा विवाह-शादी जैसे पवित्र बन्धन भी इन्हीं की इच्छा से पूर्ण होते हैं।

ये देवी-देवता यहां कैसे आये? इन्होंने कौन-कौन से चमत्कार दिखाये? किस तरह इन्होंने लोगों की इच्छाओं की पूर्ति की और किस तरह इन्हें दुष्टों से बचाया आदि का उल्लेख इनकी भार्थाओं में रहता है। इनकी भार्थाओं में इनका इतिहास छुपा रहता है। अतः इनकी शक्तियों को जानने के लिए इनकी भार्थाओं को समझना आवश्यक है।

लगभग सभी देवी-देवता प्रतिवर्ष माघ मास की संक्राति को शक्ति अर्जित करने के लिए स्वर्ग लोक प्रस्थान करते हैं। वहां से पन्द्रह माघ या फागुन सक्रांति या चैत्र मास की सक्रांति को वापिस लौटते हैं। तब इनके गूर भार्था सुनाते है। इसके अतिरिक्त ये जब अपने जन्म दिन को मनाते हैं तो अपने गूर के माध्यम से अपनी गाथा को भार्था के रूप में सुनाते हैं।

भार्थाओं को संकलित करना बहुत कठिन काम है। प्रदेश के अधिकांश देवता अपनी भार्था बताने की अनुमति नहीं देते। जो देवता फागली या पर्व के अवसर पर भार्था का लेखन करने की अनुमति देते भी हैं, तो उनके गूर जब भार्था सुनाते हैं तो उनका स्वर बहुत धीमा होता है, जिससे उन द्वारा गाये गए शब्दों का पता ही नहीं चलता। भार्था सुनाते समय उन्हें टोकने या दोबारा बोलने पर प्रतिबन्ध रहता है। हालांकि जब से इलैक्ट्रॉनिक उपकरण उपलब्ध हो गए हैं, तब से भार्थाओं को सुनाते हुए वीडियोग्राफी करने की इजाज़त मिलने लगी है, वह भी बहुत कम देवताओं के यहां।

भार्थाओं को अधिकांशतः गूर ही सुनाते हैं। जब नया गूर निकलता है तो उसे वरिष्ठ गूर के सान्निध्य में रह कर भार्थाएं सीखनी पड़ती हैं। कई स्थानों पर ढोल बही भी मिलती है। गूर उनसे भी भार्थाओं को स्मरण करता है।

इन भार्थाओं को संकलित करते समय हमने वीडियोकैमरा तथा टेपरिकार्डर का सहारा लिया है। कुछ स्थानों पर गूर भी भार्था सुनाने के लिए सहमत हुए हैं। कुछ मित्रों के पास भी भार्थाएं उपलब्ध थी, जिन्हें उन्होंने सहर्ष देना स्वीकर किया। कुछ भार्थाएं तथा गाथाएं पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं से भी उपलब्ध हुई हैं।

मुझे जिस भी माध्यम से भार्थाएं मिली। उन सब को इस पुस्तक में पिरोने की कोशिश की है। इन्हें हिन्दी अनुवाद सहित देने का प्रयोजन हिमाचल के बाहर के पाठकों तक पहुंचाने का मकसद रहा है। ताकि वे भी इन के मूल को समझ सकें। इन भार्थाओं में बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनका अर्थ गूर भी नहीं जान सके। उनका कहना है कि हमने जैसा सुना वैसा ही सुना दिया। परिवर्तन के साथ भाषा-बोली में परिवर्तन होना सम्भव है, इसलिए हो सकता है कि कुछ शब्द अब प्रचार में नहीं रहे होंगे। अतः उक्त शब्दों के स्थान पर मिलता-जुलता अर्थ देने की कोशिश की है।

कई बर्षो से इन भार्थाओं को संकलित करता रहा और देवी देवताओं के आशीष से इन्हें प्रकाश में लाने का साहस जुटा पाया हूं। भार्थाओं के साथ कुछ देवगाथाएं भी इस संकलन में दी गई है। कुछ वर्षो के बाद इनको सुनाने वाले भी नहीं रहेंगे तो ये हमेशा के लिए समाप्त हो जायेंगी। भार्थाओ को सुनाने वाले दिन प्रतिदिन इन्हें भूलने लगे हैं। इन्हें प्रकाशित करने का मकसद है इनका संरक्षण, ताकि हिमाचल प्रदेश की देव संस्कृति की यह थाती सुरक्षित रह सके।

इनके संग्रहण व विश्लेषण में डॉ. विद्याचन्द ठाकुर, श्री दानवेंन्द्र सिंह, श्री दीपक शर्मा, डॉ. विद्यासागर नेगी, श्री होतम सिंह पाल, श्री हीरा लाल ठाकुर, श्री तेजराम नेगी, व श्री तोबदन का अत्यन्त आभारी हूं। उन गूर, पुजारियों, वादकों तथा अन्य कार-करिन्दों के सहयोग के बिना पुस्तक को आकार देना सम्भव न था। अतः उनका बिशेष धन्यवादी हूं। यह पुस्तक श्रद्धालुओं, शोधार्थियों एवं पाठकों के लिए उपयोगी होगी तो समझूंगा मेरा प्रयास सार्थक हुआ। धन्यवाद।

-डॉ. सूरत ठाकुर

प्रथम अध्याय

देव संस्कृति

जगत को लोक कहा जा सकता है, जहां मानव जाति रहती है। मानव जाति का जहां-जहां भी बसर रहता है, उसे ही वहां का लोकजीवन कहा जाएगा। ऋग्वेद में जहां एक ओर लोकशब्द का प्रयोग जीव तथा स्थान दोनों अर्थों में हुआ है, वहीं पाश्चात्य कोशकारों ने इसका अर्थ साधारण लोक, सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल एवं प्राकृतिक जीवन के अभ्यस्त लोगों के जीवन से लिया है। मेरा मानना है कि समस्त प्राणी जहां विचरण करते हैं, चाहे वे साक्षर हों या निरक्षर सभी लोक के दायरें में आते है। इसमें कृत्रिम व प्राकृतिक जीवन जीने वाले सभी लोक की परिधि में आते हैं। स्थानवाची शब्द के रूप में लोक का अर्थ जगत, संसार या विश्व का कोई विशिष्ट भाग अथवा स्थान जहां कुछ अलग प्रकार के जीव या प्राणी रहते हैं-जैसे जीव लोक, प्राणी लोक, देवलोक, ब्रह्म लोक, मनुष्य लोक। आधुनिक व्यवहार में लोक शब्द अंग्रेजी के फोल्क शब्द के पर्यायवाची रूप में प्रकट हुआ है। आक्सफोर्ड शब्दकोश में फोक शब्द का अर्थ लोग, राष्ट, जाति, जनजाति या विशेष वर्ग के लोग तथा एक परिवार के विशेष लोगों से लिया गया है। लोक का अर्थ देखना भी है। लोक शब्द संस्कृत के लोकदर्शन धातु में धू् प्रत्यय लगाकर बना है जिसका अर्थ है देखनेवाला।[1]

लोक मनुष्य का वह वर्ग है, जो अभिजात संस्कार, शास्त्रीयता और पाण्डित्य की चेतना अथवा पाण्डित्य के अहंकार से शून्य है और जो परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है। लोक शब्द का प्रचलित अर्थ दो प्रकार से हैः एक विश्व तथा दूसरा जनसाधारण।

संस्कृति

मानव प्रायः बुद्धि के बल पर ही आनंद की खोज करता है। वह अपनी किसी रचना को पूर्ण मानकर संतुष्ट नहीं होता, अपितु उसे और भी सुंदर बनाने की चेष्टा करता है। उसका यही प्रयास संस्कृति को जन्म देता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य की श्रेष्ठ साधनायें, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्यिक और बौद्धिक साधना का फल होती हैं। उसका वास्तविक सम्बन्ध जीवन की आंतरिक आवश्यकताओं से होता है। लोक संस्कृति का अर्थ मन का विकास, रूचि का सुधार, आचार-विचार का परिमार्जन और ज्ञान का संवर्धन है। संस्कृति के अनुसार किसी समूह या व्यक्ति की संस्कृति का मानदण्ड उसका ज्ञान, साहित्य, संगीत एवं कला से प्रेम के संस्कार हैं। व्यक्तियों के समूह की कलात्मक तथा बौद्धिक उन्नति का नाम ही संस्कृति है। जिस प्रकार वर्षा के पश्चात आकाश में इन्द्रधनुष बड़ा सुंदर और आकर्षक दिखता है, उसी प्रकार संस्कृति के विविध रंग भी अपने सौन्दर्य में किसी समाज के आकर्षक रूप को प्रकट करते हैं।

संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। संस्कार शब्द का प्रयोग उन विशिष्टक्रियाओं को सूचित करने के लिए किया जाता है, जिनको किसी न किसी शास्त्र में मनुष्य के जीवन में उसकी उन्नति की ओर ले जाने योग्य निश्चित किया गया है। हमारे सोलह संस्कार इसी के द्योतक हैं। वैसे तो संस्कृति में स्थायित्व का पुट अधिक होता है, फिर भी यह स्वतः परिवर्तित भी होता रहता है। संस्कृति और सभ्यता में यह अन्तर होता है कि संस्कृति स्वतः परिवर्तित होती है। संस्कृति का सीधा सम्बन्ध मानव की आंतरिक भावनाओं से होता है और सभ्यता की सफलता बाहय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। संस्कृति का व्यवहारिक रूप अशिक्षित कहे जाने वाले लोगों के पास ही होता है।

लोक संस्कृति के अंग

मानव के सब संस्कार जो लौकिक और पारलौकिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हुए समाज के सर्वांगीण जीवन का निर्माण करते हैं, लोक संस्कृति के अंग कहे जा सकते हैं। इनमें व्यक्ति समाज और देश की

आत्मा निहित रहती है। इनके चिन्तन, मनन, रहन-सहन और कला-कौशल आदि का समावेश संस्कृति में रहता है। व्यापक दृष्टि से देखा जाये तो संस्कृति सोशल हैरिटेज अथवा जीने का ढंग है। लोक संस्कृति किसान के हल की आकृति नहीं है जो लोक संस्कृति के विधान को अपनी ओर आकर्षित करे, प्रत्युत वे उपचार और अनुष्ठान हैं, जिन्हें किसान हल जोतते वक्त करता है। पुल अथवा किसी भवन का निर्माण नहीं है, अपितु वह पूजा पाठ है, जो उस समय किया जाता है। लोक संस्कृति वस्तुतः मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यकित है।

कला-कौशल संस्कृति का अभिन्न अंग है जिसके अन्तर्गत लोक में प्रचलित हर्षोल्लास को व्यक्त करने वाले लोकनृत्यों, लोकनाटकों आदि मनोविनोदों का वर्णन कर सकते हैं। मेले और त्योहार तो संस्कृति का प्राण होते हैं। इन्हें लोकजीवन की झांकी भी कह सकते हैं। मेले और त्योहार किसी न किसी ऐतिहासिक तथा धार्मिक घटना की उपज होते हैं, जो अपने स्वरूप को खोये बिना निरन्तर हर वर्ष धूमधाम से मनाये जाते हैं। शकुन-अपशकुन में, ज्योतिष में, स्वप्न मे, भागयवाद तथा जादूटोनों में विश्वास आदि सभी लोक संस्कृति के अंग कहे जा सकते हैं।

लोक संस्कृति को स्वतः सुरक्षित रखने में मेलों एवं त्योहारों, संस्कारों एवं व्यवहारों आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मेलों की प्राचीन काल से चली आ रही प्रथाओं को यदि पूर्णतया बन्द किया जाये तो उस मेले का महत्व अपने आप समाप्त हो जाएगा। लोक संस्कृति को सुरक्षित रखने का एक मात्र सशक्त साधन पाण्डुलिपियां, पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकायें हैं।

भूत पर ही वर्तमान स्थित है और भविष्य का निर्माण वर्तमान से ही सम्भव है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि वर्तमान को प्रकाशित करके सुरक्षित रखा जाये। संस्कृति के आयाम हमें अतीत की खूबियों को दिखाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। आज की संरक्षित संस्कृति कल का इतिहास हो सकती है। यही हमें पूर्वजों के जीने के ढंग से परिचय करवाने में सक्षम है।

मनोरंजन लोक संस्कृति का प्रमुख ध्येय है ही, परन्तु यह समाज का असली चेहरा उजागर करने में दर्पण का काम भी करती है। जिस प्रकार

हम दर्पण देखकर अपने चेहरे के हाव-भाव को देख सकते हैं, उसी प्रकार संस्कृति भी समाज की मनोगत भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम होती है। संस्कृति एक शिक्षक के रूप में नैतिकता, आस्तिकता, परस्पर विश्वास एवं स्नेह की भावना को बल देती है। वास्तव में लोक संस्कृति मानव जाति को शांति और कल्याण के पथ पर ले जाने में भाई चारे का मार्गदर्शन कराने में, एकता के सूत्र में बन्धवाने और अतीत का स्वरूप दिखाने में अहं भूमिका निभाती है।

देव संस्कृति

महर्षि यास्क ने देवता शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया है-

देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा द्योतनाद्वा।

द्युस्थानौ भवतीति वायो देवः सा देवता।।

अर्थात् दातृत्व शक्ति से युक्त दीपन और द्योतन करने वाले को देव कहा जा सकता है। देव ही देवता कहलाता है। जो देता है वही देव है। ये देवता ब्रह्माण्डन्तर्गत वस्तुओं की उत्पति के लिए अपने-अपने अंशों का दान करते हैं। अतः ये देवता कहलाते हैं। दर्शन एवं आगम की परिभाषा में जिसे शक्ति कहते हैं, वेदों में वही प्राण अथवा देवता कहलाता है। मानव शरीर में दसों इंद्रियों तथा मन, बुद्धि, चित, अहंकार के रूप में चतुर्धा निरूपित अन्तःकरण को प्रकाशित करने वाली शक्तियों को भी देवता कहते हैं।[2.]

दिव् धातु से देवता शब्द निष्पन्न होता है। वैसे देवता शब्द का अर्थ है:-

जायमानौः वै जायते सर्वाभ्य एताभ्य एव देवताभ्यः।

अर्थात् जो विश्व का उपादान का मूल कारण है वह देवता है। हिन्दु संस्कृति में सर्वप्रथम देवतावाद के प्रसारक वेद ही हैं। ये परमात्मा के उत्तम अंग माने गये हैं। इसीलिए देवपूजा हिन्दु संस्कृति का एक अंग है। हिमाचल के अधिकांश भागों में देवता को देऊ या देओ कहा जाता है। देऊका अभिप्रायः होता है देने वाला अर्थात् जो पूजक की अभिलाषाओं की पूर्ति करता हो। किन्नौर में इसे 'शू' तथा लाहुल में ला कहते हैं। यहां के

वासियों के मतानुसार देवताओं में अलौकिक शक्ति रहती है, इसी कारण इनका देवताओं में अगाध विश्वास रहता है। देव आस्था के सहारे ही लोग जीवनयापन में आने वाली मुश्किलों से जूझते हैं।

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है। यहां की पूरी संस्कृति देवी देवताओं के इर्द-गिर्द घूमती है। जन्म से लेकर अवसान तक प्रत्येक संस्कारों तथा परम्पराओं में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यहां के सभी रीति-रिवाज़ देवी-देवता की उपस्थिति में इनके आशीर्वाद से ही सम्पन्न होते हैं। खेत में हल चलाना हो, बीज बोना हो, फसल काटनी हो, गृह निर्माण करना हो, बच्चे का नामकरण करना हो तथा शादी-व्याह करना हो, प्रत्येक अवसरों पर देवता की अनुमति व उपस्थिति अनिवार्य होती है। अनिष्ट शक्तियों से गांव की रक्षा करने हेतु देवताओं द्वारा सुरक्षा फेरा लगाने की परम्परा यहां आम चलन में है। जहां परिवार व गांव की सुख समृद्धि में देवी-देवता सहायक होते हैं, वहीं ये असाध्य रोगों से बचाव हेतु विभिन्न प्रकार के तांत्रिक अनुष्ठान भी करवाते हैं। देवी-देवताओं का वर्चस्व इतना अधिक है कि यहां हर घर का गृह देवता, कुल का कुल देवता, गांव का ग्राम देवता होता है। ये देवी-देवता लोगों के संगी हैं, साथी हैं, पथ प्रदर्शक है, सम्बल हैं, सहारा हैं एवं सर्वोपरी भगवान हैं। लोग इनके साथ बातचीत करते हैं, रूठते हैं, मनाते हैं और हर सुख-दुख में भागीदार बनते हैं। देवताओं और श्रद्धालुओं का आपस में इतना गहरा रिश्ता होता है कि ये अपने इष्ट देवता के साथ तू-तड़ाक करके बातें करते हैं। वास्तव में देवी देवताओं से मानवीय रिश्ते स्थापित करना और ऊंचे आदर्श स्थापित करने वाले मानवों को देवताओं की तरह पूजना यहां की अनूठी परम्परा का हिस्सा है।

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर, लाहुल-स्पिति तथा चम्बा के पांगी के कुछ क्षेत्रों में रहने वाले बोद्ध मतावलम्बियों को छोड़कर लगभग समस्त प्रदेश में सनातन धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं, इनकी मान्यता है कि इनके जीवन का नियन्ता देवता ही है, जो इनका भरण पोषण करते हैं। लौकिक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि जिसके द्वारा उपकार हो वह देवता माना जाता है। उदाहरण के लिए अग्नि, वायु, सूर्य आदि ऐसे देव हैं जिनके अस्तित्व से चर-अचर जगत का कल्याण होता है, ये मनुष्य, पशु, पक्षी

आदि जीवों को जीवित रहने के लिए साधन उपलब्ध करवाते हैं।

देवमूर्ति

सनातन धर्म में मूर्ति पूजा का विधान है। हम अपने पूज्य की तस्वीर या मूर्ति बनाकर पूजते हैं। हिमाचल प्रदेश में भी देवी देवताओं की मूर्तियों का पूजन किया जाता है। कहीं पर ये प्रस्तर मूर्ति के रूप में मंदिरों में अवस्थित रहते हैं और कहीं देवी-देवताओं के रथों में मुखौटों या मोहरों के रूप में सुस्सजित रहते हैं। ये मुखौटे सोना, चांदी, पीतल तथा अष्टधातु के बने होते हैं, जिनकर बजन आधा किलो से एक किलो तक होता है। इन्हें देवता की इच्छानुसार स्थानीय सुनार व लुहार बनाते हैं। जिस समय ये मुखौटे बन रहे होते हैं उस प्रक्रिया को 'घाट पड़ना' कहते हैं। उस समय गांव वाले विवाह-शादी जैसे शुभ कार्य नहीं करते। मुखौटे बनने के बाद विधि विधान के साथ देवरथ में लगाये जाते हैं।

देव रथ

पौराणिक आख्यानों में देवी देवताओं के वाहनों को साकार रुप देने के लिए हिमाचल के लोगों ने भी इनके वाहनों की कल्पना की है। जिसे कुल्लू में रथ, कांगड़ा में पालकी, शिमला में रौथ तथा किन्नौर में रथड़ कहा जाता है। ये रथ लोगों की कल्पनाशीलता एवं मूर्ति पूजा का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। ये देवी-देवताओं के ऐसे वाहन हैं जो लोगों के कंधों पर चलकर देवयात्रा, देवली, परिक्रमा इत्यादि करते हैं। उत्तर-प्रतिउत्तर देते हैं। देवताओं की पालकियां या रथ प्रत्येक मेलों में नाचती हैं। ढोल-नगाड़े की मधुर धुनों के साथ देवता मानव की तरह हार श्रृंगार कर वस्त्राभूषणों से सुस्सजित होकर लोगों से मेल मिलाप करते हैं।

श्रद्धालु अपनी कल्पना के अनुसार रथों का निर्माण करते हैं। जैसे-जैसे लोगों की आस्था बढ़ती गई, रथ निर्माण की प्रक्रिया भी बढ़ती गई। कुछ देवता कुछ अन्तराल पर नए रथ बनाते रहते हैं। जब एक रथ की शक्ति क्षीण होने लगती है तो नया रथ बनाया जाता है। किसी ज़माने में दो गांवों का एक ही रथ होता था। बाद में दोनों गांव वाले अलग-अलग रथ बनाते रहे हैं। जहां देवता पिंडी या मुखौटे रुप में प्रकट होता है तो लोगों को रथ बनाने हेतु आदेश भी देते हैं। फलस्वरुप वहां भी रथ बन

जाता है। रथ देवदार, ची, आंगू, खिड़की, रई या तोस के वृक्षों से बनाए जाते है। नए रथ बनने पर इसकी विधि विधान के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा भी की जाती है।

यहां रथों की विभिन्न शैलियां प्रचलित हैं। इनमें शुरू की शैली करडू शैली है। रथों की यह शैली सबसे पुरातन है। कुल्लू को ठारह करडुओं का देश कहा जाता है। करडू का अर्थ होता है करन्डी। यह बांस से बनी हुई गोल टोकरी होती है जिसे हाथ में पकड़कर इधर उधर ले जाया जाता है। यह टोकरी लगभग डेढ़ फुट के व्यास की गोल डेढ़ फुट उंची होती है। टोकरी के अंदर देवता के मुखौटे रखे जाते हैं, साथ ही फूल आदि भी रखे जाते हैं। करडू के ऊपर चारों तरफ एक से लेकर पांच छत्र भी लगाए जाते हैं। छत्र चांदी के बने होते हैं। करडू के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि देवता जमलू जब अपने साथ करडू में 18 देवताओं की प्रतिमाएं उठाए हुए हामटा जोत पर पहुंचे तो भयंकर आंधी से टोकरी में विद्यमान सभी देवता उड़ गए और कुल्लू के विभिन्न भागों में प्रकट हुए। कुल्लू के कोटकण्ढी के देवता पंजवीर तथा जाणा के जीवनारायण के रथ करडू में ही हैं।

छत्रनुमा शैली का खड़ा रथ लगभग दो फुट बर्गाकार में चौकोर आकार का खड़ा रथ होता है। चार पायों पर निर्मित इस रथ की लम्बाई 4 से 6 फुट होती है जिसमें फट्टे लगे होते हैं, जो पायों से कंधें तक लगभग 2 फुट चौकोर तथा 3 फुट ऊंचा होता है। इसमें चारों तरफ पायों के साथ जुड़ी हुई लकड़ी की दो इंच की शहतीरें लगी होती हैं। इन्हीं शहतीरों में आगे और पीछे चार छेद अर्गलाऐं डालने के लिए होते हैं। यह अर्गलाएं जिसे जमाण भी कहा जाता है, देवता के पैर और भुजाएं मानी जाती हैं। कंधे पर चांदी के चारों ओर चांदी के जुडू लगाए जाते हैं। कंधे के ऊपर का भाग लगभग एक फुट चौकोर तथा दो फुट लम्बा होता है जिसे गला कहते हैं। इसमें चारों तरफ दो-दो मुखौटे लगाए जाते हैं। मोहरों के ऊपर नीचे तीन चांदी या सोने की पट्टियां लगाई जाती हैं। जिन्हें 'गौली' कहते हैं। गले से पहले के भाग को शनील के कपड़े से ढका जाता है। इसे 'बनात' कहते हैं। बनात के ऊपर पट्टियां तथा मोहरे लगाए जाते हैं। गले के ऊपर का गोल भाग जो दो फुट के व्यास का होता जिसे 'शिव' कहते हैं, के अग्रमुख की तरफ एक पट्टी लगी होती है जिसे 'गौली' कहते

हैं। यह चांदी या सोने की होती है। शिव के नीचे घुंघरु की तरह चांदी या सोने की चानणी लगी होती है। शिव के पर चुरु के काले बाल लगाए जाते हैं जिसे 'बांबल' कहते हैं। बांबल के ऊपर चमकदार कपड़े की झालरदार टोपी लगाई जाती है। शिव के ऊपर सोने या चांदी का छत्र लगाया जाता है। छत्र के बीच चांदी की बजूरी लगी होती है जिस पर छत्र लगा रहता है। इस प्रकार के रथों में सोने या चांदी के 8 या 10 मोहरे लगे होते हैं। मोहरों को सूत की डोरी से बांधा जाता है। जूडू के चारों ओर धड़ वाले भाग में घाघरा बांधा जाता है जिसे 'कांचुआ' भी कहते हैं। उसके ऊपर दो या ढाई मीटर के दुपट्टे पहने जाते हैं।

खड़े रथों में गुम्बद शैली के रथ भी काफी प्रचलित हैं। इस शैली के रथ वैसे तो छत्र शैली के ही समान हैं, परंतु जहां छत्र शैली में छत्रनुमा शिव होता है, यह वहां से छत्र तक गुम्बदाकार में बना होता है। गुम्बद के चारों ओर सोने या चांदी की पट्टी लगी होती है। पट्टी के नीचे से ऊपर सिरे तक रंगीन कपड़ा लपेटा होता है। इसके ऊपर आधा फुट के लगभग खुला कपड़ा सिरे पर बांधा होता है जो हवा में लहराता रहता है। मोहारों की संख्या 8 के लगभग होती है। इन रथों के चारों ओर कांचुआ पहनाया जाता है। इसके अतिरिक्त दुपट्टे, लूंगी, और कांचुआ को टिकाने के लिए जुडू से नीचे पट्टी लगी होती है। ऐसे रथ मण्डी जनपद में प्रचलित हैं। इसी तरह के मण्डी चौहार क्षेत्र के रथों में छत्र की जगह छोटे छोटे कपड़ों की पतली पट्टियां लगी होती है।

हिमाचल में देवीयों के ऐसे ढलवां शैली के बहुत से रथ हैं जो ऊपर से सिरे तक तिकोने आकार के हैं। धड़ तक रथ आयताकार में ही होता है। धड़ से ऊपर जहां से ढलान शुरु होती है, उसके अग्रभाग के दोनों कोनों से पर सिर तक आकार सिकुड़ता जाता है और सिरे तक तिरछा आकार बन जाता है। ऐसे रथों में सिरे पर केवल एक ही छत्र लगा होता है जबकि नीचे दो या तीन छत्र लगे होते हैं। मुख में सिरे के छत्र के नीचे एक मुख्य मोहरा लगा होता है, इसके नीचे दो तथा इसके नीचे तीन मोहरे लगे होते हैं। धड़ में जमाणों से ऊपर मोहरों के साथ चौक इत्यादि भी लगी होती है।

बहुत से देवताओं के रथ ढलवां या फेटी शैली में निर्मित हुए हैं।

देवी के ढलवां शैली के रथों की तरह ही इनका आकार प्रकार होता है। अंतर सिर्फ इतना है कि इनकी चौड़ाई ज़्यादा होती है। फेटी शैली के रथों में नागों, नारायणों, शिवजी, ब्रह्मा के रथ प्रमुख हैं। इनमें लगभग 10 से 12 मोहरे लगे होते है।

कुल्लू जनपद के देवाधिदेव रघुनाथ प्रतिवर्ष कुल्लू दशहरे में ढालपुर मैदान में रथयात्रा करते हैं। यही रथ मंदिरनुमा रथ शैली का रुप है। ऐसे रथ कुल्लू के ढालपुर मैदान, हरिपुर, तथा मणिकर्ण के रघुनाथ के मंदिरों के सामने स्थित हैं। कुल्लू का रथ लगभग 10 फुट के वर्गाकार में 8 फुट ऊंचा है। 8 फुट के ऊपर चारों कोनों में चौकोर ढलवां छत पर शीर्ष के साथ जुड़ती है। नीचे पायों के स्थान पर लकड़ी के बनाये हुए 12 पहिए होते हैं। यह रथ कंधों पर नहीं उठाये जाते अपितु बगड़घास के रस्सों से खींचे जाते हैं।

कुल्लू के ढालपुर के गौहरी देवता का एक छोटा सा फेटी शैली का रथ है। इसमें 11 मोहरे लगे हैं। इसको सिर पर ही उठाया जाता है।

देव मंदिर

हिंदु धर्म की मान्यता है कि मंदिरों में देवी देवता प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान रहते हैं। हमारी समस्याओं का समाधान करते हैं। मन को कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर ले जाते हैं। मोह-ममता, तेरे-मेरे, अपने-पराये का भाव नष्ट करते हैं। मंदिर में जाकर एक अलौकिक शांतिका आभास होता है। महर्षि व्यास ने देवमंदिरों को भगवत लोक का अवतरण बताया है।

हिमाचल में मंदिर को देहुरा, डेहरा तथा रौथड़ कहते हैं। यहां ऐसे असंख्य मंदिर हैं, जो यहां के जनमानस की देवासक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यहां के सभी गांवों में किसी न किसी देवी या देवता का देवालय प्रतिष्ठित है। देवमंदिर ही एक ऐसा स्थल है जहां गांव का प्रत्येक व्यक्ति एकत्र होता है। अपने छोटे-मोटे मनमुटावों को भुलाकर श्रद्धानिमित देवकार्य में मिल-जुलकर शामिल होता है।

प्राय मंदिर का निर्माण गांव में उस स्थान पर किया जाता है, जहां सबके लिए जाना सुलभ हो। कभी-कभी तो मंदिर के लिए एक ऐसा स्थान

चुना जाता है, जहां वह सभी गांव वालों से सदा दृष्टिगोचर होता रहे। मंदिर का निर्माण या तो गांव के मध्य में या गांव के बाहर किसी ऊंची जगह पर किया जाता है। स्थल का चयन करते समय यह ख्याल रखा जाता है कि उसके आसपास शुद्धता का वातावरण रहे।

प्रायः मंदिर निर्माण का स्थल देवी-देवता स्वयं चयनित करते हैं। कभी-कभी देवता स्वप्न में या व्यक्ति के मुख से मंदिर बनाने के स्थल का निर्देश देता है। देवभार्थाओं में वर्णन मिलता है कि देवता चलते-चलते कहां-कहां रूका, अतः वहां-वहां लोग उसका मंदिर बनाते रहे हैं।

मंदिरों का निर्माण देवता की इच्छा से वास्तु शास्त्र को ध्यान में रखकर किया जाता है। मंदिरों की प्रमुख शैलियों में शिखर शैली के मंदिरों का निर्माण चौथी शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक निरन्तर होता रहा है। यदाकदा अभी भी शिखर शैली के मंदिरों का निर्माण हो रहा है। शिखर शैली के मंदिरों में खालिस पत्थर की चिनाई होती है। कहीं-कहीं पत्थर की चिनाई में चूने का प्रयोग भी हुआ है। अधिकांशतः इन मंदिरों का निमार्ण समतल भूमि पर हुआ है। बजौरा का विश्वेश्वर महादेव का मंदिर, नग्गर का मुरली मनोहर का मंदिर, विष्णु मंदिर दुवाड़ा, रामचंद्र मंदिर मनिकर्ण,सूर्य मंदिर निथर, गौरी शंकर मंदिर दलाश, शिव मंदिर निर्मण्ड, वैजनाथ, लक्ष्मीनारायण मंदिर चम्बा,पंचवक्त्र व भूतनाथ मंदिर मण्डी आदि शिखर शैली के प्रमुख मंदिर हैं।

इन मंदिरों के गर्भगृह में देवता की मूल मूर्ति अवस्थित रहती है। द्वार के ऊपर श्रीगणेश तथा दायें-बायें गंगा-यमुना या द्वारपाल की मूर्तियां खुदी हुई होती हैं। मंदिर के शिखर पर आमलक दृष्टिगोचर होता है। मंदिर के शिखर की छत चारों दिशाओं में एक साथ आरम्भ होकर क्रमशः सिमटती हुई एक स्थान पर मिल जाती है। मंदिर के प्रत्येक पत्थर खूबसूरती से गढ़े हुए होते हैं। पत्थरों पर सुंदर नक्काशी में गान्धर्व, किन्नर, घुड़सवार, बंदूकधारी, पार्षद, गणपति, हनुमान आदि की मूर्तियां तो गढ़ी हुई होती हैं, साथ-साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्द्र आदि देवताओं की मूर्तियां भी गढ़ी हुई होती है।

प्रदेश के अधिकांश गांवों में जिस प्रकार के घर बने होते हैं,उसी तरह की शैली के देवमंदिर यहां अधिकांश बने हुए हैं। मंदिरों की इस शैली

को ढलवां छत या पहाड़ी शैली कहा जाता है। इस प्रकार के मंदिर एक मंज़िल से लेकर तीन मंज़िल तक बने होते हैं। एक मंज़िल वाले मंदिर वर्गाकार पत्थर निर्मित थड़े पर बने होते हैं। आधार के ऊपर चारों दीवारों में पत्थर की चिनाई काठकुणी विधि से की जाती है। मंदिर के बड़े कमरे के मध्य में गर्भगृह बना होता है। इसमें देवमूर्ति स्थापित होती है। इसमें पुजारी ही पूजा करते समय जा सकता है।देवरथ गर्भगृह के दायीं तरफ कमरे में रखा जाता है। इस कमरे में एक तरफ हवनकुण्ड भी स्थापित होता है। गर्भगृह के चारों ओर पथ परिक्रमा की जाती है।

जो मंदिर दो या तीन मंज़िलों के होते हैं, उनमें प्रथम मंज़िल में वाद्ययंत्र रखे जाते हैं। प्रथम मंज़िल में ही अन्दर कमरे से ही दूसरी मंज़िल को जाने के लिए सीढ़ी लगी होती है। दूसरी मंज़िल में देवता के अन्य सामान जैसे अनाज, कपड़े, मुखौटे इत्यादि रखे जाते हैं। जब कि तीसरी मंज़िल में देवरथ रखा जाता है।

इनकी छतें दोनों तरफ या चारों तरफ ढलानदार होती हैं। छत के शीर्ष पर एक लम्बी शहतीर लगाई जाती है जिसके ऊपर तीन छत्र लगे होते हैं। बीच का छत्र बड़ा होता है, जबकि किनारे वाले छत्र छोटे होते हैं। शिव मंदिरों में छत के साथ या इसके स्थान पर त्रिशूल भी लगाए जाते हैं। छत सलेट या लकड़ी की बनी होती है। इन मंदिरों के दायीं ओर ध्वज भी लगी रहती है। तीन मंज़िला मंदिरों में बीच में एक बालकनी भी होती है। यह बालकनी दीवारों के बाहर चारों ओर तीन-चार फुट चौड़ी परिक्रमा करने के लिए होती है। पहाड़ी शैली के मंदिरों में मुख्य द्वार में लकड़ी पर नक्काशी की हुई होती है। जिसमें गणेश, नाग, गंगा, यमुना, तथा द्वारपालों की आकृतियां उकेरी हुई होती हैं। मंदिरों की छतें दो तरफ को होती हैं।

पैगोडा शैली के मंदिर भी हिमाचल में काफी निर्मित हुए हैं। इनमें देवदार की लकड़ी का प्रयोग बहुतायत में हुआ है। इन मंदिरों के निर्माण में घड़े हुए पत्थरों और लकड़ी की शहतीरों का प्रयोग हुआ है। मंज़िल की चिनाई लकड़ी और पत्थर से हुई होती है। इनकी दीवार में दो लकड़ी की शहतीरों के बीच घड़े हुए पत्थरों को भरा जाता है। चारों कोनों पर काठकुणी का प्रयोग होता है जहां ये सारी शहतीरें लकड़ी की कील से बांधी जाती हैं। दीवार में समानांतर दोनों शहतीरों को जोड़ने में एक लकड़ी

जिसे मौकड़ी कहते हैं का प्रयोग होता है जिससे दोनों शहतीरें एक दूसरे से अलग नहीं होती, एक दूसरे से जुड़ी रहती हैं क्योंकि दो शहतीरें एक दूसरे से कुछ दूर होती हैं, इसलिए इन्हें जोड़ने के लिए कीलों का प्रयोग नहीं हो सकता। कहीं इन मंदिरों के आधार स्थल के मध्य से शीर्ष तक देवदार के एक पूरे पेड़ को खड़ा किया जाता है। इसके साथ लकड़ियों को चारों ओर से जोड़ा जाता है। प्रथम मंज़िल में चारों ओर बरामदा होता है जो परिक्रमा के काम आता है।

पैगोडा शैली के मंदिर तीन से पांच छत के होते है। प्रथम मंज़िल की छत चौडी़ होती है। दूसरी, तीसरी, चौथी व पांचवी छत का आकार क्रमशः कम होता जाता है। ये सभी छतें छतरी के आकार में होती हैं। कई मंदिरों की छतें चौकोर होती हैं। अंतिम छत जो शीर्ष पर होती हैं, प्रायः सभी मंदिरों में गोल होती हैं। प्रथम छत के आकार से अंतिम छत का आकार एक तिहाई होता है। उसके पर लकड़ी, तांबे, पीतल या चांदी का कलश लगा होता है और कलश के ऊपर पीतल या चांदी का छत्र भी लगा होता है। अधिकतर पैगोडा शैली के मंदिर 14वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य निर्मित हुए हैं। कुछ विद्वानो का मत है कि यह शैली नेपाल से यहां आयतित हुई हैं।

कोट या कोठी शैली के मंदिर भंडार के रुप में प्रयुक्त होते रहे हैं। देवताओं का सारा सामान इन कोठियों में रख जाता है। देवमूर्तियां, रुपया, पैसा, कपड़ा, सोना, चांदी इत्यादि इन्हीं भण्डारों में रखे जाते हैं। कोट शैली के ये मंदिर पांच से पंद्रह मंज़िल तक ऊंचे होते हैं। इन मंदिरों का आधार वर्गाकार चौकोर होता है। प्रथम मंज़िल से लेकर अंतिम मंज़िल तक दीवारों की लम्बाई चौड़ाई समान होती है। दीवारों की चिनाई काठ कुणी तरीके से पत्थर और लकड़ी की शहतीरों से की जाती है। शहतीरों की मोटाई चार से छः इंच होती है। चारों दीवारों में दो दो शहतीरें लगाई जाती हैं। आमने-सामने की दीवारों की शहतीरें दायीं-बायीं दीवारों की शहतीरों के ऊपर रखी जाती है। यही क्रम लगातार छत तक चलता है। शहतीरों के बीच में 4 से 6 इंच की खाली जगह में घड़े हुए पत्थरों से चिनाई की जाती है। चारों किनारों पर एक दूसरी के पर लकड़ी ही दिखाई देती है। इसीलिए इसे काठकुणी की चिनाई कहा जाता है। पर की अंतिम मंज़िल

में दीवारों से बाहर 4 फुट चौड़ा बरामदा बना होता है, जिसमें परिक्रमा की जाती है। बरामदे में लकड़ियों के तखतों को छत तक खड़ा लगाया जाता है। बीच-बीच में झरोखे रखे जाते हैं ताकि चारों ओर दृष्टिपात किया जा सके। दीवारों में भी छोटे छोटे झरोखे रखे जाते हैं। राजाओं के समय ये कोट किले का काम भी करते थे। इनके अंदर राणा, ठाकुर लड़ाई के लिए अस्त्र-शस्त्र रखते थे।

बाद में इनमें देवी देवताओं की प्रतिमाएं भी रखी जाने लगी। कोट शैली के इन मंदिरों में मुख्य द्वार दो तरह से बने होते हैं। कुछ मंदिरों की प्रथम मंज़िल में मुख्य द्वार होता है और ऊपर तक चढ़ने के लिए अंदर से ही सीढ़ियां बनी होती हैं। कुछ मंदिरों के मुख्य द्वार ऊपर की मध्य मंज़िल में होते हैं इनमें पांचवी मंज़िल में द्वार बना होता है। यहां तक पहुंचने के लिए मंदिर के बाहर से दीवार के सहारे देवदार के पूरे पेड़ की सीढ़ियां बनाई होती हैं। इन मंदिरों की खासियत यह भी है कि इनके थड़े 8-10 मंज़िल तक तराशे हुए पत्थर की चिनाई से निर्मित होते हैं। इसके बाद ही वर्गाकार में कमरों की दीवारों की चिनाई की जाती है। जहां तक की मंज़िलें अंदर से भरी रहती हैं, बहां तक सीढ़ियां बाहर से होती है। जहां से कमरे की चिनाई शुरु होती हैं, वहां पर द्वार बनाकर अंदर से सीढ़ियां बनी होती हैं। कोट शैली के इन मंदिरों की छत सलेट या लकड़ी से ढकी हुई ढलवां होती है।

हिमाचल के समस्त गांवों में बसने वाले खानदान वालों के अपने-अपने कुल देवता होते हैं। इनके छोटे-छोटे मंदिर व देहरियां बनी होती हैं। ये देहरियां घर की छतों पर या घर के बाहर छोटे आकार में रखी पहाड़ी शैली में बने होते हैं। इनमें कुल देवता के निशान घण्टी-धड़छ इत्यादि रखे जाते हैं।

संदर्भ :

1 सोमसी, हिमाचली प्रदेश की गाथा गीतों की संगीतात्मक शैलियां, डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती सोमसी अंक 72-73-1994 पृष्ठ 12.

2 हिमाचल की देव संस्कृति, डॉ0 सूरत ठाकुर, एच.जी.पब्लिकेशन्ज़ मदनगिर विलेज नई दिल्ली, पृष्ठ 17,

द्वितीय अध्याय

लोक साहित्य

लोक साहित्य का लोक संस्कृति के संरक्षण में विशिष्ट योगदान रहता है। लोक साहित्य वास्तव में मौखिक कलाओं का साहित्य है, जो मुख द्वारा प्रवाहित रहता है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक इसका अनुश्रवण होता रहता है। हालांकि समय के साथ इसमें कुछ नया जुड़ता है और कुछ पीछे छूट जाता है। कालान्तर में इसके मूल स्वरूप का कोई पता नहीं रहता है कि यह कहां से प्रारम्भ हुआ था। अर्थात् इसका जनक कौन था। वैसे भी लोक साहित्य का जनक हमेशा अदृश्य रहता है। उसकी यह कृति जनमानस की सम्पति होती है, जिसे पूरा समाज स्वीकार करके अंगीकार कर लेता है।

लोक साहित्य नित्य के जीवन का प्रतिबिम्ब है। समष्टि म व्यष्टि की भांति भारतीय संस्कृति में लोक जीवन की व्याप्ति है। जन-जन के मन एवं आचरण में सन्निहित तत्वों से ही संस्कृति रूपी सुमन की पंखुड़ियों का निर्माण होता है और सम्पूर्ण लोक की सौंदर्यानुभुतियां उसमें सौरभ का संचार करती है। अनादि काल से, जब कि भाषा, लिपि, शिल्प और कलाओं का कोई शास्त्रीय रूप निर्धारित नहीं हुआ था, लोकजीवन से प्रादुर्भूत भावकणों से संस्कृति का स्वरूप संवारा जा रहा था और आज भी जब कि मानव की बुद्धि, प्रखरता और आडम्बरप्रियता की ओर अग्रसर है, संस्कृति की अक्षुण सरिता लोकवाणी के पथ पर सहस्रधा होकर प्रवाहित हो रही है। इस प्रकार लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति में अभेदात्मक

सम्बन्ध है।[1] डॉ0 सत्येन्द्र के शब्दों में लोकसाहित्य जीवन के साथ बहने वाला साहित्य है, फलतः प्रभावशाली है। इस लोकसाहित्य ने वैदिक काल से आज तक साहित्य को प्रभावित किया है, सभी साहित्य लोक क्षेत्र में जन्म लेकर आगे बढ़ते हैं। लोक साहित्य के अधिकांश भाव वस्तु विषय में व्याप्त हैं। लोक साहित्य का सम्बन्ध लोक के सभी वर्गों से रहता है। पुरूष-स्त्रियां, बच्चे-बूढ़े, ये सब लोक साहित्य से सम्बद्ध होते हैं। लोरियां गाकर शिशुओं को सुलाना एवं मनोरंजक तुकबंदियों द्वारा बच्चे को दूध पीने के लिए राजी करना, ये सब लोक साहित्य की जीवन्त तस्वीर है। बच्चा ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, बचपन में सुने हुए अनेक गीतों और कविताओं को स्मरण कर लेता है। लोक साहित्य का लचीलापन उसके विषयों को समकालीन सामाजिक यथार्थ से जोड़े रखता है।

लोक साहित्य में लोक कथायें, गीत, कहावतें, पहेलियां, गाथायें, वार्तायें, तथा नाटक इत्यादि शामिल रहते हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर प्रवाहमान रहते हैं। लोक साहित्य किसी विशेष स्थान में रहने वाले या वर्ग विशेष लोगों के जीवन, रहन-सहन, आचार-विचार, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान एवं वस्त्राभूषण के विषय में लिखा होता है। यह ग्रामीण अथवा आदिवासी जीवन की सभ्यता से जुड़ा होता है। जिस प्रकार सागर का गर्भ अमूल्य निधियों का खज़ाना है, उसी प्रकार लोक साहित्य में समाज की पारम्परिक सभ्यता व ज्ञान के प्रत्येक पहलू देखे जा सकते हैं। लोक साहित्य हमारे जीवन का समुद्र है जिसमें सर्वकालिक एवं परिष्कृत ज्ञान का भंडार संचित रहता है। लोक साहित्य श्रुति परम्परा पर आधारित है, जिसका जगत के प्रस्फुटन से ही जन्म हुआ है।

परंपरा को सुरक्षित रखना आवश्यक है। हां, पुराने रूपों में नया जीवन भरा जा सकता है। पुराने और नये के सान्निध्य से लोक साहित्य के विभिन्न अवयवों के माध्यम से वर्तमान जीवन की भयंकर समस्याओं को हल करने का प्रयत्न किया जा सकता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए विद्वानों ने लोक साहित्य को प्रमुखतः पांच भागों में बांटा हैः- लोक गीत, लोक नाटक, कहावत-मुहावरे या पहेली, लोक कथा, लोकगाथा।

लोक गीत

लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित, एवं लोक के लिए लिखे गये गीतों को लोकगीत कहा जाता है। इसका रचनाकार गीत को रचित करके उसे समाज को रक्षित करने के लिए देता है। समाज उसे आत्मसात करके प्रचार में लाता है। प्राकृतिक संगीत ही लोकगीतों की परिभाषा है। मानव जब असभ्य था, तब वह अपने उद्गारों को प्रकट करने के लिए वाणी द्वारा कुछ अस्पष्ट शब्दों का उच्चारण करता था। उस समय वही वाणी उसकी कविता और वही अस्पष्ट शब्द ध्वनियुक्त स्फुरण उसका गीत होता था। लोकगीत आदि मानव का उल्लासमय संगीत कहा जा सकता है। डॉ. सदाशिव फड़के के अनुसार शास्त्रीय नियमों की परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनंद की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है, वही लोकगीत है। मानव जीवन की, उनके उल्लास की, उसकी उमंगों की, उसकी करूणा की, उसके समस्त सुख-दुख की कहानी जिसमें व्यक्त होती है, वे लोकगीत कहे जा सकते हैं। लोकगीत अज्ञात व्यक्तियों द्वारा की हुई साधारण लोक के सहज एवं सरल मनोभावों तथा विचारों की साधारण संगीतात्मक अभिव्यक्ति है। लोकगीतों की रचना नितांत स्वांतः सुखाय होती है। भावावेश में जो शब्द मुंह से निकला, वही गीत बन गया। वास्तव में मानव की सहज, स्वाभाविक एवं प्राकृतिक अभिव्यक्ति, जिसमें लोकमानस का समस्त जीवन सामूहिक सुख-दुख, जय- पराजय, ऊंच-नीच, प्रत्येक क्षणों में प्रकृति के साथ मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों की लयात्मक अभिव्यक्ति लोकगीत कही जा सकती है।

लोक गीत का समस्त महत्व उनके काव्य सौंदर्य तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु लोकगीतों के संसार को महाकवियों की रचनाओं से भी श्रेष्ठ कहा गया है। देवेंन्द्र सत्यार्थी ने कहा है कि भारतवर्ष का कोई भी चित्र भारतीय प्रथाओं, रीति-रिवाज़ों और हमारे आंतरिक जीवन की मनोवैज्ञानिक गहराई को इतने स्पष्ट तथा सशक्त ढंग से व्यक्त नहीं कर सकता जितना कि लोक गीत कर सकते हैं। उन्होंने कहा है कि कहां से

उगते हैं ये लोकगीत? स्मरण-विस्मरण की आंख-मिचौनी से, कुछ अट्टहास से, कुछ उदास हृदय से, या जीवन के खेत से। कल्पना भी अपना काम करती है, रागवृत्ति भी, भावना भी और नृत्य का हिलोरा भी। प्रकृति, त्योहार, संस्कार, रहन-सहन, घटनायें, दुर्घटनायें, ऋतु आदि लोक गीत के सृजन में अहम् किरदार निभाते हैं।

लोक नाटक

मानव प्रायः किसी ऐसे भाव की खोज में रहता है जिससे उसे शांति मिले, प्रसन्नता मिले, संसार की वास्तविकता का ज्ञान हो, झूठे आडम्बरों और छलकपट का जहां पर्दाफाश किया गया हो, शायद इसी अन्वेषण का फल रहा होगा लोक मंच या लोकनाटक। नाट्य शब्द का कोशगत अर्थ है, अभिनय, नृत्यकला, संगीत कला, वेशभूषा तथा अभिनेता। अभिनय वस्तु वाच्य है, जो भी शास्त्र धर्म या शिल्प अथवा क्रिया लोकधर्म को लेकर प्रवृत होती है, वह नाटय है।

महर्षि भरत का नाट्यशास्त्र नाट्य पर लिखा प्रथम प्रामाणिक ग्रंथ है। नाट्य शास्त्र के वर्णनानुसार इन्द्रादि देवताओं ने देखा कि जिन लोगों को वेदों में अधिकार नहीं है या जो वेदार्थ के अवधारण में असमर्थ हैं, उनके लिए भी मनोरन्जन का कोई साधन आवश्यक है। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु बह्मा से प्रार्थना करने पर बह्मा ने चारों वेदों में से एक-एक तत्व अर्थात् ऋग्वेद से कथावस्तु, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय, और अथर्ववेद से रसों को ग्रहण करके पंचम वेद नाट्य वेद की संरचना की।

लोक नाटक का सम्बन्ध सर्वसाधारण के जीवन से है, इसके साथ-साथ विशिष्ट व शिक्षित समाज का मनोरन्जन करना भी रहा है। लोकनाट्यों का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों पर व्यंग्य कसना भी होता है। इनमें स्थानीय बोली का वर्चस्व रहता है। सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य कसना, अत्याचार से पीड़ित

समाज को मुक्त करना भी इसका उद्देश्य रहा है।

मुहावरे, लोकोक्ति व पहेलियां

किसी भी भाषा में लोक मुहावरों, लोकोक्तियों या पहेलियों से लालित्य, चमत्कार व प्रौढ़ता आती है। कोई भी वाक्यांश जिसका सामान्य शब्दार्थ से लेकर कोई विलक्षण अर्थ लिया जाये, मुहावरा कहलाता है। मुहावरे स्वतंत्र रूप से व्यवत नहीं होते। मुहावरों की तरह लोकोक्तियों का भी प्रायः वाच्यार्थ ग्रहण नहीं किया जाता, अपितु उससे मिलता जुलता अर्थ लिया जाता है। लोकोक्तियां वाक्य होती हैं और स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ रखती हैं। अपने कथन को पुष्ट या सबल करने के लिए या किसी बात को साफ-साफ शब्दों में न कह कर व्यंग्य से कहने के लिए लोकोक्तियों अर्थात् कहावतों का प्रयोग किया जाता है। इसी तरह बुझारतें अथवा पहेलियां भी लोक साहित्य का अभिन्न अंग होती हैं। इनको बूझने के लिए दिमाग को कसरत करनी पड़ती है। प्रायः पहेलियां उस समाज में देखी, सुनी तथा व्यवहार में आई वस्तुओं को केन्द्र में रख कर ही बुनी जाती हैं।

लोक कथा

लोक कथा में एक इतिहास छुपा रहता है। इसका इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना सभ्यता एवं संस्कृति का। मानव जीवन में घटित घटनाओं से मनुष्य जो कुछ सीखता है, उनकी अभिव्यक्ति ही लोककथाओं में मिलती है। इनमें घटने वाली घटना का जिक्र रहता है। यद्यपि लोककथा में कथावस्तु की स्थापना क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित तथा कौतूहल व जिज्ञासा के आधार पर होती है, परन्तु इसमें उपदेशात्मक संदेश भी निहित होता है। इस में कल्पना की उड़ान के साथ-साथ स्थानीय पात्रों के माध्यम से रोमांचकारी रहस्य भी विद्यमान रहता है। गांवों में दादी, नानी अथवा बड़े बजुर्गो के पास लोक कथाओं का असीमित भण्डार रहता है। लोक कथा जितनी मनोरन्जक होगी उसका विस्तार ॰ी उसी गति से होगा। लोक कथा के पात्र प्रायः उसी समाज में प्रचलित व दीखे हुए होते हैं।

लोक गाथा

गाथा शब्द बैलेड का पर्याय माना जाता है। लोक गाथा लोक और गाथा का योग है। यह शब्द एंग्लो सैक्शन के फोल्क शब्द से बना है। अंग्रेज़ी शब्द कोशकारों ने लोक गाथा या बैलेड को अनजान लोगों की व्याख्यात्मक कविता कहा है, जो मौखिक परम्परा से प्रवाहित होती है और उसमें किसी प्रकार की बौद्धिकता दृष्टिगोचर नहीं होती। रावर्ट ग्रेब्स ने लिखा है कि बैलेड का सम्बन्ध बैले सै है, जिसमें संगीत और नृत्य की प्रधानता रहती है। लोक गाथाओं में लोक कथाओं का गीतात्मक कथानक रहता है। हडसन ने इसे विषय प्रधान कविता कहा है, जिसमें उद्गम का संकेत नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त इन्हें गीतात्मक कथा, प्रबन्धात्मक कथा, अमूर्त पदार्थ, लोक गीतों का एक रूप भी माना गया है। सामान्यतः लोक गाथा की उत्पति किसी प्रेरक, वस्तुगत या जीवन क्रम की अन्य घटनाओं से होती है। किसी घटना और उसके प्रमुख पात्रों के जीवन की समस्यायें, भाव और कार्य क्षमता का उल्लेख ही लोक गाथा के स्वरूप को संवारने में सहायक होता है। जो बढ़ते-बढ़ते एक रूचिपूर्ण आकर्षक लोक गाथा का रूप धारण कर लेती है।

हमारी संस्कृति को आज तक संजोये रखना लोक गाथाओं पर आधारित है, क्योंकि किसी भी जनपद की संस्कृति के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी हमें किसी न किसी लोक गाथा के माध्यम से ही उपलब्ध होती है। अतः यह मान लेना कोई अतिश्योक्ति न होगी कि संस्कृति का मूलाधार लोक गाथा है, जिसके माध्यम से आम लोग पारम्परिक तथा पुरातन संस्कृति को आज तक संजोये हुए हैं।

गेय छन्दों में लिखी गई कथावस्तु का विशेष तात्पर्य गाथाओं से है। गाथायें सामान्यतः एक ही लय ताल पर गाई जाती हैं। पुरातन संस्कृति में और पूर्ण इतिहास के आधार पर निरक्षर समाज में धार्मिक आस्था और परम्परागत परिपाटी को वंशानुगत कायम रखने हेतु रामायण, महाभारत, एवं अन्य पौराणिक लोक गाथाएं अधिकतर गीत रूप में स्मरण रखी जाती हैं और आज भी समाज इनको आदर से सुनता है। गाथा को गीतपरक

कथा भी कहा जा सकता है, जिसमें किसी घटना से सम्बन्धित गीत को गाथा के रूप में गाया जाये। इन्हें इनमें सामाजिक और राजनैतिक घटनाओं के साथ-साथ वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष की स्तुति, निन्दा, भावनात्मक तथा संदेहास्पद अवधारणा, वीरता, कायरता इत्यादि की विशेषता का चिंत्रांकन गेय रूप में रहता है।[3]

लोक गाथा में सरल और सहज भाव रहता है। वह अपने ज़माने की मानवीय घटनायें अंकित करने वाला सरस साहित्य होता है। गाथा के क्षेत्र मूलतः देहात होते हैं, जहां के सांस्कृतिक जीवन की उसमें गहरी छाप होती है। इनके लोकप्रिय होने का मुख्य कारण यह भी होता है कि इनमें जनजीवन की अभिव्यक्ति मुखर होती है। इसके पात्रों की कार्यपद्धति समाज में प्रचलित मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है। समाज की कुरीतियों के खिलाफ पात्रों के माध्यम से आवाज़ बुलन्द करना लोक गाथा की आवश्यकता होती है। प्रेम, वात्सल्य, वीरता, बलिदान और संघर्ष मनुष्य जाति की सर्वमान्य भावनाएं हैं, लेकिन जिस विशेष रूप से लोक गाथा के पात्रों के माध्यम से भावनाओं का चित्र प्रस्तुत किया जाता है, उससे यह भावनाएं वास्तविक जीवन के बहुत करीब होती हैं।

प्रायः लोक गाथाओं का संप्रसारण मौखिक ही होता है। एक गाथा थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ युगों तक चलती रहती है। प्रत्येक नया गायक अपने समय के अनुसार नवीन विचार या कथानक गाथा में मिला लेता है, फलतः गाथा का रूप बदल जाता है और मूल रचयिता भी तिरोहित हो जाता है, इस प्रकार लोक गाथा के मूल रचयिता का नाम मिट जाता है और लोक गाथा लोक रूचि के अनुसार नूतन गायकों के योग से अपना क्लेवर पुष्ट करती हुई प्रवाहित होती है। लोक गाथाएं पूर्व परिकल्पना रहित मौखिक परम्परा से संगीतबद्व रहती हैं। इनकी ऐतिहासिकता संदिग्ध रहती है। सुदीर्घ कथानक में प्रचलित जनभाषा का प्रयोग होता है, जिसके शब्द कालान्तर में समझ भी नहीं आते। इनमें प्रायः उपदेशात्मक प्रवृति का अभाव रहता है। हालांकि इनमें मानवीय मूल्यों की प्रधानता रहती है।

लोक गाथा में सामाजिक चित्रण रहता है। इनकी रचना किसी विशेष घटनाओं से होतीं है, किंतु पद्य में कभी व्यंग्यात्मक, कभी श्लेषात्मक पद अवश्य रहते हैं। घटित घटनाओं की प्रधानता गाथाओं का प्रमुख विषय

रहता है। प्रेम प्रसंग भी इनके प्रिय विषय रहते हैं। इसके अतिरिकत वीरता, साहस, चमत्कार तथा पौराणिक संदर्भों का समावेश भी देखने को मिलता है।

हिमाचल में पंवाड़ा, वार, भोज, एंचली, मुसाहदे, कारवां, भार्था आदि का प्रयोग लोक गाथाओं के लिए हुआ है। वास्तव में यह लोकजीवन सम्बंधी कथात्मक गीतों के लिए भी रूढ़ हो गया है। यहां श्रीराम, श्रीकृष्ण, भर्तृहरि, शिव-पार्वती, गुगा जाहरपीर, ऋषि, मुनि, नाग, शक्ति, वीर, योगिनी एवं लोक देवताओं की गाथायें प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। राजाओं की वीरता तथा योद्धाओं की शौर्य गाथायें भी प्रचलित हैं।

संदर्भ :

1 लोकसाहित्य, स्वरूप एवं सर्वेक्षण, डॉ जवाहारलाल हाण्डु, पृष्ठ 14-15

2 सोमसी, हिमाचली प्रदेश गाथा गीतों की संगीतात्मक शैलियां, डॉ0 इंद्राणी चक्रवर्ती, अंक 72-73-1994 पृष्ठ11.

3 हिमाचल की देव संस्कृति, डॉ सूरत ठाकुर, एच.जी.पब्लिकेशन्ज़, मदनगिर विलेज नई दिल्ली।

तृतीय अध्याय

देव भार्था

भार्था हिन्दी के वार्ता शब्द का अपभ्रंश है। वार्ता का अर्थ है बातचीत करना। इसी प्रकार भार्था का मतलब देवताओं की बातचीत तथा इतिहास से लिया जा सकता है। देवताओं के इस क्षेत्र में आने तथा उनके द्वारा दिखाये चमत्कार का विस्तृत वर्णन देवभार्थाओं में रहता है। एक तरह से ये देवताओं का स्तुति गान है। इन्हें देव गाथा कहने में भी कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। जो अवयव देव गाथाओं में होते हैं, वही देव भार्थाओं में भी होते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि गाथाओं में समग्र समाज की घटनाओं का वर्णन रहता है, जबकि देव भार्थाओं में केवल देवी-देवताओं के आगमन, स्थापना, आधिपत्य, जय-पराजय, चमत्कार, विश्वास और यात्रा का उल्लेख रहता है।

हिमाचल के सभी देवी देवताओं की अपनी-अपनी कथा होती है। इन कथाओं में से जो कथायें गेय रूप में सुनाई जाती हैं, उन्हें देवभार्था कहा जाता है। देव भार्थाओं का प्रचलन शिमला, कुल्लू, मण्डी, चम्बा, किन्नौर, लाहुल-स्पिति में है। इन्हें प्रायः गूर चेला विधि विधान के अनुसार सुनाता है। इनमें देवता के आगमन का पूरा विवरण रहता है। वे कहां से चले? किस-किस से भेंट हुई? किस-किस के साथ संघर्ष हुआ? क्या-क्या चमत्कार दिखाये और किन-किन दैत्यों अथवा वहां के शासकों को जुआ-पासा अथवा अपने बाहुवल या योगबल से परास्त करके वहां अपना शासन स्थापित किया। तत्पश्चात् वहां की प्रजा की किस प्रकार भलाई की और फिर किस प्रकार पूजित हुए, इन सब का पूरा विवरण देवभार्थाओं में रहता है।

देव भार्थाओं में देवताओं का इतिहास, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति, चमत्कार, तप, बल आदि का समावेश देखने को मिलता है। इन भार्थाओं में देवी देवताओं के जन्म, विकास और प्रसार का महत्वपूर्ण वृतांत छिपा होता है। इन्हें बखाण, गरणी, गूण,

चिरानिंड. भी कहते हैं। भार्था में देवी-देवताओं के इस भूभाग पर प्रकट होने, स्थापित होने, रहने तथा विशेष क्षेत्रों में रहने का विवरण रहता है।

गूर की भूमिका

जिसके मुख से देवता अपनी बात प्रजा तक पहुंचाता है, उसे गूर कहते हैं। यह देवता का प्रवक्ता होता है। गूर का चयन देवता स्वयं करता है। गूर जीवनपर्यन्त इस ज़िम्मेवारी को सम्भालता है। यदि कोई गूर देव नियमों का पालन नहीं करता तो देवता उसे इस दायित्व से मुक्त भी करता है जिसे 'गूर ढेलना' कहा जाता है। कई देवताओं के एक से अधिक गूर भी होते हैं। जिसमें सबसे वरिष्ठ गूर को 'मलेघा' गूर कहा जाता है। जिन देवताओं के एक ही गूर होता है, वहां उसके मरने के बाद ही दूसरे गूर का चयन होता है।

गूर चयनित होने के बाद उस व्यक्ति को बहुत सी वर्जनाओं का ख्याल रखना पड़ता है। वह अपने बाल नहीं काटता, हर कहीं भोजन नहीं कर सकता। धूम्रपान तथा मद्य का प्रयोग बर्जित होता है। गूर को देवपर्वों, देवकार्यों तथा त्यौहारों इत्यादि में देवता के साथ ही रहना पड़ता है। देवता उसके माध्यम से लोगों की सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते हैं। देवता के जन्मदिन या वार्षिक उत्सवों पर वह देवता की भार्था सुनाता है। गूर को अधिकांश समय लोगों की समस्याओं को निपटाने में ही गुज़ारना पड़ता है। इसलिए उसकी आजीविका चलाने के लिए देवता के आदेश से हार के सभी परिवारों द्वारा उसे रबी तथा खरीफ की फसलों पर कर उगाहने का अधिकार दिया गया है। इसके अतिरिक्त देवता के खज़ाने से भी कुछ धनराशि उसे दी जाती है।

भार्था का स्थान एवं समय

भार्था को सुनाने के लिए जगती का प्रमुख स्थान रहता है। जगती वह पवित्र स्थान है, जहां पर बैठ कर देवता समस्त संसार के हित के लिए चिन्तन करता है। कुल्लू के नग्गर गांव में एक बड़ा पत्थर है जो 5 इंच मोटा, 6 फुट चौड़ा तथा 8 फुट लम्बा है, को ठारह करडू देवताओं ने मनाली

के सामने बाहंग के ऊपर भृगुतुंग पहाड़ी के एक छोटे से भाग ग्राम ढौग से मधुमक्खियों का रूप धारण करके यहां लाकर स्थापित किया है। इसे समस्त देवी-देवताओं का सिंहासन माना जाता है। स्व. लाल चंद प्रार्थी ने अपनी पुस्तक कुलूत देश की कहानी में लिखा है कि जब कभी देश पर बड़ी विपत्ति आने की संभावना होती है, तो यहां कुल्लू भर के देवता इकट्ठे होते हैं और जगत के कल्याण के लिए विचार विमर्श करते हैं, जिसे जगती पूछ कहते हैं। प्राकृतिक आपदाओं, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, भुखमरी आदि में सभी देवी-देवताओं के प्रतिनिधि गूर, पुजारी आदि रघुनाथ के मुख्य सेवक के आमंत्रण पर अपने-अपने देवताओं के घण्टी-धड़छ लेकर इस पवित्र स्थान पर इकट्ठा होते हैं। इस सभा का आयोजन कुल्लू राजपरिवार का प्रमुख ठारह करडुओं के आदेशानुसार करता है। जगती पूछ आरम्भ करते हुए प्रारम्भ में राज परिवार के प्रमुख द्वारा ठारह करडू का धड़छ जलाकर सभी देवी-देवताओं का आह्वान करने के साथ ही आगे की कार्यवाही चलती है। इसी तरह सभी देवताओं के अपने मंदिर के सामने सौह में जगती स्थल बने होते हैं, जहां बैठकर देवता के गूर अपनी भार्था सुनाते हैं।

देवता का प्रमुख अनुष्ठान जगती पूछ होता है। यह प्रक्रिया देवमंदिर के सामने प्रांगण में पूरी की जाती है। प्रांगण में लगभग 3 फुट चौड़ा तथा 6 फुट लम्बा चबूतरा बना होता है, जिसे थौल़ कहते हैं। देवता इस पर बैठता है। उसके सामने पटड़ी जो लकड़ी का फट्टा या चौकोर पत्थर होता है, पर बैठकर गूर लोगों की समस्याओं का निराकरण करता है।

जब देवता का जन्मदिन होता है, देवता स्वर्ग या इन्द्रलोक से फागुन या चैत्र की सक्रांति को वापिस लौटता है, काहिके का उत्सव होता है, वर्षोआ होता है, श्रावण भादों के मेले होते हैं, यात्रा से देवरथ लौटकर आता है। तब-तब गूर जगती पर बैठकर अपना इतिहास सुनाता है और प्रजा की सुख-समृद्धि के उपाय सुझाता है तथा घरेलू और नीजि समस्याओं का समाधान करता है।

हिमाचल के समस्त देवी-देवता माघ मास की सक्रांति को राजा इन्द्र की सभा में चाकरी हेतु जाते हैं तथा फागुन की सक्रांति को नई शक्ति

एवं उर्जा लेकर वापिस लौट आते हैं। माघ की सक्रांति की सुबह देवता घृतमा लगाते हैं। घृतमा का अर्थ होता है 'पाटे पड़ना', अर्थात् इस दिन देवता के रथ के ऊपर घूंड डाला जाता है। इसके बाद देवता के इन्द्रपुरी से आने तक देवरथ को इसी तरह घूंड में ही रखा जाता है। इस दिन सभी हारियान देव मंदिर में इकट्ठे होते हैं। देवता का गूर जगती पर बैठता है। जगती पर बैठकर सभी लोगों की समस्याओं का समाधान करता है। साथ ही लोगों को इसके वापिस आने तक प्रेम प्यार से रहने की हिदायत देता है। तत्पश्चात् लोग नम आंखों से देवता को विदाई देते हैं और कामना करते हैं कि देवता की यात्रा सफल होगी तथा वह इनके लिए सुख-समृद्धि लाएंगे।

एक मास तक इन्द्र के दरबार में रहने के बाद सभी देवता वापिस लौट आते हैं। माना जाता है कि वहां सभी देवताओं में आपस में शास्त्रार्थ होता है। जिसमें जो देवता जीतता है, वह अपने साथ अपनी प्रजा के लिए सुख-समृद्धि लेकर आता है। जो देवता वहां हार जाता है, उसके प्रजा क्षेत्र में प्राकृतिक विनाश का प्रकोप रहता है। यह भी माना जाता है कि फागुन की सक्रांति को देवता नये अवतार में अपनी प्रजा के बीच उपस्थित होता है। इसलिए वह उस दिन आकर अपने प्रकट होने तथा अपनी इन्द्र सभा में होने वाले घटनाक्रम का वर्णन देव भार्थाओं के रुप में लोगों को सुनाता है। भार्था गूर द्वारा गाकर सुनाई जाती है। भार्थाएं फागुन की सक्रांति के अतिरिक्त उसके जन्म दिन अर्थात् उक्त गांव में प्रकट और स्थापित होने के मौके पर भी सुनाई जाती है।

हिमाचल की कुल्लू घाटी के विभिन्न गांवों में फागुन की सक्रांति से मासान्त तक फागली का उत्सव होता है। फागली मलाणा, कायस, जाणा, नगर, हलाण आदि गांवों में मनाई जाती है। मलाणा फागली से पन्द्रह दिन पूर्व देवमंदिर में जौ के जौरे उगाये जाते हैं, जो फागली वाले दिन फूल के स्थान पर पूजा में प्रयोग किए जाते हैं। फागली वाले दिन देवताओं के रथ मंदिर में सजाकर देवप्रांगण में लाये जाते हैं। फिर मूल स्थान पर जाकर एक बलि दी जाती है। मूल स्थान को मौढ़ भी कहते हैं। इस अवसर पर देवता को सूर पिलाई जाती है। देवता के कार्यकर्ता जिन्हें वारी कहते हैं, भात व सूर का सेवन करते हैं। रात को कारदार व कुछ सदस्य मंदिर

में देवस्तुति के गीत भी गाते है। शाम को देवता के भण्डार से सारे निशान निकाल कर देवप्रांगण में लाये जाते हैं।

किन्नौर के देवता माघ की सक्रांति को स्वर्ग लोक को जाते हैं। 15 माघ को वहां से वापिस लौटने से पहले प्रातः देवता की मूर्तियों को पानी से धोया जाता है। रथ को रंगबिरंगे वस्त्रों से श्रृंगारित किया जाता है। देवधुनों के साथ रथ को मंदिर से बाहर लाकर सथड. में चारों दिशाओं में घुमाया जाता है। इस अवसर पर गूर से पूछ डाली जाती है। गूर के माध्यम से देवता अपने स्वर्ग गमन एवं वहां पर हुई गतिविधियों, स्वयं की भूमिका और अपने साथ लाई उपलब्धियों तथा आने-जाने की पूरी गाथा सुनाता है। फिर इन्द्र दरबार में हुई फसलों व अन्य वस्तुओं के विभाजन की घोषणा करता है। यह भी घोषणा करता है कि इस वर्ष कौन सी वस्तु मंहगी होगी और कौन सी सस्ती। इसके साथ ही हारी-बिमारी के बारे में भी बताता है। लोगों को आने वाली प्राकृतिक आपदाओं तथा विपति से बचने के उपाय भी सुझाता है।

चम्बा कांगड़ा में किसी भी देवगाथा को गाने से पूर्व ढोलरू गायन की परम्परा विद्यमान है। ढोलरू गायन का आरम्भ चैत्र मास की सक्रांति को शुरू होता है। सबसे पहले भगवान विष्णु को नये साल की बधाई ढोलरू गायन के द्वारा दी जाती है। चैत्र मास की सक्रांति को प्रातः ढोलरू गायक विष्णु भगवान के मंदिर में जाते हैं। पुजारी उन ढोलरू ग।ने वाले कलाकारों को आदर के साथ आसन विछाकर बिठाता है। पूजा व भेंट के लिए माश की दाल, मक्की, गुड़, घी, रोलियां, टिक्का, कच्चा लाल धागा, नये कपड़े आदि सामग्री देता है। सबसे पहले धूप जलाकर ढोल को टीका लगाया जाता है, तत्पश्चात् नया कपड़ा ढोल पर चढ़ाकर मौली धागे से ढोल को बीच से बांध दिया जाता है, फिर कलाकारों को टीका लगाकर उन्हें नये वस्त्र दिये जाते हैं। उनके बायें हाथ में मौली बांध ली जाती है। उनके आगे श्रद्धानुसार माश आदि दालें व रूपये रखे जाते हैं। इसके बाद गायक भगवान विष्णु का मन में स्मरण करके ढोलरू गीत का गायन आरम्भ करते हैं। चम्बा की सूही रानी की कथा को कुल्ह ढोलरू कहा जाता है। यह गाथा महासा समुदाय के लोग गाते हैं।

स्वर

देव भार्थाएं गूर द्वारा गाकर सुनाई जाती हैं। इनमें षड़ज, मध्यम तथा पंचम स्वरों की बहुलता रहती है। प्रायः चार या पांच स्वरों में ही भार्था कर गायन होता है। हिमाचली लोक संगीत में मध्यम स्वर का विशेष महत्व है, क्योंकि यहां के गीत में मध्यम स्वर को आधार मानकर गाये जाते हैं। ये भार्थाएं निबद्ध और अनिबद्ध दोनों रूपों में गाई जाती हैं। स्वरों का लगाव सरल, सपाट, व गमकयुक्त होता है। कई बार तो इनका साम्मन्जस्य ध्रुपद गायन के पूर्व आलाप चारी करने जैसा होता है। कण मींड आदि का इनमें स्वतः प्रयोग होता है। अधिकतर भार्थाएं स प स स्वरों में ही गाई जाती हैं। भार्थाओं के सुनाने के बीच में वाद्ययंत्रों पर एक विशेष ताल भी बजती रहती है। श्रद्धालु उस समय केर सत बचन महाराज कहते रहते हैं, ताकि देवता को लगे कि उसकी भार्था तन्मयता से सुनी जा रही है।

लोकवाद्यों की भूमिका

समाज की संस्कृति प्रायः उस समाज की लोककला के माध्यम से प्रकट होती है। लोक कला में भी संगीत कला ने समाज में मानवीय संवेदनाओं को जिस सशक्त तरीके से उभारने का कार्य किया है, शायद ही किसी और पहलुओं से न हुआ हो। संगीत के विशेष उपकरण वाद्ययंत्रों का सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अंतर्गत धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक जीवन से निकट का सम्बंध रहा है। प्राचीन काल से ही संगीत वाद्यों का न केवल संगीत के कलात्मक रुप से ही लगाव रहा है, अपितु उनका अभिव्यंजनात्मक एवं प्रतीकात्मक रुप जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करता दिखाई देता है। वास्तव में वाद्य भारतीय संगीत एवं संस्कृति के अभिन्न अंग बन गए हैं। जाने अनजाने वाद्यों ने वह महत्व प्राप्त कर लिया है, जिसके कारण संगीत किसी सीमा तक वाद्यों पर आधारित है। अपितु हमारी संस्कृति भी संगीत वाद्यों को अलग कर जीवित नही रह सकती। वाद्य चाहे जिस भी क्षेत्र का हो, वह उस क्षेत्र की संस्कृति तथा सभ्यता पर सीधा प्रकाश डालता है।

हिमाचल के लोकवाद्य यहां के जनजीवन में इस प्रकार आत्मसात हो गए हैं जैसे जल और दूध का सम्बन्ध। यहां प्रत्येक अवसरों पर लोकवाद्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आनंद और उत्साह में नृत्यों का संचालन लोकवाद्य ही करते आए हैं। यहां का जनजीवन पूरी तरह देवी-देवताओं के इर्द-गिर्द घूमता है और देवी-देवताओं की प्रत्येक गतिविधि में लोकवाद्यों की महती भूमिका होती है। इनका कोई भी उत्सव या अनुष्ठान लोकवाद्यों के बिना पूरा नहीं होता। चाहे पूजा करनी हो, मेला त्यौहार मनाना हो या गृह प्रतिष्ठा करनी हो, इन सब में वाद्यों का बजना अनिवार्य होता है। देवी-देवताओं के रथ एक कदम भी लोकवाद्यों की थाप तथा सुरों के बिना आगे नहीं बढ़ते। देवी देवताओं के प्रत्येक क्रिया कलापों जैसे देउली, पूजा, भौती मेले, उत्सव, देवयात्रा इत्यादि में वादकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि वादक देवी-देवताओं की प्रत्येक गतिविधि में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी भूमिका के बिना देवी-देवताओं के कोई भी अनुष्ठान प्रारम्भ नहीं होते।

फागुन या चैत्र की सक्रांति को लगभग सभी देवता इन्द्र दरबार से वापिस लौट आते हैं। इस अवसर पर सुवह-सवेरे देवरथ को सजाकर मंदिर से बाहर निकाला जाता है। थड़े के सामने गूर जगती पर बैठकर भार्था के रूप में अपनी गाथा को सुनाने बैठता है, उस समय वाद्ययन्त्रों पर देव आवाहून की धुन बजने से ही गूर के शरीर में देवता प्रकट होता है। देवी देवताओं के पास वादकों का एक समृद्ध वर्ग है जो हर अनुष्ठान में उपस्थित रहता है तथा वाद्यों के वादन से इसे रूचिकर बनाता है। ये वादक बाह्मण, राजपूत, वैरागी, हेसी, लुहार और कोली आदि समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। अधिकांश देवताओं के पुजारी ब्राह्मण होते हैं। पूजा करते समय इन्हें घण्टी तथा शंख बजाना पड़ता है। पूजा के लिए नहा-धोकर धोती पहनकर ये पुजारी बायें हाथ में घण्टी बजाते हैं तथा दायें हाथ में धूप जले धड़छ को हिलाते हैं। जब तक घण्टी बजती रहती है तब तक ही धड़छ भी हिलाया जाता है। इसी दौरान पुजारी देव स्तुति में आरती तथा मंत्र भी गाता रहता है। अर्थात् गायन तथा वादन एक ही समय में एक साथ किया जाता है। जब पूजा सम्पन्न होती है उसके बाद पुजारी शंख

बजाता है। कई देवताओं के पुजारी राजपूत होते है, वे भी ब्राह्मण पुजारी की तरह ही पूजा विधि को निभाते हैं। घण्टी तथा शंख बजने के साथ-साथ रणसिंगे का वादन भी ब्राह्मण तथा राजपूत ही करते हैं। खण्डा निकलने के अवसर पर करनाल, रणसिंगा, छंछाला, कणसी, काहल, भोटूकाहल आदि लोकवाद्यों को भी राजपूत और ब्राह्मण ही बजाते हैं।

ढोल, ढौंस, नगाड़ा, वाम, तथा करनाहल बजाने वाले लोकवादक लुहार, कोली आदि समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। ये वादक कुशल एवं व्ययवसायिक वादक होते हैं। ढोल, नगाड़ा तथा करनाहल बजाने के लिए विशेष दक्षता की आवश्यकता होती है। शहनाई वादक हेसी और तुरही समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। वादकों में ढौंस वादक, ढोल, नगाड़े, भाणा, करनाहल तथा शहनाई के वृंद को संचालित करता है। इनमें ढोल वादक को ढोली, नगारा वादक को नगारची, वाम वादक को वामची, ढौंस वादक को ढौंसी, तथा करनाहल वादक को करनाहलची कहते हैं।

देवकार्य के प्रत्येक अवसर में इनकी उपस्थिति अनिवार्य होती है। प्रातः सायं की पूजा में भी इनका वादन करना अनिवार्य होता है। इसलिए इनकी उपस्थिति इसमें ज़रूरी होती है। वाद्ययत्रों को बजाने का इन्हें कोई निश्चित परिश्रमिक नहीं है। कुछ देवताओं ने इन्हें जोतने के लिए ज़मीनें दे रखी हैं तथा जिन देवताओं के पास भूमि नहीं है वहां वादकों को कुछ नहीं मिलता। जब कोई हार में देवभौती तथा भण्डारे या देउली के अवसर पर देवता को अपने घर ले जाता है। उस समय इन्हें छौका मिलती है। पेट भर भोजन करने के अतिरिक्त एक आदमी का अतिरिक्त भोजन लेने को छौका कहा जाता है। पूर्व में रसोई में पका हुआ भोजन मिलता था। बाद में कच्चा चावल, आटा या गैहूं इत्यादि दिये जाने लगे। आजकल इसके बदले में अनाज की कीमत के बराबर रुपये दिये जाने लगे हैं। वर्ष में दो बार इन वादकों को एक एक पथा अनाज हार में से प्रत्येक परिवार से मिलता है। पथा एक टोकरी होती है जिसमें लगभग डेढ़ किलो अनाज आता है। वाद्य वादन एक पूर्णकालिक काम नहीं है। इसलिए इन्हें अन्यत्र मज़दूरी करनी पड़ती है। राजपूत तथा ब्राह्मण वादकों की अपेक्षा लुहार, कोली तथा हेसी समुदाय की आमदनी बहुत कम होती है। इनके पास खेती योग्य भूमि भी कम होती है। इसलिए इनकी आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी

नहीं होती। साल का खर्च निकालना भी मुश्किल होता है। अतः ये इधर-उधर मज़दूरी करके अपना जीवनयापन करते हैं।

देवी-देवताओं का श्रद्धालु भक्तों के साथ गहरा रिश्ता होता है। इनके प्रत्येक भावों को व्यक्त करने में देव संगीत का विशिष्ट योगदान है। देवी-देवता जब भी किसी रोगी का गीतों और वाद्यों की धुनों की सहायता से उपचार करते हैं या भूत-प्रेत से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न करते हैं तो उस समय बजाया जाने वाला ताल शास्त्रीय तालों की तरह टुकड़ों, परनों तथा तिहाईयों में निबद्ध रहता है। जिससे विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। जब देवता ने अपने प्रवक्ता चेले के शरीर में प्रवेश करके अपनी भार्था या आदेश सुनाना होता है तो उस समय प्रयुक्त होने वाला वाद्य संगीत तथा शहनाई, करनाहल, रणसिंगे की स्वर लहरी उपस्थित श्रोताओं के शरीर में कम्पकम्पी पैदा करते हैं।

इस प्रक्रिया से पूर्व चेला या गूर देवता के रथ के सामने पटड़ी पर बैठता है। इस समय वह चोला धोती व टोपी पहने होता है। गांव के सभी लोग एकत्रित होते हैं। धूप जलाया जाता है। तत्पश्चात ढौंसी के संकेत पर उसकी अगुआई में ढोल, नगाड़े, शहनाई, करनाहल, रणसिंगे, भाणा आदि वाद्ययंत्र बजाते हैं। पुजारी घण्टी बजाता है। इस समय पहले देव आवाह्न की धुन बजाई जाती है तत्पश्चात् भरैऊण ताल बजता है। इस समय पूरा वातावरण देवमय हो उठता है। जो भी श्रद्धालु वहां बैठे होते हैं उनके शरीर के रोय-रोयें खड़े हो जाते हैं। उनके मन पर ऐसा प्रभाव पड़ता है, मानों उनके शरीर के अन्दर किसी अदृश्य शक्ति ने अपना प्रभाव डाला हो। वाद्ययंत्रों की धुनों के असर से उसका ध्यान चेले पर एकत्रित हो जाता है। एक ओर बाद्ययंत्रों पर धुन बजती रहती है, दूसरी तरफ श्रद्धालु देवता के प्रकट होने की प्रार्थना करते हैं। जब धुन अपने चरम पर होती है, तब चेले के शरीर में देवता का प्रवेश हो जाता है। चेले के कांपने से इसकी पुष्टि होती है। थोड़ी देर कांपने के बाद चेला अपने सिर की टोपी पीछे की ओर गिरा देता है, जिसे उसके पीछे बैठा व्यक्ति अपने हाथ में पकड़ता है। उसके तुरन्त बाद वाद्ययंत्रों पर धुन बदली जाती है और सबके शरीर की उतेजना खत्म हो जाती है। जब गूर जगती पर बैठकर या कभी खड़े रथ में देवता के गूर के मुख से देववाणी कहलवाने के लिए वाद्ययंत्रों पर भरैऊण

ताल बजाई जाती है, तो उस समय सारा माहौल देवमय हो जाता है। मन में भक्ति का भाव उमड़ पड़ता है। भरैऊण ताल बजने से उनकी एकाग्रता बढ़ती है और उनका पूरा ध्यान देवता की तरफ हो जाता है। जैसे-जैसे भरैऊण ताल का असर होने लगता है, उनका शरीर कांपने लगता है और उनकी चेतना लुप्त होने लगती है। एक अदृश्य शक्ति के वशीभूत हो कर उनके मूख से वाणी प्रस्फुटित होने लगती है।

जब कभी देवताओं के रथ को मंदिर के अन्दर से प्रांगण में लाया जाता है तो वह वाद्ययंत्रों पर बजने वाली तालों की लय के आधार पर आगे पीछे घूमते हैं। देवरथ को प्रायः दो लोग उठाते है। देवरथ को केवल पुरुष ही उठाते है। महिलाओं का देवता के रथ को उठाना वर्जित होता है। ताल के प्रभाव के सहारे ही रथ चलते हैं, दौड़ते हैं तथा किसी स्थान विशेष पर जाकर खड़े हो जाते हैं। प्रांगण जिसे सौह भी कहते हैं में चारों दिशाओं में जाकर प्रणाम करते हैं। इस प्रक्रिया को 'नुआस देना' कहते हैं। नये घर की प्रतिष्ठा करने को 'घरपेशनी' कहते हैं। इस अनुष्ठान में घर के चारों ओर सूत्र पिरोया जाता है। इस प्रक्रिया को 'घर बांधना' भी कहते है। यह इसलिए बांधा जाता है ताकि आसुरी शक्तियों से घर तथा परिवार की सुरक्षा हो सके। मान्यता है कि इससे घर में सुख समृद्धि बढ़ती है और शांति बनी रहती है।। सूत्र फेरते समय भी देव आवाहन की धुन भरैऊण, जगाउण, तथा खड़ायत तालों के बजने से आसुरी शक्तियां दूर भाग जाती हैं। कई बार किसी व्यक्ति में जब आसुरी शक्ति प्रवेश करती है, तो ऐसे समय भरैऊण, जगाऊण, पतियाऊण ताल के वादन से वह शक्ति उसके शरीर में छटपटाने लगती है। उसके छटपटाने पर देवता का चेला उसके शरीर में पानी के छींटे देकर उसे उस व्यक्ति के शरीर से बाहर निकाल लेता है। इसी प्रकार बीमार व्यक्ति पर भी देवधुन का असर होता है। पूजा के समय घण्टी तथा शंख ध्वनि होने पर उसका सुमधुर नाद सुनकर दूर बैठा व्यक्ति भी देवता के प्रति श्रद्धा में सिर झुकाता है। शंख की ध्वनि उसके कानों में पड़ने के बाद तुरन्त उसके मन पर श्रद्धा भाव जगाने में सहायक होती है। इस तरह कहा जा सकता है कि देव संगीत में मानव मन के भावों को प्रभावित करने की अदभुत क्षमता होती है।

भार्थाओं के अनुसार सृष्टि का विकास

प्रलयकाल के उपरान्त अव्यक्त एवं स्वयंभू भगवान नारायण देव ने अपने कृति के प्रेरक महातत्व पंचभूत को प्रकाशित करने के रूप में अपने को प्रकट किया। भगवान के शक्ति रूप पंचभूतों के प्रकाशित होते ही अन्धकार नष्ट हो गया और प्रकाश व्याप्त हो गया। इसका उल्लेख ऋग्वेद में इस प्रकार मिलता है:-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

अर्थात् सृष्टि के पूर्व सर्व प्रथम हिरण्य गर्भ ही विद्यमान था। इससे ही सभी भूततत्वों की उत्पति होती है। वहीं इनका एक मात्र विधाता व स्वामी है।उसी ने पृथ्वी से गगनपर्यन्त सभी तत्वों को आधार व अस्तित्व प्रदान किया। हम उस आदि देव को छोड़कर किसे हवि प्रदान करें। 1

अपने शरीर से अनेक प्रकार की प्रजाओं के सर्जन की इच्छा से नारायण देव ने सर्वप्रथम अप्तत्व अर्थात् पंचमहाभूतात्मक प्रकृति को उत्पन्न किया और उसमें बीज को आरोपित किया।

तदण्डमभवद्वैमं सहस्त्राशुसमप्रभम्।

तस्मिजज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।।[2]

प्रकृति में आरोपित बीज अल्पकाल में ही सूर्य के समान चमकीले अण्डे के रूप में परिणत हो गया और फिर उसी अण्डे से सब लोगों के पितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। इस प्रकार परमेश्वर द्वारा सृष्ट अपतत्व में आरोपित बीज से ही समस्त सृष्टि की उत्पति हुई। स्पष्ट है कि इस सृष्टि के आरम्भ में भी परमेश्वर था, मध्य में भी वही था और उससे उत्पन्न होने वाला ब्रह्मा भी वही था। वही निमित कारण कर्ता उपादान कारण अर्थात् सामग्री है तथा वही कार्य भी है। जलप्रलय का मिथक सामान्य रूप से सभी धर्मों और मिथकों में किसी न किसी रूप में प्राप्त होता है। जलप्लावन के बाद केवल एक दम्पति का जीवित रहना और उसके द्वारा सृष्टि के विकासक्रम की कहानियां हिन्दु, इसाई, मुस्लिम आदि सभी धर्मों में मिलती हैं। जलप्लावन के द्वारा धरती का पूरी तरह डूब जाना, फिर कौमार्य पृथ्वी का प्रकट होना या अग्नि के द्वारा उसका विनाश होना इस बात का सूचक

है कि अव्यवस्था से ही सृष्टि का आरम्भ होता है। यह भी सभी धर्मों में माना जाता है कि जब पृथ्वी पर पाप बढ़ जाते हैं तो परमपुरूष प्रलय की लीला रचता है और उसके बाद ही पुर्नसृष्टि की रचना का कालक्रम चलता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जलप्लावन के बाद जो मनु और श्रद्धा प्रलय के बाद सुरक्षित रह जाते हैं, उन्हीं के द्वारा फिर से सृष्टि का आरम्भ हो जाता है।

महाभारत और पुराणों के अनुसार क्षितिज से अग्नि का विस्फोट होगा, सात या बारह सूर्यों का आकाश में उदय होगा जो समुद्रों को वाष्पीकृत कर देंगे और पृथ्वी को भस्म कर देंगे। तत्पश्चात् बारह वर्षों तक लगातार वर्षा होगी जिससे मानव और पृथ्वी विनष्ट हो जायेंगे। उसके बाद फिर से प्रत्येक वस्तु का सृजन होगा और यह क्रम अनन्त काल तक चलता रहेगा।

उपरोक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि सृष्टि के लिए सृजनशक्ति की आवश्यकता होती है, जिसे गोलक, अण्डकोष, महामाता, ब्रह्मा और विश्वपैत्रिक तत्व के रूप में चित्रित किया गया है। सृष्टिक्रम में तीन प्रक्रियाएं एक साथ चलती हैं जो त्रिमूर्ति में परिलक्षित होती हैं। ब्रह्म की धारणा में ये तीन तत्व समाहित हैं। तीनों तत्वों को तीन मात्राओं, अकार, उकार, तथा मकार के द्वारा व्यंजित भी किया गया है। इन तीन तत्वों को हिन्दु मान्यता में बह्मा, विष्णु, महेश को संयुक्त किया गया है। तीनों देवों का सम्बन्ध पृथ्वी, जल और अग्नि से है।

वेदों, शास्त्रों, पुराणों और वैज्ञानिकों के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के देवी-देवताओं की भार्थाओं, देवगाथाओं में सृष्टि के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रकट हुए हैं। चम्बा क्षेत्र में शिवस्तुति वाली ऐंचली गाथाओं की प्रथम पंक्ति से ही सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन हैः-

होआ नी थी संसार ना, थिया त्रिलोकीनाथ भून्ता,
चार इन्द्राणी, पंजपांडु, छः नरैण, सतवीं देवी सीतला।
अठकुल नाग, नौ नाथ, दस रावणा
एक अर्जुन, बारह भेरू, तेरह ताल। [3]

अर्थात् जब कोई पृथ्वी व वायु नहीं थे, तब केवल त्रिलोकीनाथ ही विद्यमान थे फिर त्रिलोकीनाथ ने चार इन्द्राणी, पांच पाण्डव, छः नारायण,

सात शीतलामाता, आठ नाग, नौ नाथ, दस रावण, एक अर्जुन, बारह भैरों और तेरह ताल उत्पन्न किए।

जब कुछ भी नहीं था, समुद्र में जल था, तब सबसे पहले समुद्र में कमल फूल निकला और इस कमल फूल में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। इन चारों ने पृथ्वी और आकाश का निर्माण किया। प्रस्तुत गाथा में इसका उल्लेख मिलता हैं-

समुद्रे दा जल निकलेया ता कमल फूल निकलेया,
इस कमल फुल्ले पर, चौर जीव तयार होये।
ब्रम्हा, विष्णु, शिव, शक्ति देवी,
जलथल टकाए, धरत आकाश बणाए।

इसी गाथा में कहा है-

दैहणे अंगे री सामी मैल कढ़ाइए
जिसा केरी धरणी बणाई न।
बौएं अंगे री सामी मैल कढ़ाइए
जिसा केरी मनसा बणाई न।
बरमा पुच्छदा विष्णुए तांह ऐ,
कुणी लेणे धरणी रे भारे न।
विष्णु बोलदा बरमे तांह ऐ,
जिनी लेणा धरणी रे भारे न।
नाज गुरू अछणा मनसा व्याहणी,
तिन्ही लेणे धरणी रे भारे न।

अर्थात् ब्रह्मा ने दाहिने अंग की मैल निकालकर उसकी सृष्टि बनाई और बायें अंग की मैल निकालकर उसकी मनसा नामक कन्या बनाई। उसके बाद ब्रह्मा ने विष्णु से पूछा, हे स्वामी! अब इस सृष्टि का नियामक कौन होगा और इस कन्या का कौन वरण करेगा। तब भगवान विष्णु- बोले हे ब्रह्मा! इस धरती का नियामक शिव होगा और जो धरती पर अन्न पैदा करेगा, वही इस कन्या का वरण करेगा। इस प्रकार निर्णय होने के बाद ध
रती, आकाश, सूर्य, तारा, भोर का तारा, पवन, जल, गुरू आदि पैदा किए।

ब्राह्मण्ड में सबसे पहले पृथ्वी की उत्पति हुई मानी जाती है। उसके

बाद ईश्वर ने मनुष्य को बनाया, जिसका उल्लेख कुल्लू की ठारह करडू की भार्था में इस प्रकार हुआ है-

निहार घोर थी, सेयी मेयी संसार थी
सरगा न औलै़ धरती न पन्नै,
पृथी बणाई, माण्हू बणाए,
सूनें रै बणाए, वाक नी छूटी,
चा़ंदी रै बणाए, वाक नी छूटी,
त्राम्बै रै बणाए, वाक नी छूटी,
आपणी चोई रै बणाए, ता वाक छूटी,
एकी न दूई हुए, दूई रै दस बणै,
दसै रै शौऊ हुए, शौऊए रै सहस्र बणै,
सहस्रै पृथ्वी भौरी।

अर्थात् अन्धेरा ही अन्धेरा था। ईश्वर ने सबसे पहले पृथ्वी बनाई, तत्पश्चात् मनुष्य बनाया। उसके बाद सोने से मनुष्य की मूर्ति बनाई। उससे आवाज़ नहीं निकली। फिर बारी-बारी से चांदी तथा तांबे का बनाया, तब भी आवाज़ नहीं फूटी। उसके बाद उसने अपने शरीर की मैल से बनाया। तब जाकर मूर्ति से आवाज़ प्रस्फुटित हुई। एक से दो, दो से दस, दस से सौ, सौ से सैंकडों और सैंकडों ने पृथ्वी को मनुष्य से भर दिया।

देवताओं का अवतरण

मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के 24वें और 25वें सूक्त में देवताओं की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इस प्रकार उल्लेख मिलता है-

कर्मात्मनां च देवानां सोऽसृजत्प्राणिनां प्रभुः।
साध्यानां च गणं सूक्ष्मं यज्ञं चैव सनातनम्।।
अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मा सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः साम लक्षणम्।।

अर्थात् सभी प्राणियों के अधीश्वर परमात्मा ने कर्म स्वभाव वाले अग्नि, वायु आदि देवों के साध्यों के सूक्ष्म समुदाय को और सनातन यज्ञ को उत्पन्न किया। उसके उपरान्त उस परमेश्वर ने यज्ञ की सिद्धि के लिए तीन देवों, अग्नि, वायु और सूर्य को क्रमशः ब्रह्ममय और सनातन, तीन

वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद को प्रकट किया। प्रत्येक देव परम् त्रिमूर्ति का एक रूप है या उससे पैदा हुई सत् या उस पर आश्रित शक्ति है तथा प्रत्येक देवी विश्व शक्ति या परम शक्ति का एक रूप है।

वैदिक काल के ऋषि ऐसे ही दिव्य दृष्टि प्राप्त ांतदर्शी पुरूष थे, जिनके मुखारबिन्द से निसृत ज्ञान वेदों, उपनिषदों एवं अन्य शास्त्रों में संचित है।

बिजली महादेव तथा पराशर ऋषि की भार्थाओं के अनुसार देवताओं को नारयण ने उत्पन्न किया। भार्था में उल्लेख आता है कि नारायण ने प्रकट होकर नीचे से अपना शरीर मलना आरम्भ किया। सबसे पहले पैर के तलवे की मालिश की, उससे तलासर ऋषि पैदा हुए जो बेताल को चले गए। गोडे की मालिश से गडासर ऋषि, ठार से ठारह करड़ू, पिली से देवी पार्वती,और ऋषि पराशर, घुटने के मलने से जनासर, नाभी से कमल के फूल पर ब्रह्मा, छाती से गौकरण ऋषि, गले से गलासर, मुंह से सरस्वती, माथे से आशामात्री ऋषि, दायीं आंख से सूर्य देव, बायीं आंख से चन्द्रमा, और शरीर के अन्य भागों को मलने से तैंतीस करोड़ देवता, अटठासी हज़ार ऋषि, बावन नीर, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, चौसठ योगनियां उत्पन्न हुईं।

आउटर सराज के देथवा नोर में देवता के आने पर फागुन की सक्रांति को मारकण्डेय ऋषि के गूर द्वारा गणाई होती है। गूर एक गाल से दूसरे गाल की ओर पीतल की मोटी सूई निकालता है, जिसे 'बांवड़ डालना' कहते हैं। देवता के सभी कार्यकर्ता इस दिन उपवास रखते है। इस दिन छाड़ी गायन होता है। जिसके कुछ बोल इस प्रकार हैं-

फेर पृथ्वा निहारो होआ गूरा
पूरवा फीरा पैंणे बरूरा
पच्छमा फीरा पौंणे बरूरा
उतरै फीरा पौंणे बरूरा
दौखणै फीरा पौंणै बरूरा
पाणियों सौगा बाजा साथा
मांझी सौरै पाणी बाज़ौ पुडू
पुडू फुटिया लिंगा बाजौ
लिंगा फुटिया ईशरा जौरमौ

सौरा भिंडी वेशो फाकौ
सौरा भिंडी औरू हेरा पोरू
मौनें सूंचा ईशुरा दे।

अर्थात् चारों ओर अन्धेरा था। पूरी सृष्टि जलमग्न थी। समुद्र के बीचों बीच चक्रवात आया जिसके फूटने पर लिंग बना और ईशवर महादेव प्रकट हुआ।

भार्थाओं के अनुसार बहुत से देवी देवता स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरे हैं भगवती काली ओड़ी बबेली की भार्था में इसका वर्गन हुआ है :-

सुर्गा न चूड़ै धरती न पन्ने

इसी तरह ऋषि वशिष्ट की भार्था में महाचीन से आने का वर्णन है। श्यामाकाली की भार्था में काशी वेद विद्यापीठ स्थापित करने और दिल्ली में राजधानी बनाने के बारे में कहा गया है-

काशी वै एज़ी बेठै
काशी वेद विद्यापीठ बणाई बेठै।
दिल्ली भीतरै एज़ी बेठै
राज तख्त बणाई बेठै।

कांगड़ा के ज्वालामुखी से शमशी की भगवती ज्वाला आकर स्थापित हुई है। देवियों की भार्था में कांगड़ा का उल्लेख हुआ है। भारथा में कहा गया है-

कांगड़ा भीतरै निखती, ज्वाला माई नाओं दर्शाई बेठी।

पेड़ेई कुल्लू की देवी भटंती की भार्था में जिक्र आता है कि जब नारायण ने पहले पहल मनुष्य बनाया तो वह बहत छोटा था। इसलिए नारायण ने सोचा आदमी थोड़ा बड़ा होना चाहिए- 'चिंथड़ू-विंथड़ू रै बोले राजपाठ निं चलणा।' कलियुग में घोर पाप होगा इसके बारे में कहा गया है कि- 'धूड़ माटी उठणी पौतर डूबणा ता पात्थर तौरना।'

हिमाचल प्रदेश का ऊपरी भाग जैसे लाहुल-स्पिति, किन्नौर और कुल्लू किसी समय शेष विश्व से कटा रहता था। उस समय भोजन की समस्या रही होगी। एक भार्था में कहा गया है- गहरना चींटी ने अनाज लाया। राजा घेपन को भी लाहुल में अनाज लाने का श्रेय दिया जाता है।

देवी-देवता इस देव भूमि पर अलग-अलग रूपों में प्रकट हुए हैं।

ये देवता कहीं पिंडी के रूप में उत्पन्न हुए, कहीं खेतों में निडाई-गुडाई करते हुए मुखौटे के रूप में, कहीं खेत में हल की नोक में फंस कर प्रकट हुए, कहीं कन्याओं के रूप में जन्म लेकर, कहीं पत्थर पर प्रकट होकर, कहीं अण्डों के रूप में, कहीं साधु के रूप में आए हैं। एक गांव से दूसरे गांव में नव विवाहिता के साथ जाने से भी पूजित हुए हैं। कई देवी-देवताओं ने प्रकट होने के लिए श्रद्धालुओं के सपनों का सहारा भी लिया है।

देव भार्थाओं में वर्णन आता है कि ये देवी-देवता या तो ऊंचे पहाडों से यहां आए या नीचे मैदानी क्षेत्रों के पाप से तंग होकर यहां आकर बसे हैं। अपना राज स्थापित करने के लिए इन्हें यहां के स्थानीय अधिपति को जुआ-पासा खेलकर हराना पड़ा है या किसी विशेष शर्त के अन्तर्गत जीतना पड़ा है। माना जाता है कि किसी समय यहां स्थान-स्थान पर राक्षसों का आतंक था। वे लोगों को गाहे-बगाहे अनुचित तरीकों से तंग किया करते थे। जब इन देवताओं ने उन दुष्ट प्रवृति के शासकों को अपनी शक्ति से हराकर लोगों की सुख समृद्धि में हिस्सेदारी निभानी आरम्भ की तो उन्होंने इन्हें पूजना शुरू किया। परिणाम स्वरूप ये उन स्थानों या गांवों के रक्षक बनकर देव रूप में पूजे जाने लगे।

अधिकांश देवी-देवताओं के प्रकट होने के सम्बन्ध में गौमाता का विशेष योगदान रहा है। इस सम्बन्ध में लाहुल के देवता त्रिलोकीनाथ की गाथा में वर्णन है- किसी समय हिंणुसा नामक क्षेत्र में गांव वालों ने भेड, बकरियों तथा चुरू आदि चराने के लिए टिण्डु नाम के चरवाहे को नियुक्त किया। वह अपनी रेवड़ों को चरागाह में चराने मेघाच्छन पर्वत की गोदी में एक जल स्रोत के पास ले जाया करता था। एक दिन वहां पर उसने देखा कि सात जल स्रोत फूट रहे हैं। उन जल स्रोतों से सात श्वेत प्रतिमाएं निकली और चुरूओं व भेड़ बकरियों के स्तनों से दूध पीने लगीं। उसके बाद जलक्रीड़ा करने लगीं। यह क्रम कई दिनों तक जारी रहा। शाम को वह अपने रेवड़ को लेकर गांव आता तो उन प्रतिमाओं द्वारा दूध पीने की बात भूल जाता। शाम को जब गृहणी दूध दूहने लगती तो उनमें दूध नहीं निकलता। वे चरवाहे को बुरा भला कहती और उस पर दूध चुराने का लांछन लगाती। एक दिन जंगल में पशु चराते हुए उसे एक युक्ति सूझी। उसने पत्थर का एक बड़ा सा टुकड़ा एक चुरू के सींग के साथ बांध दिया

ताकि वह जलस्रोतों से निकलने वाली प्रतिमाओं की बात याद रख सके। उस शाम राणा की पत्नी स्वयं चुरू से दूध निकालने लगी तो चुरू के सींग से पत्थर का टुकड़ा उछलकर दूहनी से टकरा गया। जिससे दूहनी ज़मीन पर गिर पड़ी और फट गई। इस पर मालकिन चरवाहे को गाली देते हुए कहने लगी कि तुमने यह क्या शरारत कर रखी है जो चुरू के सिर पर पत्थर बांध दिया। चरवाहे को तुरन्त याद आ गया और उसने मालकिन को सात प्रतिमाओं द्वारा प्रकट होने और दूध पीने की बात बता दी। राणा को जब इस बात का पता चला तो उसने उसे कहा कि वह अगले दिन उन सात मूर्तियों में से एक मूर्ति को पकड़ कर गांव ले आए। अगले रोज़ जब मूर्तियां प्रतिदिन की तरह जलक्रीड़ा कर रही थी तो ग्वाले ने उनमें से एक मूर्ति पकड़ ली और उसे अपनी पीठ पर उठाकर तुंदेपुरी के मैदान में ले आया। वहां पर मालकिन व राणा ने मूर्ति के दर्शन करने के बाद दीपक जलाकर उसकी पूजा अर्चना की। स्त्री सोचने लगी कि यह सुंदर मूर्ति किस देश से आई होगी। वह मूर्ति को देखकर पुलकित हो गई। तत्पश्चात उसने सौ बार दंडवत प्रणाम करते हुए उसकी परिक्रमा की। बाद में राणा ने उस मूर्ति को वहीं स्थापित किया और उसका मंदिर बनवाकर उस स्थान का नाम तुंदे के स्थान पर त्रिलोकनाथ रखा।

खेतों में निडाई-गुडाई करते समय भी बहुत से देवताओं के मोहरे प्रकट हुए हैं। एक महिला अपने खेत में निडाई-गुडाई कर रह होती है पास में ही उसने अपना छोटा शिशु भी लिटाया होता है। दोपहर में शिशु को प्यास लगती है। वह मां से पानी पीने की इच्छा व्यक्त करता है। बच्चे को प्यास से व्याकुल होते देख महिला भगवान से प्रार्थना करती है कि काश यहां पर जल निकल आता तो वह अपने बच्चे की प्यास बुझा देती। वह ऐसा सोच ही रही होती है कि तभी उसकी किलणी से टन से कोई वस्तु टकराती है। किलणी की नोक से वह उस वस्तु को बाहर निकालती है तो देखती है कि एक अष्टधातु की मूर्ति है। मूर्ति के निकलते ही वहां से जलधारा भी प्रस्फुटित होती है। बच्चे को पानी पिलाकर वह महिला उस मूर्ति को घर लाती है और अन्न की खाली कोठरी में रखती है। अगली सुबह देखती है कि अन्न की कोठरी अन्न से भरी हुई है। वह यह बात गांव वालों को बताती है। गांव वाले उस मूर्ति को देखते हैं तो उन्हें किसी दिव्य

शक्ति के प्रादुर्भूत होने का आभास होता है। तभी किसी व्यक्ति को खेल आती है और वह कहता है कि वह अमुक देवता या देवी है। वहां रहना चाहता है। कालान्तर में लोग उसका मंदिर बनवा लेते हैं।

देवताओं की उत्पति अण्डों से भी मानी गई है। निरमण्ड की अम्बिका भगवती को सराज कुल्लू के देवता एक तालाब में ग्यारह अण्डों के रूप में मिले। अम्बिका ने उन्हें तालाब से बाहर निकाला और फोड़ने पर उनसे चार चम्भु तथा सात देवियां प्रकट हुई, जिन्होंने भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपनी मान्यता स्थापित करवाई।

बहुत से देवताओं की भार्थाओं में वर्णन आता है कि वे यहां साधु रूप में आये। यहां उन्होंने अपनी मनपसन्द जगह को साधना के लिए चुना तथा कई चमत्कार दिखाए। अगर वहां पर अन्य देवता होता तो उसे हराकर वहां से अन्य स्थान पर जाने को विवश किया जाता या उससे अपना आधिपत्य स्वीकार करवाया जाता। कुछ देवते काश्मीर से यहां आये। इनमें शिमला ज़िला के महासू देवता तथा उनके भ्रातागण प्रमुख हैं, जिन्होंने वहां के अत्याचारी दैत्यों को समाप्त करके अपने को देवरूप में पूजित करवाया है।

सराहां के विजट तथा चूड़धार सिरमौर के शिरगुल ने मानव रूप मे जन्म लेकर दुष्टों का संहार करके अपने आप को देव रूप में स्थापित करवाया है। इस प्रकार देव भार्थाओं में देवताओं के स्थापित होने का कथानक तो रहता ही है, उनकी वीरता, तपस्या तथा चमत्कार की घटनाओं का सुंदर वर्णन भी रहता है।

देवताओं का इतिहास

सभी देवताओं का एक निश्चित इतिहास होता है। यद्यपि इनकी गाथा में इस्वी,सन, संवत, दिन, तारीख का वर्णन नहीं होता फिर भी कहीं-कहीं राजाओं, ठाकुरों, राणाओं का उल्लेख रहता है। जिससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ये किस काल में अमुक गांव में रहे होंगे। राजाओं, राणाओ और ठाकुरों का काल निश्चित रहता है। जैसे कुल्लू के जरी के देवता कालीनाग की भार्था में गूर बताता है कि राजा सिद्ध सिंह

के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध रहा है। इसी तरह अठारह करडू की बहन भागासिद्ध की भार्था में भी राजा सिद्धसिंह का उल्लेख मिलता है। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि देवी राजा सिद्धसिंह से पहले से ही तलपीणी गांव में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। देवता अपनी खुली भार्था में बताता है कि सिद्धसिंह का नाम ही इस बात का प्रतीक है कि उसे सिद्धि प्राप्त थी और उस सिद्धि के कारण ही उसने अन्य देवताओं के अतिरिक्त ठारह करडुओं को भी अपने वश में कर लिया था। तब वह देवी भागासिद्ध को जीतने के लिए पीणी मण्डल में गया। पीणी की भागासिद्ध ने उसे कहा कि मैं तो एक अबला कन्या हूं, तप और बल का शक्ति परीक्षण करना है तो रूपी मण्डल में भाई काली नाग के पास जायें। कहते हैं कि जब वह बागाकोट के पास नदी पार करने लगा तो देखा नदी में जल बहुत अधिक है तब देवता कालीनाग ने पर्वत चोटी से एक नगाल बांस की लम्बी लकड़ी लाई और नदी पर रख दी। नदी पार्वती का जल कुछ समय के लिए ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया। तब देवता ने राजा को जल रहित मार्ग से आने का का निमन्त्रण दिया और राजा ने आसानी से नदी पार कर ली। देवता ने राजा को मतेउड़ा जगती में शारनू सौह में बिठाया। राजा वहां अपने साथ लाये ठारह करडू के प्रतीक लम्बी लोहे की सांकल का आसन बनाकर बैठा और कालीनाग को अपना बल और तप शक्ति बताने को कहा। काली नाग ने राजा से कहा कि मेरी शक्ति का परीक्षण करने से पहले वह अपने नीचे रखी सांकल को देखे। राजा ने जब सांकल देखी तो देखा उसके अठारह टुकड़े हो चुके थे। कहते हैं तब राजा को देवता काली नाग की शक्ति का एहसास हो गया था। इस भार्था से यह बात तो निश्चित है कि काली नाग देवता सोहलवीं शताब्दी से पूर्व यहां पूजित हुआ है। इसी तरह चम्बा की सूही रानी जो अब देवी रूप में पूजित है कि गाथा से भी दसवीं-ग्याहरवीं शताब्दी के बाद उसके देवी रूप में पूजनीय होने पर बल पड़ता है। चम्बा के नौण आज भी उसके बलिदान के गवाह हैं। सिरमौर के देवता शिरगुल की भार्था के अनुसार उसका काल दिल्ली में मुगलों के समय से मेल खाता है।

चतुर्थ अध्याय

कुल्लू की देव-भार्थाएं

वीरनाथ थाच माशणा

कुल्लुई

गंगा री गट्टी छनकाई बेठा।
राह ज़ेहई देई बेठा,
तुंगल पिंगल एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा,
सोमसी पौधरा एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा,
खोखणा भीतरै एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा,
राह ज़ेहई देई बेठा,
ढालपुरा एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा
तिलो बहणी बणाई बेठा।
कोण्ढी कुती खल्याई बेठा।
ग्रां घौर जाई बेठा,
आपणी कला दर्शाई बेठा।
राह ज़ेहई देई बेठा,
खलाड़ा भीतरै एज़ी बेठा।
नारायण दादा संघै वाच-वच़न वोन्ही बेठा।
राह ज़ेहई देई बेठा,
थाचा माशणा एज़ी बेठा।
धुडु गढ़िए. चालणु संघै,

वीरनाथ थाचा माशणा

हिंदी अनुवाद

गंगा की गिट्टी छनका बैठा।
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
तुगल-पिंगल आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
शमशी मैदान में आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
खोखण गांव में आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
ढालपुर आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
तिलो बहन बना बैठा।
कोण्ढी कुतिया खेला बैठा।
गांव-घर जा बैठा,
अपना चमत्कार बता बैठा।
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
खलाड़ा गांव अन्दर आ बैठा।
नारायणा दादा के साथ वचन बांध बैठा।
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
थाचा माशणा आ बैठा।
धुडू गढ़िया चालणु के साथ,

जुआ-पासा खेली बेठा।
औतर रूप छोड़ी बेठा,
देवकला चलाई बेठा।
राह ज़ेहई देई बेठा
ढालपुर एज़ी बेठा।
राह ज़ेहई देई बेठा,
बड़ा ग्रां एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा,
बंदरोला एज़ी बेठा।

कुल्लुई

धूनी ज़ेहई देई बेठा,
बटाहर धारा भीतरै एज़ी बेठा।
धूनी ज़ेहई देई बेठा,
देऊ रूप लेई बेठा।

जुआ-पासा खेल बैठा।
मनुष्य रूप छोड़ बैठा,
देवकला चला बैठा।
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
ढालपुर आ बैठा।
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
बड़ागांव आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
रास्ता अगला पकड़ बैठा,
बंदरोल आ बैठा।

हिन्दी अनुवाद

धूनी रमा बैठा,
बटाहर धारा (गांव) अन्दर आ बैठा।
धूनी रमा बैठा,
देवता रूप ले बैठा।

देवी श्यामाकाली दलाशणी

कुल्लुई

सोमनाथ श्रीखण्ड जन्म लेई बेठी,
तौखै न चलिया कश्मीरा भीतरै एज़ी बेठी।
तौखै तपस्या, शक्ति स्थल बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
फिरी काशी भीतरै एज़ी बेठी।
काशी वेद विद्यापीठ स्थल बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
दिल्ली भीतरै एज़ी बेठी।
जगदम्बा रूप केरी बेठी,
राज तख्त बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
कलकता भीतरै एज़ी बेठी,
काली स्थान बनाई बेठी।
आगे नज़र केरी बेठी,
चण्डीगढ़ा भीतरै एज़ी बेठी,
चण्डीगढ़ा चण्डी स्थान बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
कालका भीतरै एज़ी बेठी,
महाकाली रूप केरी बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
कांगड़ा भीतरै एज़ी बेठी,
ज्वाला आगे मुख बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
मण्डी द्रंगा भीतरै एज़ी बेठी,
द्रंगा लूणे री खान बनाई बेठी।

देवी श्यामाकाली दलाशणी

हिंदी अनुवाद

सोमनाथ श्रीखण्ड जन्म ले बैठी,
वहां से चल कर कश्मीर के पास आ बैठी।
वहां तपस्या, शक्ति स्थल बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
फिर काशी के पास आ बैठी,
काशी में वेद विद्यापीठ स्थान बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
दिल्ली के पास आ बैठी।
जगदम्बा रूप कर बैठी,
राज सिंहासन बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
कलकता के पास आ बैठी,
काली स्थान बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
चण्डीगढ़ के पास आ बैठी।
चण्डीगढ़ में चण्डी स्थान बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
कालका के पास आ बैठी,
महाकाली रूप धर बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
कांगड़ा के पास आ बैठी।
ज्वाला के आगे मुंह बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
मण्डी द्रंग के पास आ बैठी,
द्रंग में नमक की खान बना बैठी।

कुल्लुई

कटौला भीतरै एज़ी बेठी,
कटौलै गऊ बौछूरा बौर देई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
कुलू भीतरै एज़ी बेठी,
आगे नज़रा केरी बेठी,
कुलू नगरा देऊ जगती बनाई बेठी।
आगे नज़रा केरी बेठी,
राहतर भीतरै एज़ी बेठी,
चीलै रै चलाफा रा तौर बणाई बेठी।
चलाफै रै तौरा पादै तौरी बेठी,
राहै ठारह करडू रा चौंतड़ा बनाई बेठी।
व्यास नौई ता गोमती गंगा संगमा पांदै,
तीर्थ बनाई बेठी।
आगे राहधारी केरी बेठी,
दाड़ी भीतरै लोप होई बेठी।
दाड़ी राणा घंडिया ती,
घंड़िया राणे हागे पूंगी राम,
नोकरी चाकरी केरी बेठा।
धियाड़े वै से लाणा राती वै खोला ती।
दाड़ी गौही पांदे कोदरा तूशा रा पोलू,
खाणे वै देया ती।
सौ भारा साधुआ नी ती,
राणा घंडिया गाली बेठी।
पुगी रामै री स्त्री सुनीता वै,
छौली गुड़ाई केरदै दर्शन देई बेठी।
दलासणी भीतरै एज़ी बेठी,
कौण्डा कशांभला ज़ोंदरै स्थापना केरी बेठी।
वशां री डाली रोपी बेठी,

हिन्दी अनुवाद

कटौला के पास आ बैठी।
कटौला में गाय बछड़े का वरदान दे बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
कुल्लू के पास आ बैठी।
कुल्लू नगर में देवता का सिंहासन बना बैठी।
आगे नज़र कर बैठी,
राहतर के पास आ बैठी,
चील की पतियों से तारू बना बैठी।
पतियों के तारू पर नदी पार कर बैठी।
राहतर में अठारह करडू का थड़ा बना बैठी।
व्यास नदी और गोमती गंगा संगम पर,
तीर्थ बना बैठी।
आगे रास्ता बना बैठी,
दाड़ी के अन्दर अन्तर्ध्यान हो बैठी।
दाड़ी में राणा घंडिया था,
घंडिया राणे के पास पुंगी राम,
नौकरी चाकरी कर बैठा।
दिन को पुल बनाकर रात को उखाड़ता था।
दाड़ी गौही पर कोदरा छिल्के की रोटी,
खाने को देता था।
वह भार साधा नहीं गया,
राणा घंडिया को गला बैठी।
पुंगी राम की पत्नी सुनीता को,
मक्की की गुडाई करते हुए दर्शन दे बैठी।
दलासणी के पास आ बैठी,
कांटे कशामल के अन्दर स्थापना कर बैठी।
बशां की डाली रोप बैठी

कपली गौऊ बशां री,
डाली आगै पूजिया,
दूधे धार देया ती।

कुल्लुई

कपली गऊ लोप हुई बेठी,
श्याम यप शक्ति रूप प्रकट होई बेठी।
गम्भा संघे वाच़-वच़न वन्ही बेठी,
गंभे न रोज़ पूजा़ पाठा रा,
वचन लेई बेठी।

कपली गाय थी वशां की
डाली के पास पहुंचकर,
दूध की धार देती थी।

हिन्दी अनुवाद

कपली गाय लुप्त हो बैठी,
श्याम रूप शक्ति रूप प्रकट हो बैठी।
गम्भ के साथ बचन बांध बैठी,
गम्भ से प्रतिदिन पूजापाठ का,
बचन ले बैठी।

देवी बराही बराह

कुल्लुई

पाणी रा डलो़ थी,
निहार-घोर पृथ्वी ती।
दिल्ली आगरे मनु संघे,
सुहाग भाग टके बैठी ती।
मां धी रा सहुखा,
बाबा पुत्रारा नाता बणा बेठी।
सगल साथी चली पटकरी बै,
पहाड़ पर्वत ढाको बेठी।
तीबड़ा उपद्रव होंदा लागा ती,
मौखी रै रूपे माण्हू रा,
कलेजा चाखी बेठी ती।
बुरे माण्हू वै चंडी,
माणहू संगदी बुरी गल
साधी नी ती।

देवी बराही बराह

हिंदी अनुवाद

पानी का तालाव था,
अन्धेरी घनेरी पृथ्वी थी।
दिल्ली आगरा मनु के साथ,
सुहाग विवाह सम्बन्ध बना बैठी थी।
मां बेटी का सम्बन्ध,
पिता पुत्र का सम्बन्ध बना बैठी।
सब साथी चले पटीकरी(गांव) को,
पहाड़ पर्वत पकड़ बैठी।
वहां उपद्रव होने लगा था,
मक्खी के रूप में मानव का,
कलेजा चख बैठी थी।
बुरे आदमी को चण्डी,
आदमी के साथ बुरी बात,
सहती नहीं थी।

अम्बिका भगवती निरमण्ड

कुल्लुई
सैरगै चूड़ी पौड़ी,
चूड़ी गे देविए दुर्गे माइए।
बोला विष्णु नरैणा माए,
देविए दुर्गे माइए।
तेरो नाओं लेओ पहले देविए दुर्गे माइए,
देवे दानवे ध्वाए माए देविए दुर्गे माइए।
कौरै इना दानियों संधारा माए देविए दुर्गे माइए,
तौले भौउणा बणावीं माए देविए दुर्गे माइए।
चांदीए शिला कै छैउं माए देविए दुर्गे माइए,
सैरगे चुड़ी पौड़ी चुड़ी गै देविए दुर्गे माइए।
हाथै खाण्डी चाकौ खौपरा गै देविए दुर्गे माइए,
दानवे देदणै लाए माए देविए दुर्गे माइए।
गौड़ा गौड़िए डूबी माए देविए दुर्गे माइए।
कौम्पन कौरदो लागो माइए महाकाली,
केश दूरा-दूरा गिरदौ लागौ।
सहस्र काली प्रगट हुऔ,
काली जाहरू नागौ रा पुकारदौ हुऔ,
जाहरू कालिये सारा रैक्त चाटदा लागो।
तवै परशुराम मां चरणा मंझे, झुकदौ लागौ,
बोलौ मां तू मेरी मां असौ।
देवी लुप्त हुऔ मां,
लोका पुजदौ लागौ।
राणा खनैर का खनैरटी,
निरमण्डा फेरदी चार बौसा राय,

अम्बिका भगवती निरमण्ड

हिन्दी अनुवाद
स्वर्ग से उतर पड़ी,
उतरी हे देवी दुर्गा माता।
बोला बिष्णु नारायण माता,
देवी दुर्गा माता।
तेरा नाम लेना पहले देवी दुर्गा माता,
देव दानव ने ध्यान किया मां दुर्गा माता।
कर इन दैत्यों का नाश मां देवी दुर्गा माता,
तुझे बहन बनाया मां देवी दुर्गा माता।
चांदी की छत डालकर मां देवी दुर्गा माता,
स्वर्ग से उतरी देवी दुर्गा माता।
हाथ में खडग व खप्पर उठाया देवी दुर्गा माता,
दानवों के शरीर बढ़ने लगे मां देवी दुर्गा माता।
गले तक डूब गई मां देवी दुर्गा माता।
कम्पन्न करने लगी मां महाकाली।
केश दूर-दूर तक गिरने लगे,
हज़ारों कालियां प्रकट हुई।
काली जाहरू नाग को पुकारने लगी,
जाहरू नाग व कालियां सारा रक्त चाटने लगे।
तब परशुराम मां के चरणों में, नतमस्तक होने लगे।
बोले-मां तू मेरी मां है।
देवी लुप्त हो गई मां,
लोग पूजने लगे।
राणा खनैर का खनेरटी,
निरमण्ड के चारों ओर रहता था।

बाड़ी भालसी खरशू बौसा।
खैरौ राय खनैरटी,
से सुल्टे हाथे का लेया तो
उलटे हाथै का देआ तो।
साठ हाड़ी-कदाड़ी,
साठ रूहाई कौमा के लाये।
दुपहरी कै चाली बेटड़ी रोटी पहुंचाणे गयौ।

बड़ा भाई खरशू में रहता था।
खैर का राय खनेरटी,
वह सीधे हाथ से लेता था,
उल्टे हाथ से देता था।
साठ हाली कुदाली,
साठ रूहाई काम प लगाये।
दोपहर को चली औरतें रोटी पहुंचाने गई।

कुल्लुई

देवी आपणी लीला दर्शायो,
साठ हाड़ी-कदाड़ी व रूहाई,
साठ जोड़ी बौलद बाटलू बाहमण डुबी गयौ।
जांगड़ा बील कुर्पन गाड़ किनारे,
ख्याली झाखड़ पुजौ।
तौब का मां ख्याली झाखड़ नाम पौड़ो।
सारी बेटड़ी मौरी गयौ,
खनैर का राणा पागल हुऔ।
एक दूजौ राणा समौर असौ,
समौरो राणो लोड़ले पाथे के देआ तो,
बौड़े पाथे के लेआ तो।
तेई लाहुदी गावी ओ दूधे कौर पाआ।
दूई-दूई रिगड़ू दोती-दोती गराही लै आहा तै।
एकी बाहमणी आहगे दुध घी दैणा लै नेही थौ।
तैहा बाहमणी लै गाल़ बैठी।
तेहे फेडुए पाचे दुइ डूने बणउए,
तेहे आपणी एकी चुई ओ दूध,
आपणै लाहनू लै डाही।
दुजे डूने का दूध,
तिना रिगड़ू कै समौरै राय लै भेज़ौ।
राय दी तेऊ दुधा पीईआ मिठ चौढ़ी,
तेउए सौ गावी ओ दुध बंद कीओ,
बाहमणीए दूधै कौर पाओ।
एके बाटे टाली ना,
एक बाटे टाली बिलै निखवी।

हिन्दी अनुवाद

देवी ने अपनी लीला दिखाई।
साठ हाली-कुदाली रूहाई,
साठ जोड़ी बैल बाटलू ब्राह्मण डूब गए।
जांगड़ा बील कुर्पन खडड के किनारे,
ख्याली झाकड़ पहुंचे।
तब से मां इसका ख्याली झाकड नाम पड़ा।
सब महिलायें मर गईं।
खनैर का राणा पागल हो गया।
एक दूसरा राणा समौर का था,
समौर का राणा छोटे पत्थे (परिमाण मापक) से देता था।
बड़े पत्थे से लेता था।
उसने प्रसूता गाय के दूध पर टैक्स लगाया।
दो-दो कर्मचारी सुबह-सुबह टैक्स वसूलने आते थे,
एक ब्राह्मणी के घर दूध घी देने को न था।
उस ब्राह्मणी के मन ने सोचा,
उसने फेड़ू के पते कें दो डूने बनाए।
उसने अपने एक स्तन का दूध,
अपने बेटे को रखा।
दूसरे डूने का दूध,
उन कर्मचारियों को समौर के राणे को भेजा।
राणा को वह दूध पीकर नशा चढ़ा।
उसने गाय का वह दूध बन्द किया,
ब्राह्मणी के दूध पर कर लगाया।
एक बार टाली स्थान गई,
एक बार बीले स्थान गई।

शानाए लै हाका मारा ना हाका,
किहदी गै औए तू निरमण्डे माई ना।
म्हारै सै नादलू ना,
म्हारै गै नांदलू भूखै मूएं चीशै।
एकै चूई गै ना,
एकै चूई गै सौ राणै समौरी लै ना।
दूजी चूई ना,

स्याणे को वहां से आवाज़ लगाई,
क्यों आई तू निरमण्ड मां।
हमारे जो बच्चे हैं,
हमारे ये बच्चे भूख से मर रहे हैं।
एक स्तन का दूध,
एक स्तन का वह राणा समौरी ले जाता है।
दूसरे स्तन का,

कुल्लुई

दूजी गै चूई देंई, हामै बेटे आपणै लै।
हामै आपू मौरी नां,
तू माए होए जागरिता।
आपू गै मौरी बेटै मारी पछांटी पछाटिया,
तेंरै देउरै कै तुए माए होए जागरिता।
सौहवै बाहमणी माइए,
भौउणा लै कोठी हुई।
होर म्हारै सौवै सगाइया जाना सकाइया।
हामा तेंरै भौउणा दि चूई काटिया मौरनौ।
महामाई आपणै भौउणा का बाहरा बौरशै,
कोनिया बौणिया भौउणा का बाहरै निकड़।
समौरी राय आहगै पूजी,
तिही तेहै छा़रै दुकी मौंत्री।
सौ राये बेहड़े लै फैंकी,
तेथै के मांगणी पिरशू बौणै,
समौरी रायौ खाई खाईआ चूटढ़
राय नौरदी नाला़ गाही झूलण लाओं,
माइए मांगड़ी पिरशू दी फड़ैकटू लाए,
समौरी राय पछाटणी-पछाटणी आ मौरौ।

हिन्दी अनुवाद

दूसरे स्तन का, देती हम बेटे अपने को।
हम खुद मर जायेंगी,
तू मां हो जागृत।
स्वयं मरेंगी बेटे मारेंगी पटक-पटक कर,
तेरे मंदिर मैं तू मां हो जागृत।
सब ब्राह्मणी मां,
दरबार में इकट्ठा हुई।
और हमारे सबसे सहन नहीं हो रहा है।
हम तेरे दरबार में स्तन काट कर मरेंगी।
माता अपने दरबार से बारह वर्ष की,
कन्या बनकर दरबार से बाहर निकली।
समौरी राणे के पास पहुंची,
वहां उसने राख की चुटकी अभिमंत्रित की।
वह राय के महल को फैंकी,
उसके खटमल पिस्सू बन गए।
समौर के राणा का जिस्म खा खा के चूसा,
राणा ने नौरदी नाले के ऊपर झूला लगाया था।
मां ने खटमल पिस्सू के झुण्ड लगाए,
समौर का राणा पटक-पटक कर मर गया।

देवी पंचाहली पुजाली

कुल्लुई

कांगड़े भीतरै निखती,
ज्वाला माई नाओं दरशाई बेठी।
बालो बटेलरू ज्ञाना ध्याना लगा बेठी।
घोटे पलोटे भारी हां नी लागदौ।
गोई आगै सीकतौ,
बिज़ बाती चमकली,
धुड़माटी उठली।
आछी नी शूजदा,
सतकौ फिरलौ।
गौंई पीछे सिकलौ,
देश मुलक शूजदौ लागौ,
धीण गागल देई बेठी।
आगै नोज़रा देंदी,
गुमै भीतरै निखती,
आठ मण लूण लाई बेठी।
उझै देऊका म्हारा,
हूंदै राज़का थारा।
आगै नोज़रा देंदी,
कटौला भीतरै निखती।
महाकाली रूपै त्रशाउली बै,
चाकरी देई बेठी।
आगै नोज़रा देंदी,
कांडी भीतरै निखती,

देवी पंचाहली पुजाली

हिन्दी अनुवाद

कांगड़ा अन्दर निकली,
ज्वाला मां नाम दरशा बैठी।
बलो ब्राह्मण से ज्ञान ध्यान लगा बैठी।
घोटे पलोटे भारी हां नहीं लगती।
एक कदम आगे निकली,
साफ आसमान में बिजली चमकी,
धूल मिट्टी उठी।
आंख में नहीं दिखा,
सातों ओर घूमी,
एक कदम पीछे हटी।
देश मुल्क दीखने लगा।
बहन को गाय दे बैठी।
आगे नज़र दी,
गुमा के अन्दर निकली,
आठ मन नमक ला बैठी।
ऊपर देव-स्थान हमारा,
नीचे राज तुम्हारा।
आगे नज़र दी,
कटौला के अन्दर निकली,
महाकाली रूप में त्रशाली को,
नौकरी दे बैठी।
आगे नज़र दी,
फांढी के अन्दर निकली,

ओडो विंदौ घाई बैठी।
गज़ घाई बेठी,
ओरी रायका पोरी बायका
ग्रां बसाई बेठी।
आगै नोज़रा देंदी,
बजोउरै छलैण कुणी भीतरै निखती।
जोगणी सरूपै बीओ बागौ तरी बैठी।
आगै नोज़रा देंदी,

ओड़ा लगा बैठी।
गज़ लगा बैठी,
इधर रायका उधर बाईका
गांव बसा बैठी।
आगे नज़र दी,
बजौरा छलैण के किनारे निकली,
जोगणी रूप में व्यास तैर गई।
आगे नज़र दी,

कुल्लुई

मकराहड़ा भीतरै निखती।
मकराहड़ा मकड़ सिंहा रा शाशन,
सौ आउंदे-जाउंदे,
देउआ खे एक शर्त राखौ।
शर्त जीतणो आले खो जाणे देओ,
हारने आलेओ बन्दी बणाउदो।
आगै नोज़रा देंदी,
मंगलौरा भीतरै निखती।
मंगल सिंह राजा सीण मिरग मांस खालौ।
मिरग मांस नाहीं आणला,
मल्ली मासा लागी बैठो।
चीला डाडा शांगटौ शोटली।
मंगल सिंह राजा गाली ढाड़ी बेशली।
आठ के मौहते शाठ के डाहुली,
चलाउड़ी चांभू पैरा हेठै गाड़ी बेठी।
आगै नोज़रा देंदी,
गाबी भीतरै निखती,
भाद्रू के ध्याड़े जल जातरा लाई बैठी।
शुरू बताला भीतरी निखती।
सोला सुरगणी कुंगु केसर री,
कटोरी लाई केरी निखती।
मंगल गाई बैठी।
धूरा पुरख नाचे मार लागी पौड़दी,
धूरे स्त्री नाचे गण जोइ पणदी लागी,
अपणे-अपणे देउड़ी रचाई बैठी।

हिन्दी अनुवाद

मकराहड़ के अन्दर निकली,
मकराहड़ में मकड़सिंह का शासन था।
वह उधर से आने जाने वाले,
देवता से एक शर्त रखता था।
शर्त जीतने वाले को आगे जाने देता,
हारने वाले को बंदी बना देता।
आगे नज़र दी,
मंगलौर के अन्दर निकली,
मंगल सिंह राजा सिंह-मृग का मांस खाता था।
एक बार मृग मांस नहीं आया,
मानव मांस खाने लगा।
चील के डाल पर शांगटा फैंका,
मंगल सिंह राजा गाली दे बैठा।
आठ मौहते साठ हारी,
चलाउड़ी के चांभु को नीचे गाड़ बैठी।
आगे नज़र दी,
गाबी के अन्दर निकली,
भाद्रपद के दिन जात्र लगा बैठीं।
शुरु बताल के भीतर निकली,
सोलह देवियां तिलक केसर की,
कटोरी ला के निकली।
मंगल गान गा बैठी।
दायीं तरफ नाचने पर मार लगी पड़ने,
दायीं तरफ स्त्री नाचे गण जोई लगी पड़ने,
अपने-अपने घर रचा बैठी।

आगै नौज़रा देंदी,
बाहू भीतरै निखती।
बाहू बौरगौ उत्पन कौरलौ,
गाड़ी ठाड़ी बेठली।
बाहू गाश की सौंघा,
जुआ पासा खेली बैठी।
आपणा जुआ जीती बेशली,

आगे नज़र दी,
बाहू के अन्दर निकली,
बाहू में बौरग पैदा किया।
गाडी ठाडी बैठी।
बाहु के मालिक के साथ,
जुआ पासा खेली बैठी,
स्वयं जुआ जीत बैठी।

कुल्लुई

गाश की जुआ हारी बेशली।
बाहू भाल्डू कुरम कोड़ी डाही बेशली।
नागडीं नगेहड़,
आगै नोज़रा देंदी,
डेहड़ बाई निखती।
गढ़े कोट शत्रु पैर धरने न देंदी।
गढ़े कोटे शाह शरठ देसा ज़ीततै,
ईहलै रिंगड़ बाण काढू ली।
ठारह कनारै ठ्रौंउली,
एको न डाहुली।
गढ़े कोट शत्रु वै पैर धरनै न दींदी।
आपणा बाहण छाडी बैठी,
आपणा बाहण मेटी बैठी।
आगै नोज़रा देंदी,
पेड़चै भराड़ी भीतरै निखती।
भ्रामरी नांव दरशाई बेठी।
आगै नोज़रा देंदी,
थोगी भीतरै निखती,
आपणा बाणा बाहमणी वै देली,
बाहमणी रा बाणा आपू लौऊंदी।
थोगी पाचडू डाही बेठी।
थान मान नरोल बणाई बेठी।
आगै नोज़रा दींदी,
पुजाली भीतरै निखती।
थौणा वै पौहरौ देई बैठी,
दूजे कनारै विष्णु वै थान मान डाही बैठी।
चिलत लारा बिल बलोड़ी,
एकसा जाती री दूई जाती हुई।

हिन्दी अनुवाद

मालिक को जुआ हरा बैठी।
बाहु भाग करम निकाल बैठी।
ना:गिन नाग,
आगे नज़र दी,
डेहड़ बाबड़ी में निकली।
गढ़ कोट में शत्रु को पैर धरने न देती,
गढ़ कोट में सौ साठ देश जीते।
यहां रिंगल बाण निकाले,
अठारह तरफ भगाए,
एक नहीं रखा।
गढ़ कोट में शत्रु को पैर न धरने दिया।
अपना वाहन छोड़ बैठी,
अपना वाहन समेट बैठी।
आगे नज़र दी,
पेड़चा भराड़ी के अन्दर निकली,
भ्रामरी नाम दर्शा बैठी।
आ:गे नज़र दी,
थोगी के अन्दर निकली,
अपना वस्त्र ब्राह्मणी को दिया,
ब्राह्मणी का वस्त्र स्वयं पहना।
थोगी में पत्थर रख बैठी,
स्थान सम्मान अन्दरोल (अन्त:पुर) बना बैठी।
आगे नजर दी,
पुजाली के अन्दर निकली,
स्थान देवता को पहरे पर लगा बैठी,
दूसरे किनारे विष्णु को स्थान सम्मान दे बैठी।
मोर मोरनी नाचने लगे,
एक जाति की दो जातियां हुई।

देवी भटन्ती पड़ेई

कुल्लुई

सेई मेई पृथी पाणी रै सौर ती,
आपू महाराज सूने रै पलंगा पादै वेशा ती।
ता घड़ी री बौरज़ महीने वै ता,
महीनै री बौरज वौर्शा वै होआ ती।
ता ठारह करडू, कालका नाग,
नरायण वी पारजुआ ती।
ता आपु वै अरजी बीउंती केरदै लागा ती।
ता महाराज बोला ती,
औखै शुआं बुहारा केरदै जा।
आपु महाराज सोन कोन देईया वेशा ती।
चिंथडू विंथडू हौलै रै बौगै आर-पार,
मैटा मामला खोला ती ता,
कोहलै री शौईं वै लाटरू न चेका ती।
इन्हा चिंथडू विंथडू रै बोलै राजपाठ नीं चलणा,
ए गालने ता होर माण्हू बणाणे।
सोने रै बणाऐ ता वाक नी छूटी,
चांदी रै बणाऐ ता वाक नी छूटी,
ताबे, कांसे, पीतलै रै बणाऐ,
तां वी वाक नी छूटी।
चांदी रै पौटडू पादै नहा धो केरा ती,
सूनै पौटड़ै बेशा ती,
सूनै पौतरी वाचा ती,
ता तार जवाब केरा ती।

देवी भटन्ती पड़ेई

हिन्दी अनुवाद

जलमग्न पृथ्वी में पानी का सरोवर था।
स्वयं महाराज सोने के पलंग पर बैठे थे।
तो घड़ी का बीजा महीने को था,
महीने का बीजा बर्ष को होता था।
तो अठारह करड़ू कालका नाग,
नारायण भी प्रकट हुआ था।
तो अपने को प्रार्थना करने लगे थे,
तो महाराज बोले थे,
यहां साफ सफाई करते जाओ।
स्वयं महाराज संकेत से कह बैठे थे।
छः इंच हल की नोक के आर-पार
मेट मामला खोलते थे।
कोहल की सरसों को घड़े में उठाते थे।
इन छोटों के राज नहीं चलाया जाएगा,
इन को मिटा कर और मानुश बनाने हैं।
सोने के बनाये तो आवाज़ नहीं निकली,
चांदी के बनाये तो आवाज़ नहीं निकली,
तांबे, कांसे, पीतल के बनाये,
तब भी आवाज़ नहीं निकली।
चांदी के बड़े पत्थर पर नहाते धोते थे,
सोने के सलेट पर बैठते थे,
सोने के सलेट पर बातचीत करते थे,
तो सवाल जवाब करते थे

माण्हू-माण्हू वी पारजुआ ती,
शोभै शब्बारै वी उम्दा होआ ती।
ता तुबका तलवारी खलपदी नईं ती,
बाका सिद्ध छूटदी नईं ती।
महाराजै त्राई धड जिउदै केरै ता,
एक धड गलदा केरू,
तां वाक छूटी।
माण्हूं वै अन्न,

मानुश-मानुश भी प्रकट हुआ था,
सुन्दर भी उमदा होते थे।
तब बंदूकें और तलवारें नहीं खनकती थी।
बाक सिद्ध छूटती नहीं थी।
महाराज ने तीन शरीर जीवित किए तो,
एक शरीर गलने वाला बनाया,
तो आवाज़ फूटी।
मनुष्य को अन्न,

कुल्लुई

चिड़ू वै गाह पौच,
कीड़ै मकोड़ै वै गटा,
रा रीज़क बोंडी धिना।
अन्नै-धनै री पूजा लागी होन्दी,
उईंन देऊ नराज़ लागै होंन्दै।
तवै महाराज़ै बोलू,
अन्न देऊ तू ढाई घड़ी वै औखै न जा।
अन्ने देऊ ढाई रोज़ लाऐ।
महाराजे बोलू,
ढाई घड़ी वै भेजू,
ढाई ध्याड़ै किवै लाऐ।
महाराज एक ध्याडा जाणै वै,
एक ध्याडा एणै वै,
होर औधा ध्याडा बेशणै वै।
महाराजे बोलू,
तौभै औज सा एतरा घमण्ड,
जा तू लुप्त हुआ लोड़ी।
तू हौलै बाहुआ लोड़ी,
लोका वै आपणी भूखा पादै,
खाणै वै हुआ लोडी।
महाराज तू बज्रशिल पेच।
महाराज बज्रशिल पेचा ता,
तौखै गेहरना मकोड़ी निकली ती।
गेहरना मकोडिए बोलू,
महाराज हाऊं किवै शाधी।

हिन्दी अनुवाद

पशु-पक्षियों को घास-पात,
कीड़े-मकोड़े को मिट्टी-पत्थर,
का रिज़क बांट दिया।
अन्न धन की पूजा लगी होने,
इससे देवता नाराज़ लगे होने,
तब महाराज ने कहा,
अन्न देवता! तू अढाई घड़ी के लिए यहां से जा।
अन्न देवता ने अढाई दिन लगाए।
महाराज ने कहा,
अढाई घड़ी के लिए भेजा था,
अढाई दिन क्यों लगाए।
महाराज एक दिन जाने में और,
एक दिन आने में,
और आधा दिन आराम करने में।
महाराज ने कहा,
तुझे आज है इतना घमण्ड,
जा तू लुप्त हो जा।
तू हल द्वारा बीजा जाये,
लोगों को अपनी भूख पर,
खाने को होना चाहिए।
महाराज तू बड़ी चट्टान खोल,
महाराज ने बड़ी चट्टान खोली तो,
वहां गहरना नाम की चींटी निकली थी।
गहरना चींटी ने कहा,
महाराज मुझे क्यों बुलाया।

महाराजै बोलू,
गेहरना तू पुण्डरी चमारी रै घौरा,
अन्ने रै स्नेहै वै जा।
गेहरने बोलू,
महाराज हाऊं बौकरी बराबर सा,
मूं ऐ कोम कियां केरना।
महाराजै तांबै री तारा रा एक सिरा,

महाराज ने कहा,
तू पुण्डरी चमारी के घर,
अन्न को लाने जा।
गहरना ने कहा,
महाराज! मैं तो बकरी बराबर हूं,
मैं ये काम कैसे करूंगी।
महाराज ने तांबे की तार का एक सिरा,

कुल्लुई

आपणै गूठे संघै बोन्हू,
ता गेहरना अन्ने रै स्नेहै वै नौठी।
संध्या-संध्या ठारह करोड़ पैंडा लंघू,
पुंडरी चमारी रै महला पूजी।
संध्या-संध्या छौ परौली वी लंघी ता,
सौतवी परौली पादै तेसरा,
चंद्रना भा खंडा छूटा ती।
ता गेहरना रा हाड मांस काटिया ती,
ता तांबै री तार काटिया नई ती।
पुंडरीए गेहरना न पूछू ती,
तू किवै आई।
गेहरनै बोलू,
हाऊं महाराजै अन्नै रै स्नेहै वै भेजी दी सा।
पुंडरी चमारीए बोलू,
गेहरना तौभै काचा अन्न ता मिलदा नई,
पक्का अन्न भोगणा ता भोग।
गेहरनै बोलू, हाऊं पक्का अन्न भोगदी नई।
गेहरनै मकोड़िए मुहां आगै धूपै री लोणा मोंझै,
जेठा अन्ना रा दाणा छुपाई बेठी।
होर गांगणी वी मुहां मोझै छुपाई बेठी।
तबै गेहरने बोलू,
पुंडरिए तू बेश ता हाऊं चौली।
गेहरने संध्या-संध्या छौ परौली लंघी ता,
सौतवीं परौली पादै चंद्रना-भा-खंडा छूटा ती।
ता गेहरना रा हाड़ मांस काटिया,

हिन्दी अनुवाद

अपने अंगूठे के साथ बांध लिया।
तो गहरना अन्न लाने को गई।
शाम-शाम अठारह करोड़ कदम लांघे,
पुण्डरी चमारी के महल पहुंची।
शाम-शााम ही छः दरवाज़े भी लांघ दिए।
सातवीं परोली पर उसकी,
चांदी की तलवार छूट गई।
तो गहरना का हाड मांस कटता था,
तो तांबें की तार कटती नहीं थी।
पुडरी ने गहरना से पूछा था,
तू क्यां आई।
गहरना बोली,
मुझे महाराज ने अन्न लाने भेजा है।
पुडरी चमारी ने कहा,
तुझे कच्चा अन्न तो मिलेगा नहीं,
पका हुआ अन्न भोगना तो भोग।
गहरना ने कहा मैं पका हुआ अन्न नहीं खाती।
गहरना चींटी ने मुंह के पास धूप के धुएं के बीच,
बडे अन्न का दाना मुंह में छुपा बैठी,
और गांगणी भी मुंह के अन्दर छुपा बैठी।
तब गहरना ने कहा,
पुण्डरी! तू बैठ मैं चली।
गहरना ने शाम-शाम छः दरवाज़े लांघ लिए।
सातवीं परोली पर चांदी का खडग छूटा था,
तो गहरना का हाड़मांस कटने लगा

पर तांबे री तार काटिदी नईं ती।
गेहरना संध्या-संध्या ठारह करोड पैंडा लंघु,
ता महाराजै आगै पूजी।
तौखै गेहरने जेठा अन्ना रा दाणा,
भूईयां शेटूता,
तूई रै औठ कोण हुए।
ता गांगणी रा दाणा भूईंया शेटू

परन्तु तांबे की तार कटती नहीं थी।
तो गहरना ने शाम-शाम, अठारह करोड़ कदम
लांघ लिये,
तो महाराज के पास पहुंची।
वहां गहरना ने बड़े अन्न का दाना,
भूमि पर फैंक दिया।
उसके आठ कोण हुए।
तो गांगणी का दाना भूमि पर फैंका,

कुल्लुई

ता तूईं रै सोलह-सोलह कोण हुए।
गहरना रा हाड़ मांस काटिया ती।
कुलान्त विधि सिंह राज़ा ती,
विधि सिंह मूं हागवै आऊ।
मैं बोलू, विधि सिंह तू किवै आऊ।
बोला, हे माता! मैं ठारह ठाकरी होंडी,
ता पुतर फौ कोई निसी देई।
अगर माता! तू वी नई देली,
ता तेरा बेहड़ा खाली होणा।
मैं बोलू, बधाणियां जा तेरी तैईएं,
हांऊ जोत पांथ होंडनू।
ता छौ महीनें वौरशा वै पुतर फौ देनूं।
राजै बोलू, माता! जवै मैंरै पुतर फौ होला,
ता तौवै हाऊं भ्याली ठेलरू जातर देनू।
तैवै हेरता बधाणी मैं सलादै-खलादै,
तुंगा धारा फेटै भेजू।
ता दाता न फातरू ती,
जोग न पजयारा ती,
होर रघुरतन ढौंसी ती।
थोड़े रौजा मोंझै दाता न फातरू,
जादै-जादै मानतलाई ता मानसरोवरा,
ता देऊा पीढी चंद्रखणी भीतरै पजाई बेठी।
त्रा महीने देऊआ पीढी भीतरै पजाई बेठी।
त्रा महीने बाद दाता न फातरू,
ढनाली केलो पुजा ती।

हिन्दी अनुवाद

तो उसके सोलह-सोलह कण हुए।
तो गहरना का हाड मांस कटता था,
कुल्लू में विधि सिंह राजा था,
विधि सिंह मेरे पास आया।
मैंनें कहा, विधि सिंह तू क्यों आया।
बोला, हे माता ! मैं अठारह नारायणों के गांव गया,
पुत्र फल कोई नहीं दे रहा।
अगर माता तू भी नहीं देगी,
तो तेरा महल खाली होगा।
मैंनें कहा, राजा जा तेरे लिए मैं,
पर्वत-पथ लांघूंगी,
और छः महीने में पुत्र फल दे दूंगी।
राजा ने कहा, माता! जब मेरे पुत्र फल होगा,
तो मैं तुझे बिहाली ठेलरू ज़मीन दूंगा।
तब देख बधानी को मैंनें आश्वासन देकर,
तुंगा धार से होकर भेज दिया।
तो दाता नाम का फातरू था,
जोग नाम का पुजारी था,
और रघु रतन ढौंसी था।
कुछ दिन बाद दाता नाम का फातरू,
जाते-जाते मानतलाई और मानसरोवर,
तथा देवता पीढ़ी चंद्रखणी के पास पहुंचा बैठी।
तीन महीने के लिए देवता पीढ़ी के अन्दर पहुंचा बैठी।
तीन महीने बाद दाता नाम का फातरू,
ढनाली केलो नामक स्थान पर पहुंचा था।

ता बालड़ै हाक देआ ती,
हो ढोलिरैयो! दाता न फातरू आऊ।
घौर ढौलिरै रोंदै कलांदै लागै दै ती।
बोला ओ माता! आसै लोका आगै ठठै वै हुए।
माता बोली! ता जुठ परीठ हाऊ साधा नई ती।
ता दाता न फातरू जीऐ सेऊ मैं हेरता,
दरिया पांदै ता जीयै बेड़े आगै पजा।

तो बालड़े को आवाज़ दी थी,
हे ढोल बजाने वालो, दाता नाम का फातरू आया है।
घर में ढोली रो-चिल्ला रहे थे,
बोला, ओ माता! हम लोगों के पास मज़ाक के लिए हुए।
माता बोली! जूठ-परीठ मैं साधती नहीं थी,
दाता न फातरू जाता हुआ पुल से मेंनें देखा।
नदी के ऊपर जीया महल पर पहुंचाया।

कुल्लुई

दाता न फातरू बोला ती,
ओ बधाणियां! हाऊं जोत पांथ,
होंडिया आई दी सा।
मैं तौभै पुतर फौ आणू दा सा।
बधाणी बोला ती, ओ माता! मेंरै पुतर फौ होला,
ता हाऊं तौभै भयाली ठेलरू जातर देनूं ता।
बारह भराए रूपी पौटै शाशण देनूं।
तैबै हेरता छौ महीने बौरशा वै,
विधि सिंह रै सिद्ध सिंह हुआ ती।
तैवै हेरै बधाणी बोला ती दाता न फातरूआ,
तू आंदरै वै एज।
दाता न फातरू रोंदा कलांदा लागा।
हे माता! अबै पता नई हांऊ
काटणा होला कि फनाटणा होला।
तैवै ता विधि सिंह बोला ती,
हे माता! मेरे ता एबै सोए बधाउणौ लागै।
एबै शौयरी साजै वै सौत गज कपड़ा,
एक गज कपडा जलमखारै आगै वै,
एक बौकरू ता एक गरी रा नरेल देनूं,
होर चांदी रै तणाउऐ देनूं।
तेरे दाता न फातरू वै,
पोंज भराऐ तुंगु बोण शाशण देनूं।
तौभै बारह भराए रूपै पौटै शाशण देनूं।
फिरी हेर ता दाता न फातरू घौरा आऊ,
ता पोंज भराए अन्न भीतरै लाऊ।

हिन्दी अनुवाद

दाता न फातरू ने कहा था,
ओ बधानी! में जोत-ढांक लांघ
के आई हूं,
मैं तेरे लिए पुतर फल लाई हूं।
बधानी ने कहा, जब मेरे पुत्र फल होगा,
तो मैं तुझे बिहाली ठेलरू जमीन दूंगा,
बारह भार शासन का चांदी का पटटा (रजत-पत्र) दूंगा।
तब छः महीने वर्ष के अन्दर,
विधि सिंह के पुत्र सिद्ध सिंह हुआ था।
तब बधानी ने कहा था, दाता नाम के फातरू,
तू अन्दर को आ जा।
दाता नाम का फातरू रोने चिल्लाने लगा,
हे माता! अब पता नहीं मुझे,
काटना होगा कि मारना होगा।
तब विधि सिंह बोला था,
तेरे कारण माता! मेरे घर में शुभ बधाईयां लगी।
तो अब शायरी सक्रांति को सात गज़ कपड़ा,
और एक गज़ कपड़ा जलमखारे के पास को,
एक बकरा और एक गरी का नारियल दूंगा,
और चांदी के रस्से दूंगा।
तेरे दाता नाम के फातरू को,
पांज भार तुंग वन शासन दूंगा।
तुम्हें बारह भार रजत-पत्र पर शासन दूंगा।
फिर दाता नाम का फातरू घर आया,
और पांच भार अन्न अन्दर लाया।

फिरी हेर ता शौयरी साजै वै,
चांदी रै तणाउऐ बणाए।
ता हंस बसांभर बजीर ती,
हंस बसांभरै बोलू कि महाराज!
पड़ेई रै खशिए,
इन्हा बोला ऐ चांदी रै गाई भोनियां खाणै।
तुईना लोहै रै तणाउऐ बणालै ता जुग भांडा होणा।

फिर शायरी सक्रांति को,
चांदी के रस्से बनाये।
हंस बसांभर बज़ीर था,
हंस बसांभर बोला कि महाराज!
पड़ेई के खशिऐ,
ये चांदी के रस्से गला के खा लेंगे,
इससे लोहे के रस्से बनाएंगे तो युगों तक रहेंगे।

कुल्लुई

ता हेर ता राजै लोक कालै होआ सी।
तैवै हेर ता तीने चांदी रै तणाउऐ,
गालै ता लोहै रै तणाउऐ बणाए।
जवै शौयरी साजै वै हंस बसांभर
मूं आगै वै भयाली ढेलरू वै आऐ ती।
तवै हेर ता सौंत गज कपड़ा,
एक गज जलमखारा,
आगे वै ता एक बौकरू ता एक गरी रा नरेल,
ता लोहै रै तणाउए मूंबै नज़र देआ ती।
तां हाऊ हेर ता बुरा बुझा ती।
ता मैं बोलू, हंस बसांभरा!
जा सैऊंडै रै गौलू पूजदै-पूजदै,
तुसा वै लोहै बरताइया धीने ता बूझैईत,
देवी भटन्ती रा बचन सा।
नईं ता बुझी झूठ सा।
आपू हाऊं सौरी पौधरू वै,
सेर सलांना केरदी नौठी।
ता राजा बधाणी वी सौरी पौधरू वै,
सेर सलाना वै आऊंदा ती।
बधाणी बोलू, बुढली मामिए!
तू कौवै चौली दी सा।
मैं बोलू, हाऊ राजा बधाणी हागवै चौली दी सा।
आपू तू औखै सेर सलाना केरदा आऊदा सा,
ता घौरा हेरा ता हंस बसांभरै
आपणा राजकाज चलाउदा होआ सा।

हिन्दी अनुवाद

तो देखो राजे लोग नासमझ होते हैं,
तब उन्होंने चांदी के तणाउए,
गाले़ और लोहे के तणाउए बनाये।
जब शौयरी सक्रांति को हंस बसांभर,
मेरे पास बिहाली ढेलरू में आए थे।
तो देख सात गज़ कपड़ा,
एक गज़ ज़ालमखारा,
आगे को एक बकरा और एक गरी का नरेल,
और लोहे के तणाउए मुझे नज़र देने लगे थे।
यह देख मैं बुरा समझी थी,
और मैंनें कहा, हंस बसांभर!
सैऊंड के गलू पहुंचते-पहुंचते,
तुम को लोहे के बरत के दिए तो समझना।
देवी भटन्ती का बचन है।
नहीं तो समझना झूठ है।
स्वयं मैं सौरी पाधरू को,
खेती बाड़ी करने गई।
और राजा बधानी भी सौरी पौधरू को,
खेती बाड़ी करने आया था।
बधानी ने कहा, बूढ़ी मामी!
तुम कहां जा रही हो।
मैंनें कहा, मैं राजा बधानी के पास जा रही हूं।
स्वयं तू यहां खेती बाड़ी करने आया है।
और घर में देख हंस बसांभर ने,
अपना राज-काज चलाया हुआ है।

हंस बसांभरा वै,
सैऊंड गौलू पूजदै-पूजदै तौती बरखा,
लोहा रा शौरू भुआउआ दा सा।
जा तू तिनरै चोहू अंग चोहू कनारै शेटी।
तवै हेर ता बधाणी जा ती।
ता हंस बसांभरै रै चोहू अंग बाह,
ता चार कनारै शेटै ती।

हंस बसांभर को,
सैऊंड गलू के पास पहुंचते-पहुंचते गर्म वारिश,
लोहे के ओले से निपटना पड़ा है।
जा तू उनके चारों अंग चारों किनारे फैंकना।
तब देखना बधानी चला गया,
और हंस बसांभर के चारों अंग बाजू,
चारों किनारे फैंके थे।

कुल्लुई

उखलै कुटा ती ता बागरिए पूणा ती,
तवै हाऊं हंस बसांभरै री ठाई माटी चगाई बेठी।
तिन्हा जूगै रै लोहै हेरता,
औज वी मूं आगै बरताणै वै सी।
देऊऐ री भार्था राजै री बौही,
ता राजे रै खण्डै जैंडै,
धियाड़ी ओउड़दी राती भियांदी,
मौथै भाग गंगा द्रूबा डाल।

हिन्दी अनुवाद

उखल में कूटा था और हवा में पूना था,
तब मैं हंस बसांभर के ठिकाने की मिटटी उठा बैठी।
उस समय का लोहा देख लो तो,
आज भी मेरे पास बरताने को है।
देवते की भार्था राजे की बही,
तो राजे के खण्डे जैसे,
दिन अस्त होता रात भोर होती,
माथे भाग गंगा दूब की डाली।

काली ओड़ी बबेली

कुल्लुई

सरगा न चूड़ी मुकी।
सकेता मोंझै पड़ी मुकी,
जगह जेह बणाई मुकी।
संघासण जेह बोन्ही मुकी,
चे़ली पोली बणाई मुकी।
झुमण जेह पाई बेठी,
सीऊआं भीतरै पड़ी मुकी।
भेखली भीतरै पूजी मुकी,
बहिणी संघै कौल़ै धर्म बंधी मुकी।
पहाड़ मेह भीतरै पुजी मुकी।
सूखा जैंह तलाईटू ती,
पाणी जैंह कढ़ाई मुकी।
शाल्टी जैह गौऊ थी,
गौऊआं रै चार खुर धुआई मुकी।
गोशाला भीतरैं पूजी मुकी,
गशाली नागा संघै जुआ पासा खेली मुकी।
अपणां जैह नां दर्शाई मुकी।
ठारा नाग थी, ठारा नरायण थी,
तिन्हारी बण्डी चुण्डी कराई मुकी।
शौठ कम्हारटु शौठ लुहारटु वी,
तिन्हा हागै हाऊं पूज़णै वै थी,

काली ओड़ी बबेली

हिन्दी अनुवाद

स्वर्ग से उतर पड़ी।
सुकेत के बीच आ पड़ी।
जगह बना बैठी,
आसन बांध बैठी।
वस्त्र-भोजन बना बैठी,
घूंघट पा बैठी।
सीउआं के अन्दर पड़ गई,
भेखली के अन्दर पहुंच बैठी।
बहन के साथ धर्मचारा बांध चुकी।
पहाड़ मेह के पास पहंच चुकी।
सूखा तालाब था,
पानी निकाल बैठी।
शालटी गाय थी,
गाय के चार खुर धुला बैठी।
गोशाल के पास आ बैठी,
गोशाली नाग के साथ जुआ पास खेल बैठी।
अपना नाम दर्शा बैठी।
अठारह नाग थे, अठारह नारायण थे,
उनका बंटवारा करा बैठी।
साठ कुम्हार साठ लुहार थे,
उनके पास मैं पूजने को थी

कुल्लुई

परौहणै वै थी।
तिन्हा री मूं संघै नईं बणी,
मेरी तिन्हा संघै नई बणी।
शौठ डेहली़ री,
छौह रा नाश केरी मुकी।
अड़िया पंखुड़े जैंह पार,
द्राम ढौगै झाऊं तौरी मुकी।
छरीणा जैंह लाई मुकी,
जगह जैंह जमाई मुकी।
संघासण जैंह बोन्ही मुकी,
चा़ली पोली लाई मुकी।
झूमण जैह पाई बेठी,
बबेली भीतरै पूजी मुकी।
पिण्डा जैह पराई मुकी।
कोहू री टीर लाई मुकी।

हिन्दी अनुवाद

परोहने को थी।
उनकी मेरे साथ नहीं बनी,
मेरी उनके साथ नहीं बनी।
साठ ड्योढ़ी घरों का,
सम्पूर्ण नाश कर बैठी।
अडिए पंखुड़ी जैसे पार,
द्राम ढांक के ऊपर जा बैठी,
छरीण ला बैठी।
जगह जैसे जमा बैठी,
सिंहासन बांध बैठी।
वस्त्र-भोजन ला बैठी,
घूंघट पा बैठी।
बबेली के अन्दर पहुंच बैठी,
पिण्ड रूप धारण कर बैठी।
कहू का पेड़ लगा बैठी।

उषा देवी लपाह

कुल्लुई

शनकपुरा न देवी उषा उपनी आई।
तेखा न शुआकुमरू आई,
तेखा न बेहड़ा सराहन आई,
सराहनी ठाकरा संघै वाच वन्ही।
तेखा न पंद्रहवीश आई,
हुमकु नागा संघै वाच वान्ही।
तेखा न आगे निरमण्डा पूजी,
साठ कडरू संघै साधी नअली।
ब्रह्म स्थान टिकाई बेठी,
पूजा पुजारी आणी बेठी।
तेखा न बागा सराहन आई बेठी।
ता बशले काली संघै वाच वान्ही।
तेखा न घलयाड़ा आई बेठी,
वीठा संघै वाच वन्ही बेठी।
तेखा न डिंगचै बेठी,
काली नागा संघै वाच वन्ही बेठी।
जियाच डियाउली आपणी सौह बणाई बेठी।
तेखा न आई नड्डाधार,
अपणी सौह टिकाई बेठी।
तेखा न आई हंसपुरी,
कुंड तीर्थ मनाई बेठी
तेखा न रक्ती सर आई,
सअर डिबरी वन्ही बेठी।

उषा देवी लपाह

हिन्दी अनुवाद

शनकपुर से देवी उपनी स्थान आई।
वहां से शुआकुमरू आई,
वहां से बेड़ा सराहन आई।
सराहनी ठाकुर के साथ बचन बांधा।
वहां से पंद्रहबीश आई,
हुमकू नाग के साथ बचन बांधा।
वहां से आगे निरमण्ड पहुंचीं,
साठ करडू के साथ साधना की।
ब्रह्म स्थान टिका बैठी,
पूजा के लिए पुजारी ला बैठी।
वहां से बागा सराहन आ बैठी,
और बश्ले में काली के साथ बचन बान्धा।
वहां से घलयाड़ा आ बैठी,
वीठ के साथ बचन बांध बैठी।
वहां से डिंगचे आ बैठी,
काली नाग के साथ बचन बांध बैठी।
जात्र दिवाली अपना प्रांगण बना बैठी।
वहां से आई नड्डाधार,
अपना स्थान टिका बैठी।
वहां से आई हंसपुरी,
कुण्ड तीर्थ बना बैठी।
वहां से रक्तीसर आई,
सरोवर डिबरी बांध बैठी।

रक्तबिन्दु राक्षसा वै हराई बेठी।
तेखा न आई कुटला निगाड़ी,
ढाई पात्थर गोले वन्ही बेठी।
उदू बरडई संघै हौड़ बाउत हुई,
ता तेईऐ बोलू, मेरा देश,
ता मैं बोलू, मेरा देश।
उदू बरडई बोलू, पोगल छानणे,
ता मैं बोलू तेड़ा कर।

रक्तबीज राक्षस को हरा बैठी।
वहां से आई कुटला निगाड़ी,
अढाई पत्थर गोले से बांध बैठी।
उदूबरडई के साथ बहस मुबाहसा हुआ,
और उसने कहा, मेरा देश,
और मैं ने कहा, मेरा देश।
उदू बरडई बोला, पोगल डालने,
और मैंनें कहा, वैसा कर।

कुल्लुई

दोतका पोगल उदू बरडई रा आउआ,
ता मेरा पोगल दोपहरा आउआ।
उदू बरडई ऐ वाही ता आपणे जानु छेदी,
ता मैं वाही ता ढाई गुलुआते पात्थर छेदी बेठी।
तदुआले ध्रुव ऋषि संघै वाच वान्ही बेठी।
तेखा न शाक्टी ब्रह्म नाग संघै वाच वान्ही बेठी।
आपणा गड्डुआ तेलुआ मनाई बेठी।
मझाण, मईल, बनाउगी, बागीकशाड़ी,
शैंशर तलयाहरा आई बेठी।
तलियाहरू ठाकरै कोठी बणान्दे,
12 वर्ष 12 महीने होई,
ता कोठी नी बणी।
ता मैं बलू कोठी मेरी रौही।
राती भीतरे ज्यालुर रूपे,
दोती वै सूत्र गाण्ठी बेठी।
दीनू तल्याहरू ठाकर दोती भालदा लागा,
ता सूत्र वान्ही बेठी
तलियाहरू ठाकर कोठी बणउंदा लागा,
कोठी बणी बेठी।
तलियाहरू ठाकरै बोलू,
कोठी सदा वै तेरी रौही।
राक्षस मारी बेठी।
राक्षसा री जट काढ़ी बेठी।
नेम करेम तिलयाहरू ठाकर मनी बेठी।
मनु ऋषि संघै वाच बान्ही बेठी।

हिन्दी अनुवाद

सुबह का पोगल उदू बरडई का आया,
और मेरा पोगल दोपहर में आया।
उदू बरडई ने मारी तो अपना घुटना छेदा,
और मैंनें मारी तो अढाई गलु आगे पत्थर छेद बैठी।
वहां से आकर ध्रुव ऋषि के साथ बचन बांध बैठी।
वहां से शाक्टी ब्रह्म नाग के साथ बचन बांध बैठी।
अपना गडुआ तालाब बना बैठी।
मझाण, मईल, बनाउगी, बागीकशाड़ी
शैंशर तलयाहरा आ बैठी।
तलयाहरू ठाकुर को कोठी बनाते,
12 बर्ष 12 मास हुए थे,
और कोठी नहीं बनी।
और मैनें कहा, कोठी मेरी रही,
रात-रात में ही ज्वाला रूप में,
सुबह को सूत्र बांध बैठी
दीनू तल्याहरू ठाकर सुबह देखने लगा,
और सूत्र बांध बैठी।
तलयाहरा ठाकुर कोठी बनाने लगा
कोठी बन बैठी।
तलयाहरू ठाकर ने कहा,
कोठी हमेशा को तेरी रही।
राक्षस मार बैठी,
राक्षस के बाल निकाल बैठी।
नेम करेम तलयाहरू ठाकर मान बैठी।
मनु ऋषि के साथ बचन बांध बैठी।

तेखा न शांघड़ आई, शंखचुला संधै वाच वान्ही बैठी।
तेखा न सुचैहण, बनोगी, धाउगी, कनौण,
रैला, गोही, भलाण, सुलतानपुर, पूजी बेठी।
राजगद्दी टिकाई बेठी।
कुल्लू कमाड़सा मनाई बेठी,
दिल्ली तख्ता टिकाई बेठी।
मण्डी वाछी वरियाली हत्या लागी ती,

वहां से शांघड़ आई, शंखचूल के साथ बचन बांध बैठी।
वहां से सुचैहण, बनोगी, धाउगी, कनौण,
रैला, गोही, भलाण, सुल्तानपुर पहुंच बैठी,
राजगद्दी स्थापित बैठी।
कुल्लू कमाड़सा मना बैठी,
दिल्ली तख्त टिका बैठी।
मण्डी में बछडी व बिल्ली की हत्या लगी थी,

कुल्लुई

ता निउली धारा छमाहूं संघे,
वाच वान्ही बेठी।
तेखा न तील थाच,
साते भंडरिऐ तिला रा दाना खाई बेठी।
सात कला बनाई बेठी,
फतेहपुरा शंखचूला संघै वाच वान्ही बेठी।
श्रृंगा ऋषि संघै वाच वान्ही बेठी।
कलवारी न लक्ष्मीनारायणा संघै वाच बान्ही बेठी।
हारगी देउली बनाई बेठी,
जेठी हार लाई बेठी।
देऊआ रा मौढ़ बणाई बेठी।
श्रीकोट शिरड़ी नागा संघै वाच वान्ही बेठी।
शुमगे कालका संघे वचन वान्ही बेठी।
गडगडासर शुगम-शुगम राक्षस हराई बेठी।
तेखा न डेला आई,
देऊ स्थापण केरी बेठी।
तेखा न सरेर आई,
कालका संघै बचन वान्ही बेठी।
ता सर डिबरी बणाई बेठी,
ता तेखा न धारा कोट लपाह आई।
कोठी दरमोठी बणाई बेठी।
घमीई धमेउली टकाई बेठी।

हिन्दी अनुवाद

और नीली धारा छमाहूं के साथ,
बचन बांध बैठी।
वहां से तील थाच,
सात बहनें तिल का दाना खा बैठी।
सात कलायें बना बैठी,
फतेहपुर में शंखचूल के साथ बचन बांध बैठी।
श्रृंगा ऋषि के साथ बचन बांध बैठी।
कलवारी में लक्ष्मीनारायण संग बचन बांध बैठी।
हारगी देउली बना बैठी,
बड़ी हार लगा बैठी,
देवते का मौढ़ बना बेठी।
श्रीकोट शिरडी नाग के साथ बचन बांध बैठी।
कालका के साथ बचन बांध बैठी।
गडगडासर मारकर राक्षस भगा बैठी।
वहां से डेला पहुंची,
देवता का स्थान बना बैठी।
वहां से सरेर आई,
कालका के साथ बचन बांध बैठी,
और सरोवर तालाब बना बैठी।
और वहां से धाराकोट लपाह आई,
कोठी भण्डार बना बैठी,
गर्भगृह देवालय बना बैठी।

देवी फुंगणी तिऊन

कुल्लुई

सतीजुगा न स्वर्गा न उतरै
धरती न पनै।
धौरती बणाई पृथी सजाई।
त्रेता द्वापर निहुल देशा काटी,
कलियुगा न औखै उतरै।
धर्मा वै राज देंदै,
जोतै री धारा नापदै,
कांगड़ा एज़ी पूजी बेठै।
देवी संधै वाच वोन्ही बेठै।
जम्मू पधरा एज़ी बेठै,
जोगणी जगणाह संधै लईया,
सकेता भीतरै एज़ी बेठै,
जोत भोनिया मदान बणायै।
मण्डी पुजिया परौल सजाई,
राणी वै छाप देई बेठै,
मण्डी न माहूनाग एज़ी बेठी।
नागचला एज़ी बेठी,
शुका तलाव एज़ी बेठी,
डायण धार एज़ी बेठी,
गुमा एज़ी बेठी,
लूणै री खान खोली बेठी।
फूटाखौल एज़ी बेठी,
सौ भार अन्न कौढ़ी बेठी।

देवी फुंगणी तिऊन

हिन्दी अनुवाद

सतयुग में स्वर्ग से उतरे
धरती पर पहुंचे।
धरती बनाई पृथ्वी सजाई।
त्रेता द्वापर निहुल देश में काटी,
कलयुग में यहां उतरे,
धर्म को राज देने।
जोत की धाराएं नापते,
कांगड़ा आकर पहुंचे।
देवी के साथ बचन बांध बैठे,
जम्मू पधर आ बैठे।
जोगनी जगणाह साथ लेकर,
सुकेत के पास आ बैठे।
जोत काट कर मैदान बनाये,
मण्डी पहुंचकर परौल सजाई।
रानी को छाप लगा बैठे,
माहूनाग आ बैठी।
नागचला आ बैठी,
सूखा तालाब आ बैठी।
डायणधार आ बैठी,
गुमा आ बैठी।
नमक की खान खोल बैठी,
फुटा खौल आ बैठी,
सौ भार अन्न निकाल बैठी।

पजोड़ी एज़ी बेठी,
दियारा कांडे रा कंडियारू,
पात्थरा मोंझै एज़ी बेठी।
दूधै री दही बणाई बेठी।
जोलपरी एज़ी बेठी,
फुंगण सौह एज़ी बेठी,
भन्ते फुहाला संधै वाच बोन्ही बेठी।
गिडगण एज़ी बेठी,

पजोड़ी आ बैठी,
दियार कोंडे के कंडियारू,
पत्थर के बीच आ बैठी।
दूध की दहीं बना बैठी,
जोलपरी आ बैठी,
फुंगण सौह आ बैठी।
भन्ते पुहाल के साथ बचन बांध बैठी,
गिडगण आ बैठी,

कुल्लुई

साईत्राणा लाई बेठी।
तिऊण एज़ी बेठी,
काथी बेठर लाई बेठी।
रोलंग पूजी बेठी,
रागा पौटा एज़ी बेठी।
शालंग एजी बेठी,
नारायणा संघै धर्मचारा लाई बेठी।
बड़ी तिऊण बेठरा एठै,
दूजी पजेड़ी,
त्रिजी खशामटी नौणी,
चोथी लाहड़ी आच्छरी,
पंजुई शोजागढ़,
छौऊई कुटी कुपणी,
सतुई सरी ठाणा,
अपणा थान थापी बेठी।

हिन्दी अनुवाद

साईत्राणा लाई बैठी।
तिऊण आ बैठी,
काथी बेठर उगा बैठी।
रोलंग आ बैठी,
रागा पौटा आ बैठी,
शालंग आ बैठी।
नारायण के साथ भाईचारा लगा बैठी,
बड़ी तिऊन बेठर के नीचे,
दूसरी पजेड़ी,
तीसरी खशामटी नौणी।
चौथी लाहड़ी आछरी,
पांचवी शोजागढ़,
छठी कुटी कुपणी,
सातवीं सरी ठाणा,
अपना स्थान स्थापित कर बैठी।

ब्रह्मबिठ शाक्टी

कुल्लुई

राम चन्द्रा संघै गुरू चेले रा,
बाच वान्ही बेठा ती।
जोत पांथ ठाकुरी गड़से भीतरे,
माहुन री बूटी,
एठै उपनी बेठा ती।
पगी रै बायैं गडुआ,
आपणा काढ़ी बैठो ती।
भाई नारदा, दरवासे संघै,
वाच भरी बेठा ती।
विठ जाच दियाउली,
टकाई बेठा ती।
भलाण, गोही, शैंशर, तुंघ,
शाक्टी पूजी बेठा ती।
शाक्टी स्थान बणाई बेठा,

ब्रह्मबिठ शाक्टी

हिन्दी अनुवाद

रामचन्द्र के साथ गुरू चेले का,
बचन बांध बैठा था।
पहाड़ रास्ता ठाकुरी गड़सा अन्दर,
माहुन का पेड,
उस पर प्रकट हुआ था।
वहां से बायीं तरफ गड़वा जलस्रोत,
अपना निकाल बैठा था।
भाई नारद, दुर्वासा के साथ,
बचन भर बैठा था।
विठ मेला दिवाली,
स्थापित कर बैठा था।
भलाण, गोही, शैंशर, तुंघ,
शाक्टी पहुंच बैठा था।
शाक्टी स्थान बना बैठा,

जमलू देवता सीस

कुल्लुई

नीहरा न आसै रौहा ती,
तौखै साधन साधुई निसी।
तौखै ओच्छा बाहटांग निकला ती,
शालू गाई रै फैंज़ै न ढौकिया टपी बेठै।
पहाड़ा वै एन्दै हाटा पूजे,
हाटा र ठाकर मनदा नईं ती।
तेई संघै जुआ पासा खेली बेठै।
हाटै रै ठाकरै लोहे रै तीर चलाऐ ती,
आसा आगै भड़िंगणू पुजा ती।
आसै ते भडिंगणू चलाआ ती,
ठाकरा आगै लोहै रै तीर पुजा ती।
हाटा री बराली़ बोशै जाआ ती,
बोशे री बराली़ हाटा पुजा ती,
हाटा री परोऊल खुलुई ता,
वोशे री परोऊल बन्द होआ ती।
बोशे री परोऊल खुलुई ता,
हाटा री परोऊल बन्द होआ ती।
हाटा न दैन्ता रा राज़ ती,
तेई वै आपै मारी बेठा।
वोशे रा ठाकर वी मनदा नईं ती,
तेई वै आसै मनाई बेठै।
फिरी द्राम ढौगा न पौट आणू,
तेई वै नगरा भीतरै बशाई बेठै।

जमलू देवता सीस

हिन्दी अनुवाद

मैदानों में हम रहते थे,
वहां साधना करना सम्भव नहीं रहा।
वहां छोटा दरिया निकला था,
शालू गाय की दुम पकड़ कर पार हुए,
पहाड़ों को आते हाट पहुंचे।
हाट का ठाकुर मानता नहीं था,
उसके साथ जुआ पासा खेल बैठे।
हाट के ठाकुर ने लोहे के तीर चलाए थे,
हमारे पास भेड़ का गोवर मिंगनें बनकर पहुंचते थे।
हम उन मिंगनों को चलाते थे,
ठाकुर के पास लोहे के तीर पहुंचते थे।
हाट की बिल्ली बोशे जाती थी,
बोशे की बिल्ली हाट पहुंचती थी।
हाट की परोलमुख्य प्रवेश द्वार खुलती थी तो,
बोशे री परोल बन्द होती थी।
बोशे री परोल खुलती थी तो,
हाट की परोल बन्द होती थी।
हाट में दैत्य का राज था,
उसको स्वयं मार बैठा।
बोशे का ठाकुर भी मानता नहीं था,
उसको हम मना बैठे।
फिर द्राम ढांक से शिलापट लाया,
उसको नगर के पास बिठा बैठे।

तैवै हामटा पूजै चन्द्रखणी आए,
पौण बागरिऐ फेर फराऐ,
बहण भागासिद्ध भाई जगथम आऊ।
तेसा न आसा रा बंड बंडारा: कराऊ,
बहण भागासिद्धै सौत शाण भोनिया लोसर कौढू,
मैं भी सौत शाण भोनिया बेठर कोढू,
जगथम भाई वै प्याशा देश कनाउर मेलू,
मुम्हें निहारा बादल एठला मलाणा मेलू।

तब हामटा पहुंचे चन्द्रखणी आए,
पवन वेग ने चारों तरफ फिराए।
बहन भागासिद्ध भाई जगथम आया,
उसके द्वारा हमारा बंटवारा करवाया।
बहन भागासिद्ध ने सात शाण (जमी बर्फ फाड़कर) लोसर फूल निकाला
मैंनें भी सात शाण फोड़कर बेठर निकाला।
जगथम भाई को उजला दैश कनाउर मिला,
मुझे अन्धेरा बादल के नीचे का मलाणा मिला।

कुल्लुई

हाऊं मलाणा एज़ी बेठा,
मलाणा रा राज़ा दैंत राख्स ती,
तेई री आपणी मर्ज़ी ती।
तेई दैइंतै आपणी खेल खेलणी लाई,
तेई वै वी हाऊं हराई बेठा।
मलाणा न हाऊं धुपण पुजू,
तौखै न सीस पधर हेरू।
सीसा रा मालक सूरजपाल ती,
तेई संघै वाच केरी बेठा।
औखै शौठ चनाला़ रा बधा ती,
शौठ चनाला़ वै गलाई बेठा,
सीसा न दैंत वंशा रा राख्स ती,
तीना वै शौंख घुशिया,
पाणी न शेटिया मारी बेठा।
एक खण्डा बज़ाआ ती,
सौत जोजन पृथी थलाआ ती।
तेहड़ा जो़र तप ती, झूठा ढुणू सच बरताआ ती।
सच्चा ढुणू पात्थर भोना ती।
द्वापरा न कृष्ण अवतार होणा ती,
माता देवकी रा कष्ट भगाऊ ती।
सतजुगा न अष्टमी रा व्रत कराऊ।
कनीतिऐ राज़ डूबणा, नीतिऐ माण्हूं बधणा,
फूड़ी बेशदी फूड़ी उठदी,
पौतर डूबणा तौरनी शिल्ला।

हिन्दी अनुवाद

मैं मलाणा आकर बैठा,
मलाणा का राजा दैत्य राक्षस था।
उसकी अपनी मनमानी थी,
उस दैत्य ने अपना खेल खेलना आरम्भ किया।
उसको भी मैं हरा बैठा।
मलाणा से मैं धुपण पहुंचा,
वहां से सीस पधर देखा।
सीस का मालिक सूरजपाल था,
उसके साथ बातचीत कर बैठा।
यहां साठ चिनालों का बोलबाला था,
साठ चिनालों को नष्ट कर बैठा।
सीस में दैत्य वंश का राक्षस था,
उनको शंख घिस कर,
पानी में फैंककर मार बैठा।
एक खड्ग बजाता था,
सात योजन पृथ्वी हिलाता था।
ऐसा ज़ोर तप था, झूठा बोला सच होता था।
सच बोला पत्थर फटता था,
द्वापर में कृष्ण अवतार होना था,
माता देवकी का कष्ट दूर किया था।
सतयुग में अष्टमी का व्रत करवाया।
गलत नीति से राज डूबेगा, अच्छी नीति से मानुष बढ़ेंगे।
पीढ़ी उठेगी पीढ़ी बैठेगी,
पता डूबेगा तैरेगा पत्थर।

ऋषि वशिष्ट

कुल्लुई

महाभटन्त महाचीन होईया,
औखै एज़ी बेठा दा सा।
ठासी हज़ार बौर्शा तपस्या केरी बेठा,
आपणा बाड़नबाड़ बोन्ही बेठा।

ऋषि वशिष्ट

हिन्दी अनुवाद

महाभटन्त तिब्बत होकर,
यहां आकर बैठा हूं।
अट्ठासी हज़ार साल तपस्या कर बैठा
अपना सुरक्षा तंत्र बांध बैठा।

मार्कण्डेय ऋषि थरास

कुल्लुई

ओंकार देऊआ सत्य बोले,
सत्य जपे देऊआ।
कोई नि देऊआ इन्द्र दुहू,
कोई नि पाताल हूं हूं।
कोई नि सतीधारा पीछै,
होला देऊआ ध्यान धारणा।
कोई नि देऊआ थाले संघे,
होले खड़े होणा भाई बना।
बुंजा वीर, सोलह सौ सुरगणी,
कन्या दा राजा भूमि दा देऊआ।
पात्थरै वाक न निकता देऊआ,
औज़ कलिंकाल देऊआ,
वरतमान हुन्दा लागा।
माओ धीया सौकै हुंदे लागै देऊआ,
बाबा पुतरा रोबे होन्दे लागै।
कोई नि देऊआ इन्द्र दुहू,
पाताल शुहूं अपणा सत्य धर्म,
भूली नि जाणा दआ।
देहुरै थालै भीतरै भाई भरारू,
रै मेले़ होंन्दै देऊआ।
छांजणू देऊआ सराहणा भीतरै महामाई,
घाटै भीतरै भरैरू बोले माता हिडिम्बा।
कलिजुगा सत बचन बोले देऊआ,

मार्कण्डेय ऋषि थरास

हिन्दी अनुवाद

ओंकार देवता सच बोले,
सच जपना देवता।
कोई नहीं देवता इन्द्र जैसा,
कोई नहीं पाताल हूं हूं।
कोई नहीं सतीधार के पीछे,
अभी दे ध्यान धारण करना।
कोई नहीं देवता स्थान के साथ,
धीरे से खड़े होना भाई बहन।
बावन वीर, सोलह सौ सुरगनी जोगनी।
कन्या का राजा भूमि का देवता।
पत्थर से आवाज़ नहीं निकली देवता,
कलिकाल का देवता,
व्यवहार होने लगा।
मां बेटी सौतन होने लगी देवता,
पिता पुत्र में विवाद होने लगे।
कोई नहीं देवता इन्द्र जैसा,
पताल सही अपना सत्य धर्म,
भूल नहीं जाना देवता।
मंदिर स्थान अन्दर बाहर भाई बहन,
के मेले होने लगे देवता।
छांजणू देवता, सराहन अन्दर महामाई,
घाट के अन्दर भाई बहन बोले माता हिडिम्बा।
कलियुग में सत्य बचन बोलना देवता।

एक बचन पूरा हूंदा देऊआ।
जय भार्था दी पहला पहर देऊआ,
समूद्रा टापू लेदी बैठो।
जय-जय करदा लागा,
बारी बरसा साले मिहरू,
हाथे आंदा देऊआ।
पैरे ध्रुवराज घी मुखे आस राजदा,
जपा तपा रा धणी देऊआ।

एक बचन पूरा होता है देवता,
जय भार्था का पहला पहर देवता,
समुंद्र में टापू अन्दर बैठकर,
जय-जय करने लगा।
बारह बरस साल महीने,
हाथ आया देवता।
पैर में ध्रुवराज घी मुख में करता रहा
जपतप का धनवान देवता

कुल्लुई

दूजा पैहर देऊआ तेरी,
खछैउंतरी भीतरै निकता।
चार वेद, चौदह शास्त्र,
निरखण्ड तेरी झोली।
की नई निरखण्डा भीतरै निकलदा।
अधरौणे त्रिकोण ससादी न,
बंलो रै थाना लादी बैठो।
होरे धृष्ठा धीनी,
दिल्ली भीतरै निखता।
दिल्ली दलेशर न डाही,
धुआं रौला छाड़ी बैठा।
होरे धृष्ठा धीनी,
चम्बे भीतरे निखता।
बेड़ी कुल तरदी बणी,
होरे धृष्ठा धीनी,
घण्टार पर्वत भीतरे निखता।
पापा रै चूलै लाई बैठा,
धर्मा रा चूला घटदा लागा,
पापा रा चूला बदधा लागा।
इन्दी खोटी तूल लागी,
खोटी तारू लागी।
सई-मई संसार हुआ,
होरे धृष्ठा धीनी,
मकड़सा नगरा भीतरै,
निकतै ठारह करडू।

हिन्दी अनुवाद

दूसरे पहर देवता तेरी,
कछैउंतरी अन्दर निकला।
चार वेद, चौदह शास्त्र,
निरखण्ड तेरी झोली,
क्यों नहीं निरखण्ड में निकलता।
आधा त्रिकोण ससादी
बलो स्थान ले बैठा।
आगे नज़र रखी,
दिल्ली के अन्दर निकला,
दिल्ली दलेशर न रखा,
धुआं शोर छोड़ बैठा।
आगे नज़र रखी,
चम्बे के अन्दर निकला।
महल कुल की बनी।
आगे नज़र रखी,
घण्टार पर्वत पर निकला।
पाप की चोटी ला बैठा,
धर्म की चोटी घटने लगी,
पाप की चोटी बढ़ने लगी।
ऐसी खोटी तराजू लगी,
खोटी तैरने लगी।
जलमग्न संसार हुआ।
हाथ आया देवता।
मकड़सा नगर अन्दर,
निकले अठारह करडू।

माहूं रै घणै जगती लाई बैठा।
मकड़से टीकै वै देई बैठा,
उजला खण्डा भुला बैठा।
होरे धृष्ठा धीनी,
बनोगी भीतरै निकतौ,

मधुमक्खी के झुण्ड द्वारा जगती ला बैठा।
मकड़सा टीके को दे बैठा,
प्रकाश खण्ड भुला बैठा।
आगे नज़र रखी,
बनोगी के अन्दर निकला।

कुल्लुई

फागू छैंरा भीतरै निखता।
मंगली राणी थी मंगलेश्वर दे थी,
जेथान लादी बैठो।
होरे धृष्ठा धीनी,
जियै भीतरै निखतौ।
जिथाना बाद,
होरे धृष्ठा धीनी,
पार हरजश धीना,
समसी भीतरै निखतौ।
राणे ठाकुर ती,
शाठ के करलो वाचे-कवाचे
पड़ी गाली निरपाटी बैठो।
हुरले मुखे एज़ी बैठो,
मकराहड़ भीतरै निखतो।
मकरे चरण दिशो थी मकर,
मकराहड़ नाओं डाही बैठो।
बहुते ध्याड़े की काम हुआ,
केस रे झोटे गाय मरदी लगी।
घीआ दूधा रा लिंग लागा,
हाथ ला छोड़ना,
हाथ लागा जलदा।
काठ ला छोड़ना,
लोहे आग लगा लगदा।
आपणा ज़ोर लाई बैठो,
दूध घी बरतांदा लागा।
सुखा रा खौलड़ा,
बरसान्दा लागा।

हिन्दी अनुवाद

फागू छैंर के अन्दर निकला,
मंगली रानी थी मंगलेश्वर देवता था,
जहां उनसे मिल बैठा।
आगे नज़र रखी,
जिया के अन्दर निकला।
उसके बाद,
आगे नज़र रखी,
पार नदी लांघी,
शमशी के अन्दर निकला।
राणे ठाकुर थे,
साठ के साथ बहस मुवाहसा,
गाली से निपटा बैठा।
हुरला स्थान आ बैठा।
मकराहड़ के अन्दर निकला,
नीचे की दिशा में था मकर,
मकराहड़ नाम रख बैठा।
बहुत दिन बाद क्या काम हुआ,
लोगों के भैंस झोटे गाय मरने लगी,
घी दूध कालिंग लगा,।
हाथ लगा छोड़ना,
हाथ लगा जलने।
लकड़ी लगा छोड़ने,
लोहे में आग लगी लगने।
अपना ज़ोर लगा बैठा,
दूध घी बरसने लगा।
सुख की झोली,
बरसाने लगा।

मारकण्डेय ऋषि बला़

कुल्लुई

निहार घोर पृथ्वी थी,
जेहड़ी दिन तेहड़ी रात थी।
समुद्रा रा तला का कमले रै,
फूला मोंझै निखता।
भरमौउरा रे देश का लाहुला वती त्रिलोकनाथा,
भीतरै अमरावती जगाई बैठो।
तौंधा का मकराहड़ा वौती बौलें आ,
बौला़ पूजी निंहचा लागा।
बौलें जांऊ की निहुंश जांऊ।
बोले फेरे फेरो धिनो,
विहुंशा फेरे पढेरे दिनों,
चतरखण्डै कौरी चतरखण्ड में त्राएं रेखा दीनों।
शुकाभर फूटी, चार कला फूटी,
सुजाड़ा उझै जपा-तपा बैठा।
बौली़ बराहड़ी आई,
छौली भौंवी आणू पिठी किलड़ू,
हाथे कुदाल पाये कौरी नौठी।
लटीपरी भीतरै निखतौ,
कौड़े बोल कौड़ी बूटी रमाई बैठो।
तौदको योह जेठो बौढ़ मेरे,
बाला़ सुन्दरी सजवाड़ नौठी।

मारकण्डेय ऋषि बल़ा

हिन्दी अनुवाद

अन्धकार में डूबी पृथ्वी थी,
जैसा दिन वैसी रात थी।
समुद्र के तल से कमल के
फूल के बीच निकला।
भरमौर के देश में लाहुल होकर त्रिलोकनाथ
के अन्दर अमरावती जगा बैठा।
वहां से मकराहड़ होकर बल़ा आया।
बला पहुंचकर निश्चय किया,
बला जाऊं की और जगह जांऊ।
बल़ा के चक्कर लगा लिए,
और जगह कैसे दिन,
चार खण्ड करके चार खण्ड में तीन रेखाएं दी।
उजाला हुआ जिसमें चार कलाएं निकली,
सजवाड़ में जपतप में बैठा।
बल़ा में बराहड़ी आई,
मक्की का भर कर लाई पीठ में किलटा,
हाथ में कुदाल डालकर गई।
लटीपरी में निकली,
कड़वे बोल कड़वी बूटी लगा बैठा।
तब से यह बड़ा घर मेरा,
बाला सुंदरी सजवाड़ गई।

नारद मुनि नीणू

कुल्लुई

तेरी घोण्डी पराणी म्हारे रिखिया,
तेरी घोण्डी पराणी।
आगै निकता नोउआं नुहारी रा मोहरा,
पीछै न निकता जायरू पाणी।
देऊ छिटा रा बोलणा घौघरा,
दाऊणी लागली लोई।
फेरा देई तू नोउआं नुहारी न,
बोला रा ज़ागदा होई।
म्हारै रिखिया बोलणा तेरा,
हिंगलै रोंगुआ गुच्छा।
शौऊआ रा होला मोहरा,
शौठै री लागली मुच्छा।
म्हारै रिखिया बोलणा तेरा,
हिंगलै रोंगुआ ढाटू।
गुरू होला धारा रा तेरा,
पज़ियारा नीणू रा भाटू।
म्हारै रिखिया बोलणा,
तेरी पगड़ी ढेरी फेरी।
फेरा देई तू नोउआं नुहारी न,
जाच खेलणी पूईण सेरी।

नारद मुनि नीणू

हिन्दी अनुवाद

तेरी घण्टी पुरानी हमारे ऋषि,
तेरी घण्टी पुरानी।
आगे निकला नौ खण्ड का मुखौटा,
पीछे निकला जल स्रोत।
देवता छींट का तेरा घाघरा,
दायें लगेगी लोई।
फेरा देना तुम नौ खण्ड में,
बोल का जागता रही।
हमारे ऋषि बोलना तेरा,
हिंगल से रंगा गुच्छा।
सौ का होगा मुखौटा,
साठ की लगेगी मूंछ।
हमारे ऋषि बोलना,
हिंगल से रंगा ढाठू।
गूर होगा धारा (गांव) का तेरा,
पुजारी नीणू गांव का भाठू।
हमारे ऋषि बोलना तेरी,
तेरी पगड़ी ढेरी फेरी।
फेरा देना तुम नौ रूप में,
जात्र लगानी पूईण (गांव) के खेत में।

पुण्डरीक ऋषि बनोगी

कुल्लुई

धर्वतो पर्वतो धुंधोकार,
शंख दशंखे निहारोकार।
तत प्रथमें घोर निहार पृथ्वी,
वाधी पार देवी।
निहारी ओथी नंगुंड पुनः श्री कंचनपुः
मेघनाल वाधे नीराहार वाधे,
पाथरू जे वांधदे लागे।
कपड़े रे ओड़े नइरे बागे,
धतीर कामा जेठा देवता,
ईश्वर थी शरीर झयडू जाये।
बरसेदे सूर भर डुबू,
दाहिने अंगे ब्रम्हा पुने,
बायें अंगे विष्णु पुने,
विष्णु रे भंडारे विशंतर,
पुनः ब्राह्म हुए बैठा।
दाहिना अंग छेदी बैठा,
चुलू रक्त शोटू,
सात सूरज नौ ग्रह,
तारा मण्डले उसे,
चुलू रक्त पाताल खण्डे शोटू।
रक्त मण्डल पाताल खण्डे बांधा।
तदखा जा ब्राह्म रे,
लोहू का शशिठा कारी बेठा।

पुण्डरीक ऋषि बनोगी

हिन्दी अनुवाद

धर्वत पर्वत धुंध में,
चारों दिशाओं में अंधकार।
तब सबसे पहले घनघोर अनधकार में धरती।
वाधी पार देवी,
निहारी ओथी नंगुंड पुनः श्री कंचनपु,
मेघों के समूह बढ़े निराहार जल का क्षेत्र बढ़ा।
पत्थर को बांधने लगे,
कपड़ों की सीमा नदी के बाग में।
धरती के काम में बड़ा देवता,
ईश्वर का शरीर झड़ता जाए।
बरसते हुए सम्पूर्ण डूबा।
दायें अंग में बाह्म उपजे,
बायें भाग में विष्णु जन्मे,
विष्णु के भंडार अनन्त,
उत्पन्न होकर ब्राह्म नीचे बैठे,
दायें भाग को छेद बैठा।
चुल्लू भर रक्त आकाश में फैंका,
सात सूरज नव ग्रह,
तारा मण्डल निकले।
थोड़ा रक्त पाताल लोक फैंका,
रक्त मण्डल पाताल खण्ड में बान्धा।
उसके बाद जाकर ब्राह्म के,
रक्त से शरीर की मालिश की।

माथा भाले आशापुरी,
नेत्र भले सूरज चन्द्रा पुने,
काना मले पवन देव पुने,
मुख मले अग्नि देव पुने,
जानु मले जनासर पुने,
पीली मले पड़ासर पुने,
पैर चचड़े नौकर नाग पुने,
सकल ध्याने देवते री तार धार,

कुल्लुई

ढाई घड़ी सरगै,
ढाई घड़ी मृत्यु लोके।
पराये मुखे बोलणा,
पराये पैरे चलणा।

माथे के मलने से आशापुरी,
नेत्र मलने से सूरज चन्द्र निकले,
कान मलने से पवन देव उत्पन्न हुए,
मुंह के मलने से अग्निदेव निकले,
जानु के मलने से जनासर देवता निकले,
पीली मलने से पड़ासर ऋषि निकले,
पैर के मलने से नौकर नाग निकले,
सब न ध्यान की देवते की तारधार,

हिन्दी अनुवाद

अढाई घड़ी आकाश में,
अढाई घड़ी मृत्यु लोक में।
दूसरे के मुंह से बोलना,
दूसरे के पैरे से चलना।

मनु ऋषि धारा देहुरा

कुल्लुई

दिल्ली आगरे निसरी बेठा ती,
राजहाक राजपाठ टकै बेठा ती।
उझै नज़रा दिंदा लागा ती,
उतरखण्डा भीतरै निसरी बेठा ती।
जगह-जगह राजमण्डली टकै बेठा ती,
उझै नज़रा दिंदा लागा ती,
कुल्लू मनाली भीतरै निसरी बेठा ती।
देवी हिड़मा संधै बांध बंधी बेठा ती,
सिरा ऊपरै अपणा मोहरा टिका बेठा ती।
हूल ठाकर व्याधी न पौऊं ती।
तेईऐ हाऊं पुकारू ती,
तेईरी तैइएं माहूं रे रूपा न,
हाऊं प्रकट होई बेठा ती।
हूल ठाकरा वै बन्धना न,
खोली बेठा ती।
तेई संधै धारा देहुरा,
एज़ी बेठा ती।
आपणी पूजा कराई बेठा ती।
स्थान स्थापण केरी बेठा ती।

मनु ऋषि धारा देहुरा

हिंदी अनुवाद

दिल्ली आगरा में निकल बैठा था,
राज हक से शासन चला बैठा था।
ऊपर नज़र देने लगा था,
उतराखण्ड में निकल बैठा था,
जगह-जगह राजमण्डली टिका बैठा था।
ऊपर नज़र देने लगा था,
कुल्लू मनाली में निकल बैठा था।
देवी हिड़मा के साथ बान्ध बांध बैठा था,
सिर के ऊपर अपना मुखौटा टिका बैठा था।
हूल ठाकर संकट में पड़ा था।
उसने मुझे पुकारा था,
उसके लिए मधुमक्खी के रूप में,
मैं प्रकट हो बैठा था।
हूल ठाकर को बेड़ियों से,
खोल बैठा था।
उसके साथ धारा देहुरा
आ बैठा था।
अपनी पूजा करा बैठा था।
स्थान स्थापित कर बैठा था।

बिजली महादेव मथाण

कुल्लुई

सैभी न पहिलै मूं माण्हूं बणाणा ती।
मैं आला माटा केरू ती,
सौ तवै माटा मौल बणू ती।
मैं सोचू माण्हूं नि बणू,
माण्हूं बणादै लकड़ पात्थर बणू।
मैं सोचू माण्हूं नी बणू,
फिरी तवै आला माटा केरू ती।
तवै किछ़ हिलणू-डुलणू आला़ बणू ती।
फिरी तेईऐ केरू चूं ,
मैं बोलू निहाशी फुकणा,
जा़ंगली तेरा धूं।
तैं भलेया चीं नी केरू होंदा,
तू फुकणा नहीं, पौथणा ती।
तवै न औरै फुकणा लाऊ।
माण्हूं बणाया,
हाऊं तवै नग्गर आऊ।
नग्गरा न कटियाहली आऊ,
तौखै न तवै हाथी रा गौलू पुजू।
तवै महामाई आई,
मैं तवै बौता शेटी,
तौखै न मथाण आऊ,
हाऊं तवै आगै आऊ,
तौखै तवै जलन्धरी दैन्त

बिजली महादेव मथाण

हिन्दी अनुवाद

सबसे पहले मैंनें मनुष्य बनाना था।
मैंनें नरम मिट्टी की थी,
वह तब मिट्टी गोबर बनी थी।
मैंनें सोचा आदमी नहीं बना,
मनुष्य बनाते लकड़ी, पत्थर बन गया।
मैंनें सोचा आदमी नहीं बना,
फिर तब नरम मिट्टी की थी।
तब कुछ हिलने-डुलने वाला बना था।
फिर तब उसने किया चूं,
मैंनें कहा निहाशी (खेत का उपर वाला हिस्सा) जलाना,
जांगली (खेत का नीचे वाला)
हिस्सा तेरा धुआं।
तूने भलेमानुष चूं नहीं किया होता,
तो तुझे जलाना नहीं दबाना था।
उसके बाद जलाना आरम्भ किया।
मानुष बनाकर,
मैं तब नग्गर (गांव) आया।
नग्गर से कटियाहली आया,
वहां से तब हाथी का गलू पहुंचा,
तब महामाई आई,
मैंनें तब रास्ते में पीछे छोड़ दिया।
मैं तब आगे आया,
वहां तब जालन्धर असुर

कलौंऊत आऊ।
तेईरा मौथा मथाण,
जीभ जिया,
होर लिंघटा मणिमहेशा न ती।
कलौउंत ऊटपटांग केरदा लागा,
कलौंऊतै रै मौथै तवै गुरज़ मारू।
आपणै मौथे पादै बीज मारी,
धौरती री दशा सुधारी।

कलौंऊत आया।
उसका सिर मथान में,
जिव्हा जिया,
और पूंछ मणिमहेश में थी।
कलौंत उटपटांग करने लगा
कलौंऊत के माथे पर लोहे की छड़ मारी।
अपने माथे पर बिजली गिराई,
पृथ्वी की दशा सुधारी।

नारसिंह सुमेओ

कुल्लुई

फूला गढ़ा माटी फूटी,
माटी फूटी सतपिंडी फूटी।
सतपिंडी गर्मी छाड़ी।
पांज ठहरे कनाउरा दी चाले,
पांजे भाई वासे लेओ तेथा।
दूई भाई चालदे हुए,
से पूजे बौंडे बीला।
बोंडे नागे बोलो,
इदी नई जगा।
तीदा का पूजो काओ बीला,
काओं बोला इदी नईं जगा।
तीदा का पूजो सरपारे,
तीदी बोला जौड़े इदी नईं जगा।
तीदा का पूजो धारा,
धारा निकड़ो झाकड़ू नाग,
तेई बोलो इदी नई जगा।
तीदा का चोलदो हुऔ,
पूजो लाटी धारा।
तोदी एक भाई सूतो एक वेशो।
तेऊ सूते ले आओ राख्स खांदौ,
तेई भाई पाओ राख्से जोता दी पात्थर।
आपू तोखो झौमको हुओ,
तीदा का पूजो नगेला भीतरी।

नारसिंह सुमेओ

हिन्दी अनुवाद

फूल गढ़ में मिटटी फूटी,
सात शिलाओं ने गर्मी छोड़ी।
सात पिंडी ने गर्मी छोड़ी,
पांच स्थान किन्नौर को चले,
पांच भाईयों ने स्थान लिया वहां।
दो भाई चलते बने,
वे पहुंचे बौंडे वीला स्थान।
बोंडे नाग ने कहा,
यहां नहीं जगह।
वहां से पहुंचा काओ बिला,
काओ ने कहा यहां नहीं जगह।
यहां से पहुंचे सरपारा,
वहां कहा जौड़े ने यहां नहीं जगह।
वहां से पहुंचे धारा,
धारा में निकला झाकडू नाग,
उसने कहा यहां नहीं जगह।
वहां से चलता बना,
पहुंचा लाटी धारा,
वहां एक भाई सोया एक बैठा।
उस सोये हुए को आया राक्षस खाने,
उस भाई ने मारा राक्षस को जोत का पत्थर,
अपने आप वहां झमाका हुआ।
वहां से पहुंचे नगेला के पास,

एकी बोडेए तीदी लेई जगा।
छोटो चालदो हुओ,
चालदो-चालदो पूजो जाओं,
देवी बोलो इदी नईं जगा।
तीदी का पूजो स्नौहण,
जागा नेथी आगो टोप।
तीदी का पूजो सरेउरसरा,
बूढ़ी नागणी बोलो,

एक बड़े ने वहां जगह ली।
छोटा चलता बना,
चलते-चलते पहुंचा जाओं,
देवी ने कहा यहां नहीं जगह।
वहां से पहुंचा सराहन,
जगह नहीं आगे चल।
वहां से पहुंचा सरेउलसर,
बूढ़ी नागिन ने कहा,

कुल्लुई

इदी ठहरो नईं।
तीदा का चालो पूजो कूई कंडा,
कूई नागे बोलो ठहरो नईं,
तीदी का पूजो निरमण्डा,
माईए बोलो जगा नईं।
चालदो हुओ पूजो डमैहड़ी,
नगेलो बोलो जगा नईं।
तीदी का पूजो ठहड़ा।
सूफो सूमो ग्राओं,
सूमें ग्राओं दी मैड़ो,
तेऊके चाकू ओ चकेलड़,
तादी कियो वास।
सूमे भीतरो तो राणो,
वीह तो वाई थाट,
बाई थाटे आच्छा लागो।
रुपये-पैड़ी, सूनेए-मूंगर,
आगू राणो ताओ पाछ,
देऊ नाओ बायें थाटे।
राणे ए गांदी को,
ते रोशा दी राणले,
लोहे रे शौरू बरसाये,
राणे गाड़ी बैठो।
राणे ती सात राणी,
सै छौ नाई पाणी लै,
तीना लै पैई परेश,
सातवीं राणी गाहड़ू छूला।
हाथ पाओ दानवा मैड़ी भीतरी,
थान थापण लेई बैठो।

हिन्दी अनुवाद

यहां ठहरो मत।
वहां से चला पहुंचा कूई कंडा,
कूई नाग ने कहा ठहरो मत।
वहां से पहुंचा निरमण्ड,
माई ने कहा जगह नहीं।
चलते हुए पहुंचा डमैहड़ी,
नाग ने कहा जगह नहीं।
वहां से पहुंचा ठहड़ा।
साफ सूमों गांव,
सूमे गांव के खेत,
वहां से उठाया राक्षस,
वहां किया वास।
सूमें में था राणा,
बीस से बाईस घर,
बाईस घर अच्छे लगे,
रूपये-पैसे, सोना-गहना।
आगे राणा उसके पीछे,
देवता गया बायीं तरफ,
राणे ने गाली दी,
उस रोष से राणा के ऊपर,
लोहे के ओले बरसाये,
राणे को गाड़ बैठा।
राणे की थी सात रानियां,
वे छः गई पानी को,
उनको हुई सुबह,
सातवीं रानी गाहड़ू छूला।
हाथ डाला दानव मैड़ी के पास,
स्थान स्थापना कर बैठा।

माटी सिंह कोट

कुल्लुई

शे बाड़ियो मुआणो,
शे बांहदो लागो।
शे ठारिया छोड़ो पीछू रौहो,
शे मूर्ति मेड़ी।
शे तेई एणो बोलो,
शे कोरा लै नीं,
शे काउणी कोठे डाही,
शे सौ उबड़दो लागौ।
शे ग्वालुओ जौ के पेचा,
शे मुआणो भाटा आगे ले ठूरो।
शे दोष हेरो,
शे भाटो बोला,
शे मानको गौआ।
शे मानूं न एथी,
शे तींदे डाहो।
शे शौठ झमाणू लौड़दो लागौ,
शे पात्थरा बाहंदो लागौ,
शे गरोष्टे नौठ,।
शे गरोश्टे मारे,
शे पात्थर बौणै।
शे निरभण्डा ले नाओ,
शे बठारा दी नाओ।
शे बठारा छौड़िया जै निकड़े,

माटी सिंह कोट

हिन्दी अनुवाद

वे बाड़ी के मुआणे,
वे खेत जोतने लगे।
वे अठारह छोड़े पीछे रहे,
वह मूर्ति मिली।
उसने आने को कहा,
उसे कहां को ले जाऊं।
वह काउणी की कोठरी में रखी,
उसे तब खेल आने लगी।
उसने ग्वालों से जौ मांगे,
वे मुआणे भाट के पास गए।
उसने दोष देखा,
उस भाट ने कहा,
वह मानना पड़ेगा।
वह मानता नहीं यहां,
वह वहां रखा।
वे साठ हाली लड़ने लगे,
वे पत्थर मारने लगे,
वे उपले बने।
वे उपले मारे,
वे पत्थर बने।
वे निरमण्ड को गए,
वे बठार को गए।
बठार छोड़ के पर निकले,

शे नाओ बठारलू डांणो।
शे तेई बोला पांज पजौहर दैणे गौआ,
शे चौड़ाकोट पजेरी दीनों।
शे ओरसुओ मुआणो आओ,
शे नौरे बोला गाई पूजो।
शे भागू भाड़ा न्यारो,
शे पीछू भाड़ा परेशो,
शे शुझा पीछू फीरो।

वे नाम बठारलू रखने,
उसने कहा पांच पूजा को देने गांव।
वे चौड़ा कोट पहुंचा दिए,
वे अरसू का मुआणा पहुंचा,
नौरे ने कहा गाय पूजो।
वह भागा तो उसे अन्धेरा दीखा,
उसने पीछे देखा प्रकाश।
उसे लगा पीछे मुड़ा,

कुल्लुई

शे चौड़ाकोट पूजो,
शे मूर्ति चाकी बौकणे पूजो,
शे जेठी ठहरी डाही।
शे तौदा का एकी पैरे आगू सीको,
शे अरशू पूजो,
शे मिरगा फाला।
शै जै दंशी डाहो,
शै बिसरी टालौ सौ,
शे तेउए मुआड़न खूड़ा ले नाई।
शे एकी पैरे आगू सीको,
शे देथवे पूजो,
शे जागा टकाणो ठीक जाणों।
शे तीदा का कलारस सीको,
शे टाडू का खरैए पूजो,
शे दैहणी बावीं पाशड़िए खौश डाहो।
शे कूट पूजो,
शे मुआणे बोलो,
शे झरापट जे मानूं न,
शे गोटी जेह छौलदे लागौ।
शे अठारह भूई डभणू के,
शे गाड़ी बेशो,
शे राज चलाउओ।

हिन्दी अनुवाद

वह चौड़ा कोट पहुंचा।
वह मूर्ति उठा कर बौकणेस्थान पहुंचा,
वह बड़ा स्थान रखा।
वह वहां से एक पैर से आगे खिसका,
वह अरसू पहुंचा,
उसने मिरग फाला।
वह जै दंशी रखा,
वह भूल टाल के,
उसकी पत्नी खुडड में ले गई।
वह एक पैर से आगे खिसका,
वह देथवे पहुंचा,
उसने जगह ठिकाना ठीक समझा।
वह वहां से कलारस पहुंचा,
वह टाडू के खरैए पहुंचा,
उसने दायीं बाईं तरफ खश रखे।
वह कोट पहुंचा,
वह मुआणा बोला,
वह झरापट जैसे मानेगा नहीं,
वह गोटी जैसे हिलाने लगा।
वह अठारह मंजिल तालाब में,
वह गाड़ बैठा,
उसने राज चलाया।

जौऊसा नाग रियाड़ा

कुल्लुई

शेषगी नागा रा तासुकी नाग,
तासुकी नागा रा वासुकी नाग,
वासुकी नागा रै ठारह नाग।
सभी न पहिलै,
गौशाला पुजू।
गोशाला न हाऊं
मनाली गौहरा वै आऊ।
तौखै न हाऊं
कनाअ गौहरा आऊ।
तौखै न हाऊं
रगोली जोता रै,
धुम्बल सौरा वै आऊ।
तौखै न हाऊं
रीतै टीवै न पुजू।
तौखैं न जौऊसे मोंझै आऊ।
सौता बीहा जौऊसा ती,
सौत बार औग लाई।
सौत बार भूजै रै
ढौगा न रौहू।
बारह वौर्षा,
बरशीणी आन्दरै काटी।
रोण्डी संघै राज भुंचू,
गोष्ठू रा धूं लेऊ,
तवै आपणा राज बशाऊ।

जौऊसा नाग रियाड़ा

हिन्दी अनुवाद

शेष नाग का तासुकी नाग,
तासुकी नाग का वासुकी नाग,
वासुकी नाग के अठारह नाग।
सबसे पहले
गौशाल पहुंचा।
गौशाल सें मैं
मनाली जंगल पहुंचा।
वहां से मैं
कनाअ के जंगल पहुंचा।
वहां से मैं
रगोली जोत के,
धुम्बल सरोवर पहुंचा।
वहां से मैं
रीते टीले पर पहुंचा।
वहां से जौऊसे अन्दर पहुंचा।
सात बीस 140 घर जौऊसा था,
सात बार आग लगाई।
सात बार भोज पत्र के
पहाड़ पर रहा।
बारह बरस,
बरशीणी के अन्दर काटी।
विधवा के साथ शासन किया,
गोबर का धुआं लिया,
तब अपना शासन स्थापित किया।

काली नाग मतेउड़ा

कुल्लुई

गौहरा न कासू कोटू ती,
तेईये भेड़ा तौखे रहाई ती
तेईवे बोलू मैं,
भेड़ा तेरी हाऊं आणियां देनू।
मेरी प्रजा कोहिन्चै तू वी भाल,
एक भरो जागू हाली बेठा।
कासू राजा दाणा खोली बेठा,
कासू कोटुए बोलू,
मेरी भेड़ा शाददा जाई।
इन्हा वै हाऊं अवै खेददा एनू।
शोचै भीतरै ज़बै आसै पूजी बेठै,
शोचै न तैवै कासू म्हारे जोता न पूजी बेठै।
म्हारे जोता पांथा कौछै काई राहणी हागै पूजी बेठै,
काई राहणी न आसावै कासू कोटकै री भेड़ा मेलिया,
पटाधी हागै पूजी बेठै।
काई राहणी एठै हाऊं कोहिंचै,
सौर आपण वणाई बेठा,
कासू कोटु ज़बै भेड़ा संघै पटाधी भीतरै पूजी बेठै,
भेड़ा पूजिया कोहिंचै सौरा हागै पूजी बेठे।
कासू कोटुऐ बोलू,
ज़बै एई सौरा बै आपू शकौइया तेसु रहाई देणै,
सौरा वै तौखै हाऊं शुका तवै कोहिंचै केरी।
ओड़ा भिण्डा तौखै अपणा लाई बेठा।

काली नाग मतेउड़ा

हिन्दी अनुवाद

गौहर में कासू कोटू था,
उसने वहां भेड़ें गुम की थी।
उसको कहा मैंनें,
भेड़ें तेरी मैं लाकर दूंगा।
मेरी प्रजा कहीं तू भी देख,
एक भरी जाग हाली बैठा।
कासू राजा दाना खोली बेठा
कासू कोटके ने कहा,
मेरी भेड़ें बुलाने जाना।
इनको मैं अब हांकने आऊंगा।
शोचे के पास जब हम पहुंच बैठे,
शोचे से कासू तब हमारे जोत में पहुंच बैठे।
हमारे जोत पांथ समीप काई राहणी के पास पहुंच बैठे
काई राहणी में हमें कासू कोटकै की भेड़ैं मिलकर,
पटाधी के पास पहुंच बैठे।
काई राहणी के नीचे मैं कहीं
सरोवर अपना बना बैठा,
कासू कोटू जब भेड़ों के साथ पटाधी पहुंच बैठे।
भेड़ पूज कर सौर के पास पहंच बैठे।
कासू कोटके ने कहा,
जब इस सौर को स्वयं सूखा करके गुम कर दूंगा,
सरोवर को तब मैं सूखा तब कहीं करना ।
ओड़ा भिण्डा अपनी वहां लगा बैठा।

टीला भीतरै एक बुढ़ला ता बुढली ती।
बुढ़ियै बोलू, तू देऊ होला की होर,
मैं बोलू, तुसा वै औखै किज़ी री जुनी सा,
बुढ़लियै बोलू, एक ता पाणी री जुनी सा,
दूजी कोहिंचै मेरै लुआद लागदी,
बारह साज़े वै हाऊं तौभै धूप वौती देंदी।
लोहै रै गूर्जे टीला भीतरै तबै तौखै हाऊं पाणी खोली बेठा।
शूकै डोंखा न तिनरी टीर लाई बेठा।

टील के पास बूढ़ा और बूढ़ी थे
बूढ़ी ने कहा, तू देवता है कि कोई और,
मैंनें कहा, तम्हें यहां किस चीज़ का कष्ट है।
बूढ़ी ने कहा, एक तो पानी की किल्लत है।
दूसरे अगर मेरे औलाद होती,
बारह साक्रंति मैं तुझे धूप वती देती।
लोहे की छड़ से तब वहां पानी खोल बैठा।
सूखे ठूंठ में तब उनकी औलाद की पौध लगा बैठा।

कुल्लुई

सौर घौर अपणा बणाई बेठा।
पीणी मौला भीतरै,
राजा सिद्धि सिंह एज़ी बेठा।
ठारह शांगली कोहिंचै सौ आणी बेठा।
भागा सिद्धै बौलू,
रूपी मौला भीतरै भाई काली नाग सा।
पहिलै तेईरा जपतप हेरिया एज़।
राजा सिद्धि सिंह बागा कोटलू ठाणा पुजी बेठा।
बागा कोटलू ठाणै पादै नाला ती
पौरवै तेईरै कोहिंचै टपी निसा।
शाओ गाई हाऊं तोखै न जाई बेठा।
तेसरे हाऊं नौई भीतरै हाऊं पाई बेठा,
गोछै वै हाऊं पूजी बेठा,
नगालै री डाली तौखै न आणी बेठा।
नौई न तेसावै पाई बेठा,
नौई रा पाणी उजती रा उझै
बुनला बून्हे किछ घड़ी ढौई रोकी बेठा।
शाहणै शोहणै राजै वै आसै पार पजाई बेठै।
ठारह करड़ू रै शांगलै रै,
ठारह टुकड़ै तौखै केरी बेठा।
राजा सिद्धि सिंहै बोलू, हेरू तेरा जप-तप,
तेरा सौर घौर हेरना जी।
मैं बोलू, लाल पीऊंआ हाऊं तौखै साधदा नई
राजा लाल पीऊंआ तौखै खोली बेठा,
नगोणा सौरा तेईवै आणी बेठा।

हिन्दी अनुवाद

सौर घर अपना बना बैठा।
पीणी मण्डल के पास,
राजा सिद्धि सिंह आ बैठा।
अठारह सांकल वह कहीं से ला बैठा।
भागा सिद्ध ने कहा,
रूपी मण्डल में भाई काली नाग है।
पहले उसका जप प्रताप देख के आ।
राजा सिद्धि सिंह बागा कोटलू ठाणा पहुंच बैठा।
बागा कोटलू ठाणे के पास नाला था
पार को उसके कहीं लांघा न जाए।
शाओ गाई मैं वहां से जा बैठा।
उसके मैं नदी के पास आ बैठा,
गोछे को मैं पहुंच बैठा,
नगाल की डाली वहां से ला बैठा।
नदी में उसे डाल बेठा,
नदी का पानी ऊपर का ऊपर
नीचे का नीचे कुछ समय तक रोक बैठा।
जल रहित मार्ग से राजा को हम पार पहुंचा बैठे।
अठारह करडू की सांकल के,
अठारह टुकड़े वहां कर बैठा।
राजा सिद्धि सिंह ने कहा, देखा तेरा जप-तप,
तेरा सौर घर देखना था।
मैंनें कहा, लाल पीला में वहां सहता नहीं।
राजा लाल पीला वहां खोल बैठा,
नगाणका सौर उसको ला बैठा।

राजा सिद्धि सिहें बोलू, सोर केतरा डुघा होला,
मैं ठारह मोणा रा घोण, नाऊं बीहा री रौशी,
तौखै कोहिंचै कठ केरी बेठा,
ठारह मोणा रा घोण तबै रौशी न तबै हाऊं बान्ही बेठा।
राजा सिद्धि सिहें बोलू तवै,
ठारह मोणै रा घोण वै सौरा भीतरै कोहिंचै पाई।
अबै वी तवै एई कोहिंचै शूकै वै तारू लोड़ी,

राजा सिद्धि सिंह ने कहा सरोवर कितना गहरा होगा,
मैंनें अठारह मण का घण, नौ बीस की रस्सी,
वहां कहीं इकटठा कर बैठा,
अठारह मण का घण तब रस्सी से तब मै बान्ध बैठा।
राजा सिद्धि सिंह ने कहा तब,
राजा सिद्धि रिंह ने तब कहा अठारह मण को घण सौर के अन्दर डाल।
अब भी यह कहीं सूखे को निकाली चाहिए,

कुल्लुई

ठारह मोणा रा घोण तेईरै खोलूई निसी।
मैं वी तौखै कोहिंचै आपणै तपा न,
ठारह मोणा रा घोण बालू रेता संघै,
तेईवै हाऊं तौखै खोली बेठा।
राजा सिद्धि सिंहा वै तौखै न
भेड़ा संघै शारवी खौह वै पजाई बेठा।
तौखै न शाड़ा ज़ागी ढौई
राजै वै विदा केरी बेठा।
खाई माना संधै भाईपा केरी बेठा,
भीतरै हाऊं तौखै न पूजी बेठा।
लोहा बाणा कोहिंचै हाऊं खोली बेठा,
चिन्थड़ू-बिन्थड़ू कोहिंचै राज ती,
होला़ सियां न कोहिंचै मामला ती
कोई री जोई कोहिंचै सूने मढ़ाई
कराहड़ा बौकरा काटणा
झोटा रा बौकरा कोहिंचै आंधी राती।

हिन्दी अनुवाद

ठारह मण का घण उससे खोला नहीं गया।
मैंनें भी वहां अपने तप से,
अठारह मण का घण बालू रेत के साथ,
उसको मैं खोल बैठा।
राजा सिद्धि सिंह को वहां से
भेड़ के साथ शारवी खौह पहुंचा बैठा।
वहां से शाड़ा ज़ागी तक
राजा को विदा कर बैठा।
खाई मान के साथ धर्मचारा लगा बैठा।
अन्दर मैं वहां से आ बैठा।
लोहा का वण में कहीं खोल बैठा,
चिन्थडू-बिन्थडू कहीं राज था,
हल की नोक पर कहीं राज था।
कोई री पत्नी कहीं सूने मढ़ाई,
कुल्हांड़ी से बकरा कटेगा।
झोटा का बकरा कहीं अन्धी रात।

नगेला डमैहड़ी

कुल्लुई

सौरा वै मातौ चलो,
माता रोन्दी कलान्दी।
बेटो पूछो, किले रोआ,
आओ उदू बरडाई सौरै।
सौ अपेरू एछा,
माता बोला, सी चौऊ,
मशैरा दी दाणा करदौ।
एकी आगै दान कौरदौ,
साता जाहगै भौलो कौरा।
मैं सूंचौ कै कौरनो,
चींटै रूपै उदू बरडईयै,
काल्जै दीनो।
उदू बरडई बोली मारा,
मुखा तेज़ दयांशी कूणा।
उदू बरडईयै मांदरौ झाड़ौ,
झाड़ी मेटिया चालदा हुऔ।

नगेला डमैहड़ी

हिन्दी अनुवाद

सरोवर को मत चलो,
माता रोती कलाती है।
बेटा बोला, क्यों रो रही हो,
आया उदू बरडई सरोवर में।
वह इधर आया,
माता बोली, वह चार,
मशैर की दान करता है।
एक के पास दान किया,
सात जगह भला किया।
मैंनें सोचा, क्या करना,
चींटी के रूप में उदू बरडई,
कलेजा दिया।
उदू बरडई को बोला मारा,
मुख तेज़ दयांशी कौन।
उदू बरडई ने चटाई झाड़ी,
झाड़ मेट कर चलता हुआ।

चोतरू नाग शोघे

कुल्लुई

सौरा सरेउड़ा पौनो,
खुरा खौरशू पूजो।
एक बूटी बैली काटी दोती रूम्बी।
एक पैरे आगडू सीको,
जलोड़ी जोगणी आहमै पूजो।
रौस्तो नी छाड़ो,
भाई चारा ज़ेहई लाओ।
रौसतो खलैरौ,
एकी पैरे आगडू सीको,
घियागी भीतरौ पूजो।
घयागी ओ खमारटू लुटडू,
पटैटो घूंडी गाही बेठो।
एकी पैरे आगडू सीको,
जिभी भीतरै पूजो।
जिभी ऐ नागै शौ लामी ज़िभ काखै।
एकी पैरे आगडू सीको,
मंगलौरा भीतरी पूजो।
ठारौ बाहरौ ज़गाहड़ ए रूपे,
मडव जेहो बीस बेहड़।
एकी पैरे आगडू सीको,
जूफड़ा गाड़ा पूजो,
एक नढाउणो दूई बजाउणो।
एकी पैरे आगडू सीको,

चोतरू नाग शोघे

हिन्दी अनुवाद

सरेउलसर में पैदा हुआ,
रखाल खरशू की पूजा की।
एक पेड़ रात काटा सुबह उग आया।
एक पैर से आगे खिसका,
जलोड़ी जोगणी के पास पहुंचा।
रास्ता नहीं छोड़ा,
भाई चारा जैसा लगाया।
रास्ता खोल दिया,
एक पैर से आगे खिसका।
घयागी के पास पहुंचा,
घयागी में कुम्हार मिला,
धरती पैर टिका बैठा।
एक पैर से आगे खिसका,
जिभी के पास पहुंचा।
जिभी में नाग ने सौ लम्बी जीभ निकाली।
एक पैर से आगे खिसका,
मंगलौर के पास पहुंचा।
अठारह बारह जगाहड़ के रूप,
मडब जैसे बीस मुहल्ले।
एक पैर से आगे खिसका,
जूफड़ा गाड़ पहुंचा।
एक पग रखना दो पग चलना।
एक पैर से आगे खिसका,

बाहू चौफे भीतरी पूजो।
बाहुए कालका सौंघे,
गिन्दुए खेलदौ लागो।
बाहवे ओ गिन्दु,
लाम्बी लाम्भरी पजेरो।
एकी पैरे आगड़ू सीको,
रघुपुरा भीतरी पूजो।
रौस्तो नईं छाड़ो,

बाहू चौफे के पास पहुंचा।
बाहू में जोगणी के साथ,
गेन्द खेलने लगा।
बाहु से गेन्द
लाम्बी लाम्भरी पहुंचायी।
एक पैर से आगे खिसका,
रघुपुर के पास पहुंचा।
रास्ता नहीं छोड़ा,

कुल्लुई

भाई चारौ लाओ।
रौस्तो खलेरो,
एकी पैरे आगड़ू सीको।
शूष भीतरै पूजो,
द शूष उल्टी बाखा।
तौ सुतौ नौ,
खड़ा जगाओ।
देऊ शुषीऐ बोलो,
जै करा ही ठाकरा।
शाड़े दाड़े तवै तैं,
देव देश न भेटणो।
एकी पैरे आगड़ू सीको,
जांजा छोल पूजो।
बांवी नौज़र दीनी,
शाठकी कैद मौन नि राजो।
दैहणी नौज़र दीनी,
बारह बीहा कराड़ दिल राजो।
एकी पैरे आगड़ू सीको,
औड़ै गौही का हाक लगाई,
कराड़ी ठाकुरैं शूणी।
गौण ज़ेहओ आओ,
एकी पैरे आगड़ू सीको,
नागणी ज़ानी भीतरै पूजो।
नागणी ज़ानी का हाक लगाई,
शोघी ठाकरै शूणी।

हिन्दी अनुवाद

भाई चारा लगाया।
रास्ता खोला,
एक पैर से आगे खिसका।
शूष के पास पहुंचा,
देवता शूष की उल्टी बोली।
वह सोया था,
खड़ा जगाया।
देवता शुषी ने कहा,
जै करता हूं ठाकर।
दायें बायें तब तुझे,
देव देश न मिलना।
एक पैर से आगे खिसका,
जांजा छोल पहुंचा।
बायें तरफ दृष्टि दी,
साठ कैद मौन नहीं राजा।
दायें नज़र दी,
बारह बीस कराड़ दिल राजा।
एक पैर से आगे खिसका,
औड़े गलू से आवाज़ लगाई,
कराड़ के ठाकुर ने सुनी,
नज़दीक जैसे आओ।
एक पैर से आगे खिसका,
नागनी चट्टान के पास पहुंचा।
नागनी चट्टान से आवाज़ लगाई,
शोघी के ठाकर ने सुनी।

शोघीऐ ठाकरै बोलो की,
घांशी ज़ेहओ आओ।
शोघे ठाकरै धूप घनेरो आणे,
देओ बेशणी बैठो वरशांवै।
एकी पैरे आगड़ू सीको,
चोतरी भीतरै पूजो ।
ढौउंस बजाओ,

शोघी के ठाकुर ने कहा कि,
नज़दीक जैसे आया।
आगे शोघे ठाकर ने धूप का दीप लगाया,
देवता बैठने बैठा बिठाया।
एक पैर से आगे खिसका,
चोतरी के पास पहुंचा।
ढौंस बजाया,

कुल्लुई

नाचणै खेला लै कीयो।
जेठो थाम्ब लाई जेहो बैठो।
चोतरै ऐ बूटी दोती रूम्बी बेड़ो काटी।
बेड़ो रूम्बी दोती काटी।
एकी पैरे आगडू सीको,
मींडू झौड़ा भीतरी पूजो।
पटारनी नाग ठेसरे ले बैठो,
गाजै बाही,
काओ बाई पजेरो।
एकी पैरे आगडू सीको,
बाई गाड़ा भीतरै पूजो।
ठारा ज़ाती बारा बरन,
हिरसदै लागो।
एकी पैरे पिछी फिरौ,
मींडू झौड़ा भीतरी पूजो।
गाजे बाही,
माटेओ जिड़टू काडो।
बाई गाड़ा भीतरी फैंको,
पैइ तोड़े पाए।
एकी पैरे आगडू सीको,
तिदी चार मणेस हिणसदे लागै,
एकी मणेसे बोलो,
गाड़ी दाड़ी न एथी,
थाडुआ स्वाणो देओ।
दूजे मणेसे बोलो,

हिन्दी अनुवाद

नाचने खेलने को किया बड़ा,
बड़ा थाम्ब लाया जैसा बैठा।
चोतरै में बूटी सुबह लगाई शाम को काटी।
शाम कोलूगाई प्रातः काटी।
एक पैर से आगे खिसका,
मींड झौड़ के पास पहुंचा।
पटारनी नाग ठसका दे बैठा।
गज से मारी,
काओ बावड़ी पहुंचाया।
एक पैर से आगे खिसका,
बाईगाड़ के पास पहुंचा।
अठारह जाति बारह वर्ण,
झगड़ने लगे।
एक पैर से पीछे मुड़ा,
मीड़ू झौड़ा के पास पहुंचा।
गज से मारी,
मिट्टी से जिड़टू निकाला,
बाईगाड़ के पास फैंका।
पई तोड़े पाए,
एक पैर से आगे खिसका,
वहां चार मानुष झगड़ने लगे।
एक आदमी ने कहा,
गाली-गलौच नहीं है यहां,
थड़ा पौड़ी दे दो।
दूसरे आदमी ने कहा,

गाड़ी दाड़ी न एथी।
चाम्बे ऐ पाचर छापर छें।
चीए मणेसे बोलो,
गाड़ी दाड़ी न एथी,
घीया कौरै घौरठ फरेओ।
चौथे मणेसे बोलो,
धारा सातु पुणू।

गाली-गलौच नहीं है यहां,
चाम्बे के पतर से छत लगाओ।
तीसरे मानुष ने कहा,
गाली-गलौच नहीं है यहां,
घी के साथ घराट चलाओ।
चौथे मानुष ने कहा,
धार में सतु बनाओ।

कुल्लुई

एकी पैरे आगडू सीको,
फरूट बाड़ी पूजो,
औड़ो भिण्डो जेही लाई बैठो।
एकी पैरे आगडू सीको,
ढींगूझौड़ा भीतरी पूजो,
तिदी वी मास मरीछ हिरसदे लागो।
तिदा का एक पैर पीछे सीको,
वणस बोला़ पूजो।
गौजै बाही,
गौज डुण्डवी,
गाड़ौ गाड़ कुईर भीतरी पूजो,
थाल्टु सौहगै भाईचारा लाओ।
सौहगै ज़ेहो आओ,
बणस बोला़ उखड़े,
गौजै बाही,
पैईताड़ै पाए।
एकी पैरे आगडू सीको,
शोघे भीतरी पूजो,
जेठो थाम्ब लेई जैहो बैठो।

हिन्दी अनुवाद

एक पैर से आगे खिसका,
फरूटबाड़ी पहुंचा,
औड़ा मिण्डा जैसा लगा बैठा।
एक पैर से आगे खिसका,
ढींगूझौड़ के पास पहुंचा,
वहां भी मानव मल्लेछ झगड़ने लगे।
वहां से एक पैर पीछे खिसका,
बणस बल़ा पहुंचा।
गज से मारी,
गज नप गई।
खड्‌ड होते हुए कुईर के पास पहुंचा,
थालटू थावीं के साथ भाईचारा लगाया।
साथ जैसे आया,
वणस बल़ा से उखड़े,
गज से मारी,
पैईतोड़े पाए।
एक पैर से आगे खिसका,
शोघे के पास पहुंचा,
बड़ा स्थान ले के बैठा।

लोहड़ी नाग कतमोर

कुल्लुई

लोहड़ा दी राखै बूटी,
बारह बौरशै कुंता माउए
कौटी खिलै हुओ।
देहड़ बड़ाउओ,
देहड़ बड़ाविया देउतड़ धारो।
तिदा का चालौ विष्णु धारा,
विष्णु धारा दि शलाटौ विष्णु दिशो।
ते शलाटै विष्णु गौड़दौ आओ।
पाटे वाने,
तिदा का रोपड़ू दिशदौ लागो।
शाठ हासड़ै शाठ राही,
गौजै बाहिया तीदै गाड़ो।
तीदा का आऔ नौरा भीतरी,
नौरो राणो कौखे पात्थरै आंगणै फैंको।
आंगणे पात्थर कौखी पुआओ।
परैंदे छोपलू हेठे राणे,
हेरगो नोरे पटेटुआ चाओं लगाओ।
सौ राणौ तिदी गाड़ो,
तिदा का सिकिया ठारू धारा।
देव थाणी शुजदी लागी,
शाठ पौड़ी गाड़ी धाड़ी।
तिदा का सिकिया सिरी नगरा,
वार पार धूमो, लुहारी मिली।

लोहड़ी नाग कतमोर

हिन्दी अनुवाद

लोहड़ा की राख बूटी,
बारह बर्ष कुंता माई ने
काटी खिल उठी।
मन्दिर बनाया,
मन्दिर बना के देव स्थान् धारा।
वहां से चला विष्णु धारा,
विष्णु धारा से चला बायें दिशा।
उस तरफ विष्णु गाड़ने आया।
पत्थर बींधे,
वहां से रोपडू दीखने लगा,
साठ हाली साठ बीजने वाले,
गज से मारी वे गाड़े।
वहां से आया नोर के पास,
नोर राणे के पास पत्थर आंगन फैंका,
आंगन पत्थर कहां पहुंचाया।
पर छोपलू नीचे राणा,
देख नोर पटेटू चांओ लगाया,
वह राणा वहीं गाड़ा।
वहां से खिसका ठारू धार।
देव स्थान दिखने लगा।
साठ पौड़ी गाड़ी नीचे।
वहां से खिसका श्रीनगर,
उआर पार घूमा, लुहारी मिली।

तेसै कुलथ दीने,
तेओं नाओं कुलथ रौहो।
कुलथेओ लुहार भाई धारा लै काढ़ो,
ते लुहारा गौड़दो आओ।
तिदा का चालौ खड़ैउगर गौही,
तिदा का चालौ कुईर गौही,
तिदा का मरूटी सेरी पूजो।
मरूटिये छाड़ी आगू सीको,

उसने कुलथ दिए,
उसका नाम कुलथ रखा।
कुलथ ने लुहार भाई धार से निकाला,
वो लुहार को गाड़ने आया।
वहां से चला खडैउगर गली,
वहां से चला कूईर गली,
वहां से मरूटी सेरी पहुंचा।
मरूटी से नीचे आगे खिसका,

कुल्लुई

गड़ूम पूजो,
तेओ नांअ गड़ूमी नाग रौहो।
तिदा का सिकिया लोहसरा पीछू पूजो,
काछवा चूटी,
तेओ नाओं गड़ूमी नाग रौहो।
तेओ नाओं लोहसर एठी रौहो।
आगू सीको खोणी बाग पूजो,
खौणी बाग सौर बणाओ।
सौ सौर तेऊए छवू के खोओ वो,
तिदा का बुहाविया कांशै झालै शाचो।
ते नाओं शमशरी रौहो।
तिदा का सिकिया सुंगर खेतै रौहो,
सौर बडाओ।
सौ सौर कांडे ओड़े खोओ,
तिदा का बुहाविया एक ऋषि मेड़ो,
तेई ऋषि दातोदात दीनी।
देउगी भीतरै पूजो,
इदा सिकिया कांडे चौकरै पुजो।
राणै लै बोलो, तू नाचे की मूं,
तेई राणे गौड़दा आओ।
तिदो का गाडै घौरटो पूजो,
भितरी गुआणै ठुरा ता घौरठ रिंगा।
बाहरै नाहा ता धौरट ना रिंगा।
ते घौरटा गाड़दो आओ।
ते गाड़ो,

हिन्दी अनुवाद

गड़ूम पहुंचा,
उसका नाम गड़ूमी नाग रखा।
वहां से खिसककर लोहसर पीछे पहुंचा।
काछवा टूटी,
उसका नाम गड़ूमी नाग रखा।
उसका नाम लोहसर नीचे रहा।
आगे खिसका, खणीबाग पहुंचा,
खणीबाग में सरोवर बनाया,
वो सरोवर उसने डूब के खोला।
वहां से आगे कांशै झाले पहुंचा,
उसका नाम शमशरी रहा।
वहां से खिसका सुंगर खेत रहा,
सरोवर बनाया,
वह सरोवर कांडे ओड़े खोला।
वहां से आगे एक ऋषि मिला,
उस ऋषि ने श्रेष्ठ शिक्षा दी।
देउगी के पास पहुंचा,
वहां से खिसका कांडे चोकरै पहुंचा।
राणे से कहा, तू नाचेगा कि मैं,
उस राणे को गाड़ के आया,
वहां से गाड़ेघौरट पहुंचा।
अन्दर मानुष गया तो घराट चला।
बाहर निकला तो घराट न चले।
उस घराट को गाड़ के आया,
उसे गाड़ा।

ठोड़े सेटा पूजो,
देहड़ बडाओ।
देहड़ बड़ाविया देथड़ धारो,
एक माहतौ एक पचैहुओ,
दूई ढाढी ठारह गांठी,
गुगड़ जाड़ी तिदी वाक फूटो।

ठोड़े सेट पहुंचा,
मन्दिर बनाया।
मन्दिर बनाकर देवस्थान धार,
एक महता एक पुजारी,
दो बाजगी अठारह भंडारी,
गुंगे को जगाया उसके आवाज़ फूटी।

शेषनाग जिभी

कुल्लुई

सातवें पताड़ा पुणू,
विष्णु अंग सै आओ।
बीसू देशै सौ निकतौ,
चाउला-बाउला देशै हेरदा लागो।
ढींजू रोपै निकतौ,
ढींजू रोपौ कुल पराही मेरो।
पैरी आगौ सिकतो
निरमंडा भीतरै निकतो,
आम्बिका सौंगै जुआ पासा खेलतो,
परशुरामै जी सौंगै मेड़ भेट करदो।
पैरे आगै सीको,
बाड़ी बहने निकतो
बहणी सौंगा ओड़ा भिंडा लाइंदो,
वृष बाकरू भौष्टदो।
पैरे आगै सीकौ,
कांगड़ बदोआ निकतो,
बदोई नाओं लाई बैठो।
पैरे आगै सीको,
सकेता भीतरै निकतो,
राजे री ठाहरी वांड पाईदो,
राइसी रा जवाप भरदो,
माहू नाग नाम लाई बैठो।
पैरे आगे सीकतो,

शेषनाग जिभी

हिन्दी अनुवाद

सातवें पाताल पहुंचा,
विष्णु संग वह आया।
बीस देश में निकला,
चायल-बायल देश देखने लगा।
ढींजू रोपा स्थान पर निकला,
ढींजू रोपे में धान की पराली मेरी।
पैर आगे खिसका,
निरमण्ड के पास निकला,
अम्बिका के साथ जुआ पासा खेला,
परशुराम जी के साथ मिलन भेंट कर दी।
पैर आगे खिसका,
बाड़ी बहन के पास निकला,
बहन के साथ ओड़ा भिंडा लगाया,
बैल बकरा भेंट किया।
पैर आगे खिसका,
कांगड़ बदोआ निकला,
बदोई नाम लगा बैठा।
पैर आगे खिसका,
सुकेत के पास निकला,
राजा के स्थान का बंटवारा किया,
रियासत का खज़ाना भर दिया,
माहू नाग नाम ले बैठा।
पैर आगे खिसका,

बीड़ा बाल्हे निकतौ,
ठारबी भाखी जातरा लाईदो,
टकरासी नागा सौंगे मेड़ भेट करलो।
पैरे आगै सीको,
मण्डी भीतरै निकतौ,
काला ठनारू हाथा रै डांरू,
हूल काटलौ।
शनीचरी नां लेई बैठो।

बीड़ा बाल्ह में निकला,
वहां पर जातर लगाई,
टकरासी नाग के साथ मिलन भेंट किया।
पैर आगे खिसका,
मण्डी के पास निकला,
काला ठनारू हाथ में ले फरसा,
हल काटा,
शनीचर नाम ले बैठा।

कुल्लुई

जबरांडीधार धमेउल मेरी,
वाचा री कवाच होली,
राशि रे तंग मागुड़ी रे ठिंग लाईदो।
आओ झीका मांझे गाड़ दाड़ी उतरो,
शनीचरी नां लेई बेठो।
पैरे आगै सीको
जगतपुरा भीतरै निकतो।
जेठी जौगती लाईलो,
ची बौरशा चियारश दींदो।
पैरे आगै सीको,
तांदी भीतरै निकतो।
लमकोटा ढोआ दैदै थाड़ू,
कड़ाही रै दौर भौउंदौ कड़ाही के,
तौदकौ जैहो तांदी ठाकरेटु,
गाजरौ पूजदौ लागो,
तांद मेरी कांचा री ओवर ह्लेली।
पैरे आगै सीको,
त्रलोकपुरा भीतरै निकतो,
दूजै सेहिं साखी नई बोलदा।
पैरे आगे सीको,
बाहू भीतरै निकतो,
बाहू री गाशकी सौंगे मेड़ भेट करदो।
बाहू बौरगौ ढीयो नि मनदो,
देवता नी मनदो,
आनै भौरी कोठी पाटै देई।

हिन्दी अनुवाद

जमरांडी धार में भण्डार मेरा,
वचन कवचन हुए,
राशी के तंग मागरू से लकड़ी लाई।
आया गुस्से में गाड़ी दाड़ी उतरा,
शनीचर नाम ले बैठा।
पैर आगे खिसका,
जगतपुर में निकला,
बड़ी मशाल लाई,
तीन बर्ष तक पहरा दिया।
पैर आगे खिसका,
तांदी के पास पहुंचा,
लमकोटा ढोआ दिया थाल,
कड़ाही के दौर भर के कड़ाही के।
उसके बाद तांदी ठाकरू,
गाजरौ पूजने लगा,
तांदी मेरा कांच का छोटा सा कमरा होगा।
पैर आगे खिसका,
त्रलोकपुर के पास पहुंचा,
दूसरे की तरह साखी नहीं बोला।
पैर आगे खिसका,
बाहू के पास पहुंचा,
बाहू की जोगनी के साथ मिलन भेंट किया।
बाहू का देवता ढियों नहीं मानता,
देवता नहीं मानता,
अन्न से कोठरी स्लेट से ढकी।

आओ छीका मांणो,
सात न्याही सात शायरी हारदो।
तुषा तृणा लाईदो,
गाड़ी दाड़ी उतरू।
पैरे आगै सिको,
भूमियां भीतरै निकतो,
भूमियां री हारी,

आया छीका के पास,
सात रबी सात खरीफ हारी,
तूष घास लगाया।
गाड़ी-दाड़ी में उतरा,
पैर आगे खिसका,
भूमियां के पास पहुंचा,
भूमियां की हार,

कुल्लुई

देउ पझारी वै देई बेठो,
बरगेहड़ जेहड़ी आपू वै डाहंदो।
पैरे आगै सिको,
खण्डै रोपै निकतो,
एक दूजे जातरा लाईंदो,
दूजे पूजे मुरद जलाउंदो।
पैरे आगे सिको,
नरहाये भीतरे निखतो,
मुंगर मौहता लाई बेठो,
जेठी हाक धमाक लाईंदो।
पैरे आगै सिको,
मिहारा भीतरै निखतो,
मिहारा दुर्गे सौंगे मेड़ भेट करदो।
पैरे आगै सिको,
सौरै भीतरै निकतो।
सौरे सणेखा बोलू,
देवा राती चीणा रा बेजा चोड़े।
बरश बाकरू देउलो,
सौरे सी मौहतौ मेरो मुखरू चोरू,
मुखड़ू देउलौ मोहता मेरो।
पैरे आगे सिको,
पीउणा पाणी लाईलो।
कटाहची भीतरै निकतो,
कौछो कवाचु पूर्वा प्रौड़ मेरी,
शैना लाई बैठो,

हिन्दी अनुवाद

देवता पझारी को दे बैठा,
बरगेहड़ जैसी अपने को रखी।
पैर आगे खिसका,
खण्डा रोपा में निकला,
एक दूसरे के साथ जातर लगाई,
दूसरे तरफ मुरदा जलाया।
पैर आगे खिसका,
नरहाये के पास पहुंचा,
मुंगर मेहता ला बैठा,
बड़ी आवाज़ लगाई।
पैर आगे खिसका,
मिहारा के पास पहुंचा,
मिहार में दुर्गा के साथ मिलन भेंट किया।
पैर आगे खिसका,
सरोवर के पास पहुंचा,
सरोवर में शुभ संदेश कहा,
देवता रात में बनाता सुबह तोड़ता।
भेंट बकरा दिया,
सर में सी महता ने मेरा मुख चुराया,
मुख धोया मोहते ने मेरा।
पैर आगे खिसका,
पीने को पानी लाया,
कटाहची के पास पहुंचा,
पास ही पूर्व की तरफ द्वार मेरा।
शयन ले बैठा,

आओ झीका मांझे गाड़ी धाड़ी उतरो।
पैरे आगे सिको,
रशाड़े भीतरे निकतो,
ऋषि रशाड़ू रौथै छौतरै नाचदौ लागो,
आओ झीका मांझे गाड़ी धाड़ी उतरो।
पैरे आगे सिको,
जिभी भीतरै निकतो,

कुल्लुई

बसाखा रै ध्याड़े जातरा लाईलो।
कड़ीजुगा का वर्तमाना मां,
ध्या सौउकणी बणलो
कोड़ी री जात बीड़ा होली,
सर्वराशी मुल्क होला।
कड़ीजुगा मांझै सौचै तारदो,
खूटै गाड़दौ रौथै छौतरै नाचदो।

आया गुस्सा बीच में गाड़ी धाड़ी उतरा।
पैर आगे खिसका,
रशाड़ के पास पहुंचा,
ऋषि रशाड़ रथ छतर के साथ नाचने लगा,
आया गुस्सा बीच में गाड़ी धाड़ी उतरा।
पैर आगे खिसका,
जिभी के पास पहुंचा,

हिन्दी रूपान्तर

बैशाख के दिन जातर लगाई।
कलियुग के वर्तमान में,
मां बेटी सौतनै बनेंगी।
किसी की जात नीचे होगी,
एक समान देश होगा।
कलियुग में सच तैरता,
खूंटा गाड़ेगा रथ छतर नाचेगा।

काली़ नाग बुच्छैर

कुल्लुई

दसाउर नौठो ती,
मातै बोलू फिरदौ चालो,
कि नफीरू चालो।
सौत होए ता फिर एकू,
सौत न होए फिरी न एकू।
दसौउर पूजो,
राजै सौंगे ओड़ा भिंडौ पाओ।
एकी पैरे आगू सीको,
रामपुर भीतरी पूजो,
जेउड़ी बाटी बागो तौरो।
कशौली गाड़ा पूजो,
चार चम्भू सात भराड़ी।
मेरी घड़ी चकैहरी बैठणै आड़ै,
ए नी आथी,
पैर न कटैरौ पैर बढेरो ।
चूनै गाही भीतरी पूजो,
वरशाम कीऔ पैर बढैरो।
बाड़ी भीतरै पूजो,
तिन गैलौ टाम्बुओ।
पैर आगै बढैरो,
शांवी बाई पूजो
वरशाम कीयो,

काल़ी नाग बुच्छैर

हिंदी अनुवाद

दशौहर गया था,
माता ने कहा घूमने चला,
कि ऐसे ही चला।
सात हुए तो फिर एक,
सात नहीं हुए फिर न एक।
दशौहर पहुंचा,
राजा के साथ सीमाबन्दी कर।
एक पैर से आगे खिसका,
रामपुर के पास पहुंचा,
रस्सी बाट कर बाग में तैरा।
कशौली गाड़ पहुंचा,
चार चम्भू सात भराड़ी।
मेरी सभा में बैठने को लाई।
यह नहीं थी,
पैर नहीं काटा पांव आगे बढ़ाया।
चूने गलू के पास पहुंचा,
विश्राम किया,
पांव बढाया, बाड़ी के पास पहुंचा,
वहां गैलौ देव भड़क गया।
पांव आगे बढाया,
शांवी बावड़ी पहुंचा,
विश्राम किया,

कुल्लुई

स्नान ध्यान किओ।
पैर आगे बढैरो,
मूल्हा देउरै पूजो,
राई नाग टाम्बुओ।
पैर आगे बढैरो,
सराहण पूजो,
वारलौ रियासी पारलो जलांडी देओ।
एकी पैरे आगू सीको,
बागे स्रौहण पूजो,
तिदी दानवौ निकड़ो।
तेई जाणौ लेई देको,
कान्ही गुठी ढाई रेखा उल्टी धिनी।
ढाई रेखा सुल्टी धिनी,
दानवौ छेदौ बागौ बुहाउओ।
एकी पैरे आगू सीको,
बशले भीतरी नाठो,
बरशाम किओ,
गाशकी टाम्बुओ।
तीने बोलू, बौड़ो सकीरू आओ।
साता बारी जुए पासै जीती,
तौहै जाहगा मेड़नी।
जीती न तौहै ता,
पौहै शूहदौ रिगडू लागो।
एकी बाज़ी खेली ता हारो,
दूजी बाज़ी खेली ता हारो,

हिन्दी अनुवाद

स्नान ध्यान किया
पांव आगे बढाया,
मूल्हा मन्दिर पहुंचा
राई नाग बिगड़ा
पैर आगे बढ़ाया
सराहन पहुंचा,
इधर रियासी उधर जलांडी देव।
एक पैर से आगे खिसका,
बागा सराहन पहुंचा,
वहां दानव निकला,
उसने जान लेनी शुरू की।
कनिष्ठ उंगली से अढाई रेखा उलटी खींची,
अढाई रेखा सीधी खींची,
दानव ने छेद डालकर बाग बहाया।
एक पैर से आगे खिसका,
बशले के पास गया।
विश्राम किया,
जोगणी भिड़ गई।
उसने कहा, बड़ा कुलीन आया।
सात बार जुआ पासा जीता।
वहां जगह मिलनी,
जीता तो नहीं वहां ,
गोबर फैंकने नौकर लगे।
एक बाजी खेली तो हार गया,
दूसरी बाजी खेली तो हार गया,

तीजी बाज़ी खेली ता हारो,
चौथी बाज़ी खेली ता हारो,
पंचवी बाज़ी खेली ता हारो,
छट्टी बाज़ी खेली ता हारौ,
सातवीं बाज़ी खेली ता हारो।
तेज़ बारीश, चौ बाज़ी नाग जीतो,
चीं बाजी गाशकी हारी।

तीसरी बाजी खेली तो हार गया,
चौथी बाजी खेली तो हार गया,
पांचवी बाजी खेली तो हार गया,
छट्टी बाजी खेली तो हार गया,
सातवीं बाजी खेली तो हार गया।
शीघ्र बारिश,
चार बाजी नाग जीता,
तीन बाजी जोगणी हारी।

कुल्लुई

एकी पैरे आगू सीको,
छलैडा भीतरी नौठो,
दे बैठ टाम्बुओ।
रोशै खादै रोशै बरतादै।
एकी पैरे आगू सीको,
धराज़ भीतरी पूजो,
दे डरली टाम्बुओ।
एकी पैरे आगू सीको,
सकीरन भीतरी पूजो,
दैहणै लोहड़ी खलेणै जमांउणी,
नाचणै दें,
बावी लोहड़ी थाण वास दें।
सेवकी चाकरी कौरने आडौ मूं नि आथी।
जिही ध्याड़ीए आठ शाठ ढाला़ मेड़े,
तिहीं थाण थापण दें।
एकी पैरे आगू सीको,
गुशैणी भीतरै पूजो,
गाड़ा गुशैणिऐ देविऐं बोलो,
तौलै ठहरौ न दें।
एकी पैरे आगू सीको,
खुनण पूजो।
एकी पैरे आगू सीको,
बाहवै चौफै नाठो,
वाहवै चौफै सकीरनी सौंगै,
ओड़ो भिंडौ पाओ।

हिन्दी अनुवाद

एक पैर से आगे खिसका,
छलेडा के पास गया,
देवता बैठा बिगड़ा।
रोश से खा के रोश से बरता के।
एक पैर से आगे खिसका,
धराज़ के पास पहुंचा,
देवता डरली बिगड़ा।
एक पैर से आगे खिसका,
सकीरन के पास पहुंचा,
दायें लोहड़ी योगनी खेलने लगी,
नाचने दिया।
बायें तरफ लोहड़ी योगनी ने निवास दिया।
सबकी नौकरी करने वाला मैं नहीं हूं।
जिस दिन आठ साठ घर मिले,
वहां स्थान स्थापित करूं।
एक पैर से आगे खिसका,
गुशैणी के पास पहुंचा,
गाड़ा गुशैणी देवी ने कहा,
तुझे ठहरने न दूं।
एक पैर से आगे खिसका,
खुनण पहुंचा।
एक पैर से आगे खिसका,
बायें तरफ गया,
बायें तरफ सकीरनी के साथ,
बंटवारे की रेखा खींची।

चार फौड़टी फेटी पाई,
चार फौड़टी खड़ी कौरी,
चार तरकाड़ौ चोड़ू बढेरो।
फेर फागणा तिथी लाओ भेटो,
काल़ी नागा नाओं दरशा हुओ।
एकी पैरे आगू सीको,
जौरी मतेउड़ै भीतरी नाठो,

चार फट्टे फेटे डाले,
चार फटटे खड़े किए,
चार खम्बे चारों कोनों में खड़े किए,
फिर फागुन की तिथी लगा बैठा,
कालीनाग नाम दरशाया।
एक पैर से आगे खिसका,
जरी मतेउड़े के पास पहुंचा,

कुल्लुई

गुआड़े फुआल एच्छदै लागो।
गाड़ भगाड़ बौकरै लागो,
तिहीं रोहणी निसी लागी।
एक पैरे पीछू हौटो,
तांदी भीतरै पूजो,
तांदी ठाकरै ठकराणी बैठी निं थी।
पौरटू चलैउआ सिर पैहरा,
मोहरूऐ बूटै उखड़ौ तिदी मजुई काढ़ी।
मुठी भीतरी पाई,
तेहै गाड माड़ दिनी,
मैं चिन्ह कराउओ,
भांग भेखड़ चारवी।
तेसै बोलो मैं न जाणो,
ऋषि चालौ टाम्बुई।
रीठा बाकरै बौड़ा देंदी,
दूधा घीउऐ धारा देंदी।
एकी पैरे आगू सीको,
पटारने भीतरी पूजो,
सांवी खोणी शुजदी लागी।
कोटा भीतरी बझारी टांवुओ।
खुनन भीतरी गड़ाई टाम्बुओ।
चौकी भीतरी लछमीनारायण टाम्बुओ।
एकी पैरे आगू सीको,
गडूम भीतरी पूजो,
गडूमी नाग टाम्बुओ।

हिन्दी अनुवाद

ग्वाले पुआल चाहने लगे,
गाय बैल बकरे लगे,
वहां रहने न दे।
एक पैर से पीछे हटा,
तांदी के पास पहुंचा,
तांदी ठाकुर ठकुराईन बैठी नहीं थी।
पैर चला था सिर संवारती थी,
मोहरू का पेड़ उखाड़ा वहां मजुई खोली,
मुठी के अन्दर डाली।
उन्होंने गाली गलौच दी,
मैंनें चिन्ह करवाया,
भांग भेखड़ उगाई।
उसने कहा मैं नहीं जानता,
ऋषि लगा भिड़ने।
भेडू बकरे भेंट किए,
दूध घी की धार दी।
एक पैर से आगे खिसका,
पटारने के पास पहुंचा,
सावनी खड़ी दिखने लगी।
कोट के पास बझारी बिगड़ा।
खुन्न के पास गड़ाई बिगड़ा।
चौकी के पास लक्ष्मीनारायण बिगड़ा।
एक पैर से आगे खिसका,
गडूम के पास पहुंचा,
गडूमी नाग बिगड़ा।

तेई बोलो दूहै भाहुड़ रौहमै घाटे सौंगड़े,
धूप पाची कौरी खायै,
मैं बोलो तौहलै घाटौ मूं नि पाणो।
मोहरूऐ मुजुई गांठी काटी मुट्ठी ढाकी,
कान्हीं औंगड़ी फेरी मरूटी सेरी पजेरी।
मैं बोलो सत प्रतप होय ना,
खौड़े मौरदा साई होणी।

उसने कहा दोनों भई रहेंगे घाटे तंगी में,
धूप बती करके खायेंगे,
मैंनें कहा तुझे घाटा मैं नहीं डालूंगा।
मोहरू मुजुई बांधी निकाली मुट्ठी पकड़ी,
छोटी अंगुली फेरी मरूटी सेरी पहुंचाई।
मैंनें कहा सत प्रताप होगा नहीं,
खड़े मरद जैसा होगा,

कुल्लुई

दोती निहाणी लै सौत न होय,
ता गौड़ी नाठो।
दोती धिनी दृष्टा,
ता खौड़ै मरदा सान हुई।
एकी पैरे आगूं सीको,
शमशर भीतरी पूजो,
शमशरी टाम्बुओ।
तेई बोलो देश मुल्क रौहो नि आथी,
सेवकी चाकरी रौह।
दैहणी थांबडू नाचणा खेलणा लै दें,
बांवी थांबड़ थान वास दें।
मैं बोलो सबकी चाकरी करने वाड़े मूं नि आथी।
एकी पैरे आगू सीको,
शंघाण भीतरी पूजो,
टौणै नाग टाम्बुओ।
तेई बोला दूहै भाहरू घाटै सोंगै रोहमें,
धूप पाची बांडी सौगै खाहमें।
मैं बोलो तौम्हें घाटौ मूं नि पाणो।
एकी पैरे आगू सीको,
डौहवी भीतरै पूजो,
चजाई नाग टाम्बुओ।
तेई बोलो दूही भाई घाटै सौंहगै रोहमै।
एकी पैरे आगू सीको,
नरैण गौड़ा भीतरी पूजो,
लक्ष्मी नरैण टाम्बुओ।

हिन्दी अनुवाद

सुबह होने पर सत नहीं होगा,
वह गौड़ी गया।
सुबह दी दृष्टि,
तो खड़े मरद की तरह हुई।
एक पैर से आगे खिसका,
शमशर के पास पहुंचा,
शमशरी बिगड़ा।
उसने कहा देश मुलक रहा नहीं है,
सेवक नौकर बनकर रह।
दायें स्थान नाचने खेलने को दूं,
वहां स्थान थान वास दूं।
मैंनें कहा सबकी नौकरी करने वाला में नहीं हूं।
एक पैर से आगे खिसका,
शंघाण के पास पहुंचा,
टुणू नाग बिगड़ा।
वह बोला दोनों भाई घाटे में रहेंगे,
धूप बती बांट के खायेंगे।
मैंनें कहा तुझे घाटा में नहीं डालूंगा।
एक पैर से आगे खिसका,
डोहवी भीतर पूजो
चजाई नाग बिगड़ा।
उसने कहा दोनों भाई घाटे में रहेंगे।
एक पैर से आगे खिसका,
नरैण खडड के पास पहुंचे,
लक्ष्मी नारायण बिगड़ा।

तेई बोलो दूही भाहरू घाटै सौंहगै रोहमै।
एकी पैरे आगू सीको,
शलाट भीतरी नाठो,
मारकण्डै टाम्बुओ।
तेई बोलो शाठकी औकड़ी गाड़,
दौंबी मौंबी धूप पाची बांडी खाहमै।
मैं बोलो तौलै घाटौ कौरनै आडौ मूं नि आथी।

उसने कहा दोनों भाई घाटे में रहेंगे।
एक पैर से आगे खिसका,
शलाट के पास गया,
मार्कण्डेय बिगड़ा।
उसने कहा साठ की सूखी खड्ड,
तू मैं धूप बती बांट के खायेंगे।
मैंनें कहा तुझे घाटा डालने वाला मैं नहीं हूं।
एक पैर से आगे खिसका,

कुल्लुई

एकी पैरे आगू सीको,
डौहवी के पास पहुंचा,
बझाडै भीतरी पूजो,
बरशाम कीओ।
एकी पैरे आगू सीको,
बाड़ी भीतरै पूजो,
तिदी गोसरू नाग गोसरा शोहंदौ तो लागो नो।
मैं बोलो औ कै कौरदा लागो।
तेई बोलो मेरी मातै बोलो नौ जिदी तेरे।
छिकियो कादू चूटै,
तिदी गोसरा शूही कौरी जाहगा सुधाए।
मैं बोलो गोसरै जाहगा मूं नि रौंहदो।
चौपथरी जाहगा नांहू जिदी आठ शाठ ढाला होए,
थान थापणा ले।
एकी पैरे आगू सीको,
क्वाई थाचा भीतरी पूजो,
तिदी शरोगू वनास देवता टाम्बुओ।
तेई बोलो चौण खीमने धारदै एदै आ,
धूप पाची बांडी कौरी खाहमै,
मैं बोलो ताहमै घाटौ मूं नि पाणौ।
एकी पैरे आगू सीको,
कूटा भीतरी नाठो,
कटासी टाम्बुओ।
चौन हार चौन दरबारी,
धारदी पूरदी बौरशै बाकरी छमाही ओ धार।

हिन्दी अनुवाद

एक पैर से आगे खिसका,
डोहबी के पास पहुंचा।
बझांडे के पास पहुंचा,
विश्राम किया।
एक पैर से आगे खिसका,
बाड़ी के पास पहुंचा,
वहां गोसरू नाग गोबर निकालने में लगा था।
मैंनें कहा यह क्या कर रहे हो?
वह बोला मेरी माता ने कहा है नहीं जिद तेरी।
छिके में कुछ टूटा,
उसने गोवर निकालकर जगह ठीक की।
मैं बोला गोबर की जगह मैं नहीं रहता।
मै साफ जगह जहां आठ साठ परिवार होंगे,
स्थान स्थापित करुंगा।
एक पैर से आगे खिसका,
क्वाई थाच के पास पहुंचा,
वहां शरोगू वनास देवता बिगड़ा।
उसने कहा, चार खीमने धार इधर है,
धूप बती बांट कर खायेंगे,
मैंनें कहा, तुझे घाटा मैं नहीं डालूंगा।
एक पैर से आगे खिसका,
कूट के पास पहुंचा,
कटासी बिगड़ा।
चार हारी चार दरबारी,
ओ धार पूरी वर्ष बकरी छः महीने धार में,

धूप पाचौ खाहमैं,
मैं बोलो ताहमै घाटौ मूं नि पाणो।
एकी पैरे आगू सीको,
लिदिए थाचै पूजो,
वरशाम कीओ।
बीड़ी कुहड़ी की,
कुंगू सदूरी छापौ लाओ।

धूप बती खायेंगे।
मैंनें कहा तुझे घाटा मैं नहीं डालूंगा।
एक पैर से आगे खिसका,
लिदी थाच पहुंचा,
विराम किया।
दातुन बीड़ी कुल्ला किया,
कुंगू सिंदूर की छाप लगाई।

कुल्लुई

एकी पैरे आगू सीकौ,
घोघर धौणै पूजौ,
तिदी घौरटी ता सूतौ ना।
मैं जाणौ चिन्ह तौ एउलै कौरनौ,
चिन्ह कीऔ।
लोहे गानुए शौरू वरसावी,
धौरटी जाड़ौ जौहड़ो कियो।
धिपू फींचू बराबर रिंगड़ काटै,
ता धौरटी मूऔ।
एकी पैरे आगू सीकौ,
स्नीहण भीतरी पूजौ,
स्नीहणी टाम्बुओ।
तेई बोलो माणा मरीछा शाड़ी दाड़ी,
बोलो जाहगा मेड़नी।
गाड़ी न बोले जाहगा न मेड़नी,
लड़ागी बुछैर रैही नि।
बीला बगोड़ी पूजो,
लुंहडे बौचै झगड़ौ लागौ न।
मोहरूए बूटी एक पेचा,
दोती लै बौरजा सौ।
एक बोला ती पौटी,
दूजै बोला ती पौटी।
एकी पैरे आगू सीकौ,
मरोटी सेरी पूजो,
चार फौलटी फेटी पाई,

हिन्दी अनुवाद

एक पैर से आगे खिसका,
घोघर धोण पहुंचा,
वहां धौरटी सोया था।
मैंनें जाना चिन्ह तो इसको करना है,
चिन्ह किया,
लोहे के गोले ओले बरसाये।
धरती जाड़ा जौहरा किया,
धिपू फिंचू बराबर रिंगल निकाले,
तो धौरटी मरा।
एक पैर से आगे खिसका,
स्रीहण के पास पहुंचा,
स्रीहणी बिगड़ा।
उसने कहा मानव राक्षस दानव,
बोला जगह मिलेगी।
गाली न दे के जगह नहीं मिलनी।
लड़ागी बुछैर रही नहीं,
बीला बगोड़ी पहुंचा,
लूंहडे के बच्चे झगड़ने लगे थे।
मोहरू का पेड़ एक उखाड़ा,
सुबह को बड़ा हुआ वह।
एक बोला तूनें उखाड़ी,
दूसरा बोला तूनें उखाड़ी।
एक पैर से आगे खिसका,
मरोटी सेरी पहुंचा,
चार तख्ते फेटे डाले,

चार फौलटी खड़ी कौरी।
चार थाम्बडू खौड़े कौरै,
जा तरकाड़ौ चोडू भडेड़ो फेर फागड़ी,
तिथी लाई बैठो।
आपू लाई साता कौणी,
माणू लाई आने कौणी।

चारे खड़े किए,
चार खम्बे खड़े किए।
उन सबके जोड़कर फिर फागली,
त्योहार लगा बैठा।
स्वयं को लगाया सत धन।
मानव को लगाया अन्न धन।

अजिमल सोयल

कुल्लुई

आसै चार भाईडू ती।
गिरमल, थिरमल, सिंहमल, अजिमल।
ज़ोता एठै रौहा ती,
कठै मिलिया चला ती।
एकी घेंरै वाच केरी बेठे,
दूर देशा वै जाणा ती।
गिरमल बनोगी जाई बेठा,
सिंहमल गाहर जाई बेठा।
थिरमल धारा,
हाऊं रोमणी एज़ी बेठा।
शागा रा झोटडू खोली बेठा।
जसी रा बड़ा टबर ती,
जसी रा टबर पाळी बेठा।
एकी न शौठ बणाई बेठा।
घड़े आन्दर एज़ी बेठा,
रीछन बराघन खोली बेठा।
धियाड़ी निहारा केरी बेठा,
जसी रै तवै वि नई बेठी।
जसी यै तवै शोख पुकारी,
क्यारै मोंझै पाणी खोली बेठा।
जसी न पाणी प्याई बेठा,
जसी तवै वि नकार केरी बेठा।
जसी संघै डुघा न एज़ी बेठा।

अजिमल सोयल

हिन्दी अनुवाद

हम चार भाई थे।
गिरमल, थिरमल, सिंहमल, अजिमल।
जोत के नीचे रहते थे,
इकट्ठे मिलकर चलते थे।
एक बार बिचार कर बैठे,
दूर देश को जाना था।
गिरमल बनोगी जा बैठा,
सिंहमल गाहर जा बैठा।
थिरमल धारा,
मैं रोमणी आ बैठा।
साग का पौधा उगा बैठा।
जसी का बड़ा परिवार था,
जसी का परिवार पाल बैठा।
एक से साठ बना बैठा।
घड़े के अन्दर आ बैठा,
रीछ बाघ खोल बेठा।
दिन में अन्धेरा कर बैठा,
जसी के तब भी नहीं बैठी।
जसी को तब प्यास लगी,
क्यार के अन्दर पानी खोल बैठा।
जसी को पानी पिला बैठा।
वहां से जसी मुझे,
जसी तब भी इन्कार कर बैठा।

तौखै न जसी मुम्हें,
किलटै न सोयल पजाई बेंठा।
तौखै सौत भूईं रा,
कोठी न आपणा स्थान बणाई बेठा।
आपणा राज़ चलाई बेठा।

जसी के साथ डुघ में आ बैठा,
किलटे में सोयल पहुंचा बैठा।
वहां सात मंज़िल की,
कोठी में अपना स्थान बना बैठा।
अपना शासन चला बैठा।

जीव नारायण जाणा

कुल्लुई

उतरकुंठा न रौहा ती।
तौखै साधण साधुई निसी।
आगै राह देई बेठा,
पिती ज़ेह एज़ी बेठा।
ठारह करडू संधै वाच वोन्ही बेठा।
पिती सुनी भोटली मेली बेठी,
सुनी संधै आगै राह ज़ेहई देई बेठा।
प्रीणी भीतरै एज़ी बेठा,
पुहाला संधै बचन बोन्ही बेठा।
गीरूआ भीतरै एज़ी बेठा,
कोठी ज़ेहई बणाई बेठा।
आगे राह जेहई देई बेठा,
पारशा भीतरै एज़ी बेठा।
लेदी पुहाला संधै
राह ज़ेहई देई बेठा,
चन्द्र खणी पुजी बेठा,
जमलू संधै वाच वोन्ही बेठा।
जमलू मलाणा भेज़ी बेठा,
हाऊं जाणा पूजी बेठा।
जेठा जाणा कोन्हा मलाणा।
नालग सौह एज़ी बेठा,
झाणगू ठाकरा संधै,
जुआ पासा खेली बेठा।

जीव नारायण जाणा

हिन्दी अनुवाद

उतराखंड में रहते थे।
वहां साधना में मन नहीं लगा।
अगले रास्ते चल बैठा,
स्पिति में आ बैठा।
अठारह करडू के साथ बचन बांध बैठा।
स्पिति में सुनी भोटली मिल बैठी,
सुनी के साथ अगले रास्ते चल बैठा।
प्रीणी के पास आ बैठा,
बचन बांध बैठा।
गीरूआ के पास आ बैठा,
कोठी जैसे बना बैठा।
आगे रास्ते चल बैठा,
पारशा के पास आ बैठा।
लेदी पुहाल के साथ
रास्ते में चल पड़ा।
चन्द्रखणी पहुंच बैठा,
जमलू के साथ वचन बांध बैठा।
जमलू मलाणा भेज बैठा,
मैं जाणा आ बैठा।
बड़ा जाणा छोटा मलाणा।
नालग सौह में आ बैठा,
झाणगू ठाकर के साथ,
जुआ पासा खेल बैठा,

झाणगू ठाकरा वै हराई बेठा,
सौत बहणी संधै वाच वोन्ही बेठा।
दोतो संघै हौथ मलाई बेठा।
दोती औउतरा ती,
सौत पुत्र देई बेठा।
पुत्र कमतै ती,
तिनरा नाश केरी बेठा।
थान थापण केरी बेठा।

झाणगू ठाकर को हरा बैठा।
सात बहनों के साथ वचन बांध बैठा।
दोतो के साथ हाथ मिला बैठा।
दोतो वे औलाद था,
सात पुत्र दे बैठा।
पुत्र बिगड़ैल थे,
उनका नाश कर बैठा।
स्थान स्थापित कर बैठा।

पंचम् अध्याय
किन्नौर की देव भार्था

बैरिङ् नाग बैरिङ

किन्नौरी

हाया बे होना याली हाया बे याली होना यालि,
दुगोलेयोदङ् शोङाली दुगोलेयो यालि दङ् शोङ्।
रोणचोसी निरायाली रोणा चोसी याली नीरयालि,
किशो नागासु गीथङाली किशो नागासु गीथङ्।
किशो नागासु गीथङाली किशो नागासु याली गीथङालि,
ज़ी बइरङ् नागासाली ज़ी बइरङ्लि नागस।
उपच़ोन्दो लागे याली उपच़ोन्दो याली लागेयालि,
बइरङ् बोरालोचाली बइरङ् बोयालि रालोच।
बइरङ् बोरालोचाली बइरङ् बोयाली रालोचालि,
सी प्रोलो बइरङाली सी प्रोलायालि बइरङ्।
रोवङ् डारेयागिशाली रोवङ् डायाली रेयागीशालि,
सी प्रोलु ओम्सी याली सी प्रोलु यालि ओम्सी।
उपच़ोन्दो लागे याली उपच़ोन्दो याली लागे यालि,
साता युङा-रिङायाली साता युङालि-रिङा।
पाँच भइता गुप्ती याली पाँच भइ याली गुप्ती यालि,
दुइ भइता प्रोप्ती याली दुइ भइ तालि प्रोप्ती।
रोवङ् डारेयागिशाली रोवङ् डायाली रेयागिशाली,
क्यो रोचु रोवङाली क्यो रोचु आलि रोवङ्।
रोवङ् क्यो रोचु आली रोवङ् क्यो आली रोचुआलि,
हर ता क्यो दाङु आली हर ता क्यो यालि दाङु।
हर ता क्यो दाङु आली हर ता क्यो याली दाङु आलि,
किरकोन्दो लागे याली किरकोन्दो यालि लागे।
किरकोन्दो लागे याली किरकोन्दो याली लागेयालि,

बैरिड. नाग बैरिङ

हिन्दी अनुवाद

वहाँ से नीचे वहाँ से नीचे,
सुनते रहें, सुनते रहें, हमारे नाग (देव) का गीत।
हमारे नाग (देव) का गीत।
हमारे नाग (देव) का गीत, हमारे नाग (देव) का गीत,
बैरिङ् नाग (देव) जी, बैरिङ् नाग (देव) जी।
उत्पन्न होने लगे, उत्पन्न होने लगे,
बाहरी बोराल से, बाहरी बोराल से।
बाहरी बोराल से, बाहरी बोराल से,
सिंह द्वार से बाहर, सिंह द्वार से बाहर।
(अपना) रूप बदला, (अपना) रूप बदला,
सिंह द्वार के आगे, सिंह द्वार के आगे।
उत्पन्न होने लगे, उत्पन्न होने लगे,
सात भाई-बहिन, सात भाई-बहिन।
पाँच भाई तो गुप्त हैं, पाँच भाई तो गुप्त हैं,
दो भाई तो प्रकट हैं, दो भाई तो प्रकट हैं।
(नागदेव ने) रूप बदला, (नागदेव ने) रूप बदला,
कस्तूरा का रूप, कस्तूरा का रूप।
रूप कस्तूरा का, रूप कस्तूरा का,
स्वर तो मोणाल का, स्वर तो मोणाल का।
स्वर तो मोणाल का, स्वर तो मोणाल का,
बाँग देने लगे, बाँग देने लगे।
बाँग देने लगे, बाँग देने लगे,
स्वर तो मोणाल का, स्वर तो मोणाल का।

हर ता क्यो दाङु आली हर ता क्यो यालि दाङु।
हर ता क्यो दाङु आली हर ता क्यो आली दाङु आलि,
रोवङ् क्यो रोचु आली रोवङ् क्यो यालि रोचु।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रनग्योशालि,
गुगलाटो बाले याली गुगलाटो यालि बाले।
किरकोन्दो लागे याली किरकोन्दो याली लागे यालि,
हर ता क्यो दाङु आली हर ता क्यो यालि दाङु।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रनग्योशालि,

स्वर तो मोणाल का, स्वर तो मोणाल का,
रूप कस्तूरा का, रूप कस्तूरा का।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
गुगलाट (क्षेत्र के) शीष पर, गुगलाट (क्षेत्र के) शीष पर।
(वहाँ वे) बाँग देने लगे, (वहाँ वे) बाँग देने लगे,
स्वर तो मोणाल का, स्वर तो मोणाल का।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,

किन्नौरी

बोरसोरिचु बइरङाली बोरसोरिचु यालि बइरङ।
बोरसोरिचु बइरङाली बोरसोरिचु याली बइरङालि,
बइरङ ज़ङपाने याली बइरङ ज़ङालिपाने।
बायोचु कुमग्योशाली बायोचुयाली कुमग्योशाली,
अनेलोयाशाली पन्दरशो आने लोयाशालि पन्दरशो।
ज़िगेनालाङिस शोङायाली ज़िगेनालाङिसाली शोङायालि,
हाटाकोटी देवीयुदायाली हाटाकोटी यालि देवीयुदा।
हाटाकोटी देवीयुदायाली हाटाकोटी देयाली बीयुदायालि,
शुम रइसीयु बाणायाली शुमरइसीयु यालि बाणा।
शुम रइसीयु बाणायाली शुमरइसीयु याली बाणायालि,
ओड़ोच़ी चुगोयाली ओड़ोच़ी यालि चुगो।
हाटाकोटी देवीयुदायाली हाटाकोटी देयाली वीयुदायालि,
राओ राए छ़ेली याली राओ राय यालि छ़ेली।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्य दायङाली रणग्योशाली,
खोशेदारु कुमो आली खोशेदारु यालि कुमो।
खोशेदारु कुमो आली खोशेदारु याली कुमोयालि,
नौ लोखी मासु आली नौ लोखी यालि मासु।
मासूस ता लोतोशाली मासूस ता यालि लोतोशालि,
ज्येष्टस यान ज्येष्टसाली ज्येष्टस यानालि ज्येष्टस।
ज्येष्टस यान ज्येष्टसाली ज्येष्टस यानाली ज्येष्टसालि,
गअ ली कीन रङ बतोकाली गअ ली कीन रङालि बतोक।
गीन्यान्या करग्योशयाली गीन्यान्याली करग्योशालि,
ज़ाखङ् बायाङु देनायाली ज़ाखङ् बायाङु आलि देना।
नुचाला शोङायाली नुचालायाली शोङायालि,
च़िसरालु महादेवाली च़िसरालु यालि महादेव।

हिन्दी अनुवाद

बोरसोरिचृ के बाहर, बोरसोरिचृ के बाहर।
बोरसोरिचृ के बाहर, बोरसोरिचृ के बाहर,
बाहरी ज़ङपने पर, बाहरी ज़ङपने पर।
(वहाँ) अनुज को सुलाया, (वहाँ) अनुज को सुलाया,
स्वयं ने पन्द्रह शोको घेरा, स्वयं ने पन्द्रह शोको घेरा।
जिगेनाले से नीचे, जिगेनाले से नीचे,
हाटकोटी देवी के पास, हाटकोटी देवी के पास।
हाटकोटी देवी के पास, हाटकोटी देवी के पास,
तीन राज्यों की सीमा, तीन राज्यों की सीमा।
तीन राज्यों की सीमा (पर), तीन राज्यों की सीमा (पर),
खूँटी गाड़ रहे, खूँटी गाड़ रहे।
हाटकोटी देवी के पास, हाटकोटी देवी के पास,
एक सौ आठ बलि, एक सौ आठ बलि ।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
खोशेधार के भीतर, खोशेधार के भीतर।
खोशेधार के भीतर, खोशेधार के भीतर,
नौलोखी महासुदेव, नौलोखी महासुदेव।
महासु (देव) ने कहा, महासु (देव) ने कहा,
जेठा हे जेठा!, जेठा हे जेठा।
जेठा हे जेठा!, जेठा हे जेठा,
मैं भी आपके साथ जाऊँगा, मैं भी आपके साथ जाऊँगा।
(उन्हें) ससम्मान लाए, (उन्हें) ससम्मान लाए,
(अपनी) दाहिनी बाँह पर, (अपनी) दाहिनी बाँह पर।
उस पार के नीचे, उस पार के नीचे
चिसरालु महादेव, चिसरालु महादेव।

महादेवस लोतोशली महादेवसाली लोतोशालि,
ज्येष्टसु यान ज्येष्टसाली ज्येष्टसु यानालि ज्येष्टस।
ज्येष्टसु यान ज्येष्टसाली ज्येष्टस यानाली ज्येष्टसालि
गअ ली कीन रङ बतोकाली गअ ली कीन रङालि बतोक।
गीन्यान्या करग्योशाली गीन्यान्याली करग्योशालि,
ज़ारीचु कुमोआली ज़ारीचुयालि कुमो।
बइरङ् ज़ङपाने याली बइरङ् ज़ङालीपाने यालि,

महादेव ने कहा, महादेव ने कहा,
जेठा हे जेठा!, जेठा हे जेठा।
जेठा हे जेठा!, जेठा हे जेठा,
मैं भी आपके साथ जाऊँगा, मैं भी आपके साथ जाऊँगा।
(उन्हें भी वे) ससम्मान लाए,(उन्हें भी वे) ससम्मान लाए,
क्रो(देवपात्र) के भीतर(डालकर),क्रो(देवपात्र) के भीतर(डालकर)।
बाहरी ज़ड्पने पर, बाहरी ज़ड्पने पर,

किन्नौरी

बायुचु सरग्योशाली बायुचु यालि सरग्योश।
बायुचु सरग्योशाली बायुचु याली सरग्योशालि,
पाशोचि़ी खेलोशाली पाशोचि़ी यालि खेलोश।
पाशोचि़ी खेलोशाली पाशोचि़ी याली खेलोशालि,
दन्तेयो पाशिङाली दन्तेयो यालि पाशिङ्।
दन्तेयो पाशिड. मालोनाली दन्तेयो पाशिङ् मालोनालि,
रूप्यो पाशिङाली रुप्यो यालि पाशिङ।
रुप्यो पाशिड. मालोनाली रुप्यो पाशिड.ली मालोनालि,
सुनेयो पाशिड.ली सुनेयोयालि पाशिड.।
बायुचु रणग्योशाली बायुचु याली रणग्योशालि,
शाटुशा ताङणु आली शाटुशा यालि ताङणु।
शाटुशा ताङणु आली शाटुशा याली ताङणु आलि,
खोशो ज़ंगालो आलि खोरशो ज़ङालिगालो।
आने टिचिगीश सुनेयो पेठार आने टिचिगीशाली सुनेयो पेठारालि,
कैलाश सरतान माटिङाली कैलाश सरतानालि माटिङ्।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्चा दायङाली रणग्योशालि,
दोंदेयो सोमोदेनाली दोंदेयो सोयालिमोदेन।
ञेटङ् रिङज़ेयो शेच्योशाली ञेटङ् रिङज़ेयो आलिशेच्योशालि,
ञेटङ् रिङज़ेयो शेचिग्योशाली ञेटङ् रिङ ज़ेयो याली शोचिग्य़ोालि,
नङदङ् पाटुलायाली नङदङ् पायालि दुला।
नङदङ् पाटुलायाली नङदङ् पायाली दुलायालि,
ज़ोलङ् नागिनें याली ज़ोलङ् नायालि गीने।
इत रिङज़ेयो शेच्योशाली इत रिङज़ेयो याली शेच्योशालि,
बेशटोरु युमस्कोआली बेशटोरु यालि युमस्को।
पालोचु युठङाली पालोचु यालि युठङ्।

हिन्दी अनुवाद

अनुज को जगाया, अनुज को जगाया।
अनुज को जगाया, अनुज को जगाया,
(और उनके साथ) पासा खेला, पासा खेला।
पासा खेला, पासा खेला,
(हाथी) दाँत का पासा, (हाथी) दाँत का पासा।
(हस्ति) दाँत का पासा न कहें, (हस्ति) दाँत का पासा न कहें,
चांदी का पासा, चांदी का पासा।
चांदी का पासा न कहें, चांदी का पासा न कहें,
सोने का पासा, सोने का पासा।
अनुज को दिया, अनुज को दिया,
शाटुशा तङ्णु (क्षेत्र), शाटुशा तङ्णु (क्षेत्र)।
शाटुशा तङ्णु, शाटुशा तङ्णु,
खरशु जंगल में, खरशु जंगल में।
स्वयं ने लिया सुवर्ण पेठार (खड़ग) स्वयं ने लिया सुवर्ण पेठार,
कैलाश पवित्र भूमि, कैलाश पवित्र भूमि।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
दोंदेयो समतल पर, दोंदेयो समतल पर।
युगल बहनों को भेजा, युगल बहनों को भेजा,
पार पाटुला, पार पाटुला।
पार पाटुला, पार पाटुला,
जोलङ् नागिनें, जोलङ् नागिनें।
एक बहिन को डाला, एक बहिन को डाला,
(अपनी) वेणी के पीछे, वेणी के पीछे।
युगल बहिनों को डाला, युगल बहिनों को डाला,
(अपने) पल्लू के नीचे, (अपने) पल्लू के नीचे।

योचाला डेनायाली योचाला याली डेनायालि,
नंगीसा रोलायाली नंगीसा यालि रोला।
नंगीसा रोलायाली नंगीसा याली रोला यालि,
कारु पोरोलेसाली कारु पोयालि रोलेस।
व्याहोच़ी मांगोयाली व्याहोच़ीयाली मांगो यालि,
कारु पोरोलेसाली कारु पोयालि रोलेस।
ब्याहो ना देनो आली ब्याहो ना याली देनो आलि,

नीचे से ऊपर, नीचे से ऊपर,
नंग (धड़ंग) रोला, नंग (धड़ंग) रोला।
नंग (धड़ंग) रोला, नंग (धड़ंग) रोला,
कारु देव कारु देव।
विवाह (के लिए) मांग रहा है, विवाह (के लिए) मांग रहा है,
कारु देव कारु देव।
विवाह (के लिए जाई) नहीं देनी, विवाह (के लिए जाई) नहीं देनी,

किन्नौरी

बोरालो ज़ाईयाली बोरालो यालि ज़ाई।
फरगी पोलटेयाग्यो आली फरगी पोलाटेयाग्यो आलि,
कारु पोरोलेसाली कारु पोयालि रोलेस।
दोग्च दायङ रणग्योशाली दोग्च दायङाली रणग्योशालि,
पुरदुम खोनाच़ो आली पुरदुम खोयालि नाच़ो।
नुचाला लोआ याली नुचाला याली लोआ यालि,
याकेस नारेणासाली याकेस ना यालि रेणस।
ऊलोन च़ी बिलोनाली ऊलोन च़ी यालि बिलोनालि,
पुरदुम खोनाच़ो आली पुरदुम खोयालि नाच़ो।
ऊलोन च़ी बिलोनाली ऊलोन च़ी याली बिलोनालि,
थुच शोङ् ती संसाराली थुच शोङ् ती यालि संसार।
थुच शोङ् ती संसाराली थुच शोङ् ती याली संसारालि,
योचरिङ ती बोयो आली योचरिंग ती यालि बोयो।
योचरिङ ती बोयो आली योचरिंग ती याली बोयोआलि,
मौलस रङ् भन्जसाली मौलस रङालि भन्जस।
मौलेसिस लोतोशाली मौलेसिसाली लोतोशालि,
भन्जस यान भन्ज़ाली भन्जसयानालि भन्जस।
भन्जस यान भन्जासाली भन्जसयानाली भन्जसालि,
पवङ् केम ग्यातो आली पवङ् केमालि ग्यातो।
पवङ् केम ग्यातो आली पवङ् केमाली ग्यातोआलि,
नु डुबोर पावङाली नु डुबोरालि पावङ्।
नागेसिस रणग्योशाली नागेसिसाली रणग्योशालि,
नु ता डुबोर पावङाली नु ता डुबोरालि पावङ्।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रणग्योशालि,
दाखेनङ पानुदेना याली दाखेनङ् पानु यालि देना।

हिन्दी अनुवाद

बोराल की जाई, बोराल की जाई।
झट से लौट गया, झट से लौट गया,
कारु देव कारु देव।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
पुरदुम समतल में, पुरदुम समतल में।
पार से इधर(आए), पार से इधर(आए),
याकेस नरेणस (देव),याकेस नरेणस (देव)।
गले मिले, गले मिले,
पुरदुम समतल में, पुरदुम समतल में।
गले मिले, गले मिले,
ऊपर से नीचे पानी सामान्य है, ऊपर से नीचे पानी (बहना) सामान्य है।
ऊपर से नीचे पानी (बहना) सामान्य है, ऊपर से नीचे पानी सामान्य है,
नीचे से ऊपर को पानी बहा रहे हैं, नीचे से ऊपर को पानी बहा रहे हैं।
नीचे से ऊपर को पानी बहा रहे हैं, नीचे से ऊपर को पानी बहा रहे हैं,
मामे और भान्जे, मामे और भान्जे।
भान्जे हे भान्जे! भान्जे हे भान्जे! ।
भान्जे हे भान्जे! भान्जे हे भान्जे!,
(हमें) चरागाह देना पड़ेगा, चरागाह देना पड़ेगा।
(हमें) चरागाह देना पड़ेगा, चरागाह देना पड़ेगा,
वह डुबोर चरागाह, वह डुबोर चरागाह।
(याकेस) नाग (देव) ने दिया, (याकेस) नाग (देव) ने दिया,
वह डुबोर चरागाह, वह डुबोर चरागाह।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
शुपिङ् चड़् के ऊपर, शुपिङ् चड़् के ऊपर।
एक बहिन को भेजा, एक बहिन को भेजा,

दोग्च दायङ् रणग्य्रोाली दोग्च दायङाली रणग्य्रोाली,
शूपिङ् चाड़ो देना याली शूपिङ् चाड़ो यालि देना।
इत रिङ ज़ेयो शेच्योशाली इत रिङज़ेयो याली शेच्योशालि,
नङदङ् बीतिङलायाली नङदङ् बीयालि तिङला।
नङदङ् बीतिङलायाली नङदङ् बीयाली तिङला यालि,
शक बोठङुयोठङाली शक बोठङु आलि योठङ्।
शक बोठङु योठङाली शक बोठङु आली योठङालि,

नङ्दङ् बितिङला, नङ्दङ् बितिङला।
नङ्दङ् बितिङला, नङ्दङ् बितिङला,
भुर्ज वृक्ष के नीचे, भुर्ज वृक्ष के नीचे।
भुर्ज वृक्ष के नीचे, भुर्ज वृक्ष के नीचे,
बुखरी भर पानी, बुखरी भर पानी।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
मामा ने कहा, मामा ने कहा,

किन्नौरी

बुखरिङ् बङ् पाणी याली बुखतिरङ् बङालि पाणी।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रणग्योशालि,
कुप्पु क्यलमोदायाली कुप्पु क्यलयालि मोदा।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रणग्योशालि,
येनदेन जोलारिङाली येनदेन ज़ोयालि लारिङ।
ञेटङ रिङज़ेयो शेच्य़ोाली ञेटङ रिङज़ेयो याली शेच्योशालि,
येनदेन जोलारिङाली येन देन ज़ोयालि लारिङ।
येनदेन जोलारिङाली येन देन ज़ोयाली लारिङालि,
यालु झाखरो युठङाली यालु झाखरो आलि युठङ्।
यालो झाखरो युठङाली यालो झाखरो आली युठङालि,
ज़ोगास रङ् ज़ोगमोन्ती याली ज़ोगास रङालि ज़ोगमोन्ती।
दोग्च दायङ् रणग्योशाली दोग्च दायङाली रणग्योशालि,
माथन्रिक रगुदेनाली माथन्रिकालि रगुदेन।
दोम्या तोचिग्योशाली दोम्या तोयाली चिग्योशालि,
चे़थु रङ् मागु आली चे़थुरङालि मागु।
रोथङ् बोण्याग्योशाली रोथङ् बोयालीण्याग्योशालि,
चे़थु रङ् मागुसाली चे़थु रङालि मागुस।
दोम्यातोचिग्योशाली दोम्यातोयाली चिग्योशालि,
गेगु लेलान रङ् रितोच़ डोमङाली गेगु लेलान रङ् रितोच़ डोमङ्।
रितोच़ डोमङ् रङाली रितोच़ डोयाली मङ रङालि,
समटेया चामङाली समटेया यालि चामङ।
बङसार बोण्याग्योशाली बङसार बोयालीण्याग्योशालि,
छितकुल कुशारङाली छितकुल कुयालि शारङ्।
सुनेयो पेठार ओरु आली सुनेयो पेठाराली ओरुआलि,
रुप्यो पेठार पोरु आलि रुप्यो पेठारालि पोरु।

हिन्दी अनुवाद

बुखरी पर पानी भरा, बुखरी पर पानी भरा।
वहां से कुलॉच भरी वहां से कुलॉच भरी,
कुप्पु क्यल-मङ् के पास, कुप्पु क्यल-मङ् के पास।
निचले ज़ोलारिङ्, निचले ज़ोलारिङ्।
युगल बहिनों को भेजा, युगल बहिनों को भेजा,
निचले ज़ोलारिङ्, निचले ज़ोलारिङ् ।
निचले ज़ोलारिङ्, निचले ज़चोलारिङ,
कुजा झाड़ियों में, कुजा झाड़ियों में।
कुजा झाड़ियों में, कुजा झाड़ियों में,
जोगास और जोगमन्ती, जोगास और जोगमन्ती।
वहाँ से कुलाँच भरी, वहाँ से कुलाँच भरी,
मथन्निक चट्टान पर, मथन्निक चट्टान पर।
उस समय (सांगला में) थे, उस समय (सांगला में) थे,
रोथङ् (देवरथ) बनाया, रोथङ् (देवरथ) बनाया,
चे़थु और मगु ने, चे़थु और मगु ने।
उस समय (सांगला में) थे, उस समय (सांगला में) थे,
गेगु लेलान और रितोच़ लोहार, गेगु लेलान और रितोच़ लोहार।
रितोच़ लोहार और, रितोच़ लोहार और,
समेटया जुलाहा, संमेटया जुलाहा।
बइसार (भाईचारा) बनाया, बइसार बनाया,
छितकुल कुशा (के) साथ, छितकुल कुशा(के) साथ।
सुवर्ण पेठार (खड़ग) अरे लिया, सुवर्ण पेठार (खड़ग) अरे लिया,
रजत पेठार परे दिया, रजत पेठार परे दिया।
उस समय खेले, उस समय खेले,
मामे और भान्जे, मामे और भान्जे।

दोम्या योचिग्योशाली दोम्यायाली योचिग्योशालि,
मौलेस रङ् भन्जसाली मौलेस रङालि भन्जस।
मौलस ता बिराला ली मौलस तायाली बिरालालि,
भन्जस ता मुशो आली भन्जस तायालि मुशो।
खाई कोटेयागिशाली खाई कोयाली टेयागिशालि,
रुतुरङ्स बइरङाली रुतुरङ्स यालि बइरङ। बोयाया शेच्योशाली बोयाया याली शेच्योशालि, पाणीचु तालाबाली पाणीचु यालि तालाब।

मामा (बने) बिल्ली, मामा (बने) बिल्ली,
भान्जा (बने) चूहा, भान्जा (बने) चूहा।
खाई खोदी, खाई खोदी,
रुतुरङ् से बाहर, रुतुरङ् से बाहर।
बहा दिया, बहा दिया,
पानी के तालाब को, पानी के तालाब को।
चेथु और मगु, चेथु और मगु।

नरेणस असरङ्

किन्नौरी

गोली गो होना हो ली हायाबे होना,
गोली गो होना।
दोग डेन-डेन बीमा होली खगोइ असरङ
दोग डेन-डेन बीमा।
खगोइ असरङ होली मजङ सन-तङो,
खगोइ असरङ।
मजङ सन-तङो होली नरेणस डोमबोर
मजङ सन-तङो।
नरेणस डोमबोर होली खगो-लगो थोम्याओ,
नरेणस डोमबोर
डोमबोरस लोतोश होली अङ शुमनिज़ा पोरज़ा,
डोमबोर लोतोश।
अङ शुमनिज़ा पोरज़ा होली इचु बातङ रिङतोक,
अङ शुमनिज़ा पोरज़ा।
पोरज़ास ता लातोश होली किनठ-बातङ तोआ,
पोरज़ास ता लातोश।
हेद-ठ-बातङ मानी होली शुभ बोषङ बियेश,
हेद-ता-बातङ मानी।
शुभ बोषङ बियेश होली लिद-फु नङ बल-फु
शुभ बोषङ बियेश।
लिद-फु नङ बल-फु होली बेच़ो सोरङच़ो,
लिद-फु नङ बल-फु।
बेच़ो सोरङच़ो होली सोतिङ कनमो बीमो,

नरेणस असरङ्

हिन्दी अनुवाद

गोली गो होना होली हायावे होना,
गोली गो होना।
वहां से ऊपर ऊपर जाये तो उंचाई वाला क्षेत्र असरड.,
ऊंचाई वाला क्षेत्र असरड.।
ऊंचाई वाला क्षेत्र असरड. (गांव के) बीच सनतड. में,
ऊंचाई वाला क्षेत्र असरड.।
बीच सनतड. में नरेणस डोमबोर (देवता),
बीच सनतड. में।
नरेणस देव ऊंचाई वाले क्षेत्र की रक्षा किये हुए हैं,
नरेणस देव।
देवता ने कहा, हे, मेरे तीन बीस प्रजा,
देवता ने कहा।
मेरे तीन बीस प्रजा मुझे एक बात कहनी है,
मेरे तीन बीस प्रजा।
प्रजा ने कहा, आपकी क्या बात है?
प्रजा ने कहा।
दूसरी कोई बात नहीं है, तीन वर्ष बीत गए,
दूसरी कोई बात नहीं।
तीन वर्ष बीत गए लिद्-फु बल-फु कण्डे (जाना है),
दूसरी कोई बात नहीं।
लिद्-फु बल-फु बीच़ सरोवर में,
लिद्-फु बल-फु।
बीच सरोवर में सत लाने जाना है,

बेच़ो सोरङच़ो।
शुमनिज़ा पोरज़ा होली निश गुद हाथ जोडेयाऔ,
शुमनिज़ा पोरज़ा।
निश गुद हाथ जोडेयाऔ होली निङ खुसीस रोनचोच,
निश गुद हाथ जोडेयाऔ।
तैयारी ली हचिगेश होली शुम निज़ाउले छङा,
तैयारी ली हचिगेश।
बुल-बुली सङचो होली हुन बीमिक हचे,

बीच सरोवर में।
तीन बीस प्रजा दो हाथ जोड़ रही है,
तीन बीस प्रजा।
दो हाथ जोड़ रही है हम खुशी से सुनेंगी,
दो हाथ जोड़ रही है।
तैयार हुई तीन बीस की संतान,
तैयार हुई।
सुबह के पहले उजास के साथ अब जाना हुआ,

किन्नौरी

बुल-बुली सङ्चो।
हुन बीमिक हचे होली लिद-फु नङ बल-फु
हुन बीमिक हचे।
दोग डेन- डेन बीमा होली सेरिङ पुरिङो कुमो,
दोग डेन- डेन बीमा।
सेरिङ पुरिङो कुमो होली इ-रातिङ बेठी,
सेरिङ पुरिङो कुमो।
दोग डेन- डेन बीमा होली लिद-फुनङ बल-फु,
दोग डेन- डेन बीमा।
लिद-फुनङ बल-फु होली बेच़ो सोरङ्च़ो,
लिद-फुनङ बल-फु।
बेच़ो सोरङ्च़ो होली इ-रातिङ बेठी,
बेच़ो सोरङ्च़ो।
बुल-बुली सङ्च़ो होली शुम निजाऊ छङा,
बुल-बुली सङ्च़ो।
शुम निजाऊ छङा होली पूज़ाच़ी लनग्योश,
शुम निजाऊ छङा।
पूज़ाच़ी लनग्योश होली सोतिङली कदग्योश,
पूज़ाच़ी लनग्योश।
सोतिङली लेशिश होली दोग शोङ-शोङ बदग्योश,
सोतिङली लेशिश।
दोग शोङ-शोङ बदग्योश होली कड.ते बेरिंङ देन,
दोग शोड.-शोड. बदग्योश।
कङते बेरिंङ देन होली पूज़ाच़ी लनग्योश,
कङते बेरिंङ देन।

हिन्दी अनुवाद

सुबह के पहले उजास के साथ।
अब जाना हुआ लिद्-फु बल-फु,
अब जाना हुआ।
वहां असरड. से ऊपर ऊपर जाये तो पोरड. सेरी में,
वहां असरड. से ऊपर ऊपर।
पोरड. सेरी में एक रात बैठे,
पोरड. सेरी पर।
वहां असरड. से ऊपर जाये तो लिद्-फु बल-फु,
वहां असरड. से उपर उपर जाये तो।
लिद्-फु बल-फु बेच़ सरोवर में,
लिद्-फु बल-फु।
बीच़ सरोवर में एक रात बैठे,
बीच़ सरोवर में।
सुबह के पहले उजास के साथ तीन बीस की संतान,
सुबह के पहले उजास के साथ।
तीन बीस की संतान ने पूजा की,
तीन बीस की संतान ने।
पूजा की सत यानि शक्ति लाई,
पूजा की।
सत लेकर वहां से नीचे नीचे आई,
सत लेकर।
वहां से नीचे नीचे आई, कड.ते पर्वत पर,
वहां से नीचे नीचे आई।
कड.ते पर्वत पर पूजा की गई,
कड.ते पर्वत पर।

नङ कोचङ ख्यामा होली अनेनु मठ-लस डोङखङ,
नङ कोचङ ख्यामा।
भनजस लोतोश होली अङ मउलस डोङ खङ,
भनजस लोतोश।
अङ मउलस डोङ खङ होली ठोटी शंकरस,
अङ मउलस डोङ खङ।
ठोटी शंकरस नङ होली ग़ङलङ नागेनी,

उस पार देखें तो आपके मउलस यानि मामे,
उस पार देखें तो।
भनजस यानि भानजे ने कहा, मेरे मउलस,
भनजस यानि भानजे ने कहा।
मेरे मउलस ठोटी के शंकरस यानि शंकर,
मेरे मउलस।
ठोटी के शंकरस और मड.लड. की नागिन,

किन्नौरी

ठोटी शंकरस।
मङलङ नागेनी होली मुलु पोलकी रङ,
मङलङ नागेनी।
मुलु पोलकी रङ होली ज़ङु टिकङ रङ,
मुलु पोलकी रङ।
मङलङ नागेनी होली ज़ङई पिपन रङ,
मङलङ नागेनी।
मङलङ नागेनी होली ग-शोङ ली म-जबक,
मङलङ नागेनी।
ग-शाङ ली म-जबक होली नो क्वी ख थानङो,
ग-शोङ ली म-जबक।
हल मा जबाा होली भनजसु तईंस,
हल मा जबाा।
होटेयो होटङसी होली जबमिकी ग्याशो,
होटेयो होटङसी।
जबमिकी ग्याशो होली शुम बोषङु इ-यब,
जबमिकी ग्याशो।
शुम बोषङु इ-यब होली भनजसु तईंस,
शुम बोषङु इ-यब।
दोग शोङ-शोङ बनना होली फुल-लङ मटिङु देन,
दोग शोङ-शोङ बनना।
फुल-लङ मटिङु देन होली पुज़ा च़ी लनग्योश,
शुम निजाऊ छङ।
मउलस नङ भनजस होली मेलाच़ी लनग्योश,
मउलस नङ भनजस।

हिन्दी अनुवाद

ठोटी के शंकरस।
मड.लड. की नागिन चांदी की पालकी के साथ
मड.लड. की नागिन।
चांदी की पालकी और सोने की बिंदी के साथ,
चांदी की पालकी के साथ।
मड.गलड. की नागिन सोने की ही वेणी के साथ
मड.लड. की नागिन।
मड.लड. की नागिन ने कहा मैं नीचे नहीं उतरूंगी,
मड.लड. की नागिन ने कहा।
मैं नीचे नहीं उतरूंगी, उस कुक्कर विष्टा आस्थान में,
मैं नीचे नहीं उतरूंगी।
कैसे नहीं उतरेगी भानजे की खातिर,
कैसे नहीं उतरेगी।
बड़े हठ करने पर उतरना चाहा,
बड़े हठ करने पर।
उतरना चाहा तीन वर्ष में एक बार,
उतरना चाहा।
तीन वर्ष में एक बार भनजस के खातिर,
तीन वर्ष में एक बार।
वहां से नीचे नीचे आयें तो फुल-लड. जगह पर
वहां से नीचे नीचे आयें तो।
फुल-लड. जगह पर पूजा की,
तीन बीस की संतान ने।
मउलस और भनजस ने मेला लगाया,
मउलस और भनजस ने।

दोग शोङ-शोङ बनना होली सेरिङ पुरिङ देन,
दोग शोङ-शोङ बनना।
सेरिङ पुरिङ देन होली पूज़ाची लनग्योश,
ठोटी के शंकरस।
सेरिङ पुरिङ देन।
पूज़ाची लनग्योश होली शुम निज़ाऊले छङा,
पूज़ाची लनग्योश।

वहां से नीचे नीचे आयें तो पोरड. सेरी पर,
वहां से नीचे नीचे आयें तो।
पोरड. सेरी पर पूजा की,
पोरड. सेरी पर।
पूजा की तीन बीस की संतान ने,
पूजा की।
वहां से नीचे नीचे आये तो पोरड. सेरी पर,

किन्नौरी

दोग शोङ-शोङ बदग्योश होली तकपनङ लम छवङचो,
दोग शोङ-शोङ बदग्योश।
तकपनङ लम छवङचो होली मऊलस नङ भनजस,
तकपनङ लम छवङचो।
शुभ निजाऊ गोयने होली तोशिम ली बीग्योश,
शुभ निजाऊ गोयने।
तोशिम ली बीग्योश होली गुदो दुपङ-कोरङ नङ,
तोशिम ली बीग्योश।
छुगशे ली मुगशे होली शुम निज़ाऊ गोयने,
छुगशे ली मुगशे।
दोग लो-लो बनना होली चुम लागङु ओमपी,
दोग लो-लो बनना।
चुम लागङु ओमपी होली मउलस नङ भनजस,
चुम लागङु ओमपी।
मउलस नङ भनजस होली जलखाच़ी लनग्योश,
मउलस नङ भनजस।
जलखाच़ी लनग्योश।
मेलाच़ी लनग्योश होली मऊलस नङ भनजस,
मेलाच़ी लनग्योश।
दोग लो-लो बदग्योश होली असरड. थानङु देन,
दोग लो-लो बदग्योश।
असरड. थानङु देन होली शुभ निजाऊ छङा,
असरड. थानङु. देन।
शुभ निजाऊ छङा होली पूज़ाच़ी लनग्योश,
शुभ निजाऊ छङा।
मेलाच़ी लनग्योश होली मऊलस नङ भनजस,
मेलाच़ी लनग्योश।

हिन्दी अनुवाद

वहां से नीचे नीचे आये।
तकपनड. लमछवड.च़ पर मउलस भनजस,
तकपनड. लमछवड.च़ पर।
तीन बीस की स्त्रियां स्वागत के लिए गई,
तीन बीस की स्त्रियां।
स्वागत के लिए गई हाथ में धूप तथा कोरड. के साथ,
स्वागत के लिए गई।
मिले जुले तीन बीस की स्त्रियां,
मिले जुले।
वहां से इधर उधर आये तो बौद्ध विहार के सामने,
वहां से इधर उधर आये तो।
बौद्ध विहार के सामने मउलस भनजस,
बौद्ध विहार के सामने।
मउलस और भनजस ने (बौद्ध विहार का) दर्शन किया,
मउलस और भनजस ने।
दर्शन किया पूजा की,
दर्शन किया।
मेला लगाया मउलस और भनजस ने,
मेला लगाया।
वहां से इधर उधर आये असरड. के देव आस्थान पर,
वहां से इधर उधर आये।
असरड. के देव स्थान पर।
असरड. के देव।
तीन बीस की संतान ने पूजा की,
तीन बीस की संतान ने।
मेला लगाया मउलस और भनजस ने,
मेला लगाया।

षष्टम् अध्याय
चम्बा की देव भार्थाएं

सृष्टि गाथा ढोलरू

चम्बयाली

पहला ता नां लेइये नारैण दा, हां पहला ता,
जिनी सारी सृस्टी बणाई न, हां पहला ता।
दुज्जा ता नां लेइये माई बाप दा न, हां दुज्जा ता,
जिनी जम्मेयां दसेया संसारा न, हां दुज्जा ता।
त्रीया ता नां लेइये गुरू अपणे दा न, हां त्रीया ता,
जिनी सारी विद्या दसी न, हां त्रीया ता।
चौथा ता नां लेइये धौले बैल दा न, हां चौथा ता,
जिनी थम्में धरणी दे भारे न, हां चौथा ता।
पंजमा ता नां लेइये पंज पंडवा दा, हां पंजमा ता,
जिन्हां भाइया धर्म कमाया ना, हां पंजमा ता।
भौरा ता पुच्छेदा उस भौरियां जो, हां भौरा ता,
डालिया उस कदु होणा न, हां भौंरा ता।
भाली ता लेयां भौरा पंज सते, हां भाली ता,
आई गेया चैत्र महीना न, हां भाली ता।
सिया ता पुछैदी गौरजा माई जो, हां सिया ता,
सिवा केहर कुण बेड़ा होणा न, हां सिया ता।
सुन्नी ता परोली राम रूपे थम्मे न, हां सुन्नी ता,
सिवा केरा एइयो बेहड़ा होण ता, हां सुन्नी ता।
तुसी ता जियो भाईयो सुणदेयों, हां तुसी ता,
असां ता आए वरा दियां वारी, हां तुसी ता।
जुग जुग जियो तुसां भाईयां दियां जोड़ियां हो, जुग जुग,
ठाकर रज्जी पजाओ हां तुसा, न जुग जुग।
असी ता आये भाईयों वरा देयां, हां असी ता,

सृष्टि गाथा ढोलरू

हिन्दी अनुवाद

पहला ता नाम लेना नारायण का, हां पहला तो,
जिसने सारी सृष्टि बनाई, हां पहला तो।
दूसरा ता नाम लेना मां बाप का, हां दूसरा तो,
जिसने जन्म देकर दिखाया संसार न, हां दूसरा तो।
हां तीसरा ता नाम लेना गुरू अपने का न, हां तीसरा तो,
जिसने सारी विद्या पढ़ाई न, हां तीसरा तो।
चौथा ता नाम लेना धबल नंदी बैल का न,हां चौथा तो,
जिसने थामा धरती का भार न, हां चौथा तो।
पांचवा ता नाम लेना पांच पांडवों का, हां पांचवा तो,
जिन भाइयों ने धर्म कमाया न, हां पांचवा तो
भौरा ता पूछता है भौरियां से, हां भौरा तो
डाल सम्पूर्ण कब होगी न, हां भौंरा तो।
देख तो ले भौंरा पांच सात दिन, हां देख तो ले,
आ गया चैत्र महीना न, हां देख तो।
सीता पूछती है गौरजा मां को, हां सीता तो।
शिव का कौन महल है न हां सीता तो
सोने का द्वार राम रूप ने थामा, हां सोने तो,
शिव का यह महल होगा न, हां सोने तो।
आप जीबन भर सुनते रहो, हां तुम तो,
हम आये साल बाद बधाई देना, हां तुम तो।
युग युग जियो तुम भाईयों की जोड़ियां ,युग-युग।
विष्णु तुम्हें समृद्धि दे तुम्हें जुग-जुग।
हम साल बाद आपके द्वार आये, हां हम तो,

तुसी ता सुणेयो भाईयो जुगा जुगा, हो तुसी ता।
भला तां बंदेया जीभा बोलणा, हां भला ता,
करि लेणा हत्थे केरा दान, हां भला ता।
मत ता करे रामा मेरी मेरी, हां मत ता,
इक दिन भसमा दी ढेरी, हां मत ता।

तुम सुनते रहे युगों युगों तक, हां तुम तो,
भला तो बन्दे जीभ से बोलना, हां भला तो,
कर लेना हाथ से दान, हां भला तो
मत कर राम मेरी-मेरी, हां मत तो,
एक दिन भस्म की ढेरी, मत तो।

सूही माता चम्बा

चम्बयाली

खड़ी ता उठ मेरी रौलण राणिए,
होई जांदा भ्यागा दा बेला हां।
खड़ी ता उठ मेरी चम्बे दी राणिए,
होई जांदा न्हाणेदा बेला हां
सेइयो-सेइयो राणी वो माहणुओ,
छम-छम नैणे लगी रूणा हां।
होर तो होर सब सौखी वो माहणुओ,
चम्बे मेरी पाणी औखी हां।
झिक्के देसे रे हुड़ूडे जो आये राणिए,
हाजर सदाए हां।
कुस्स कमे सदे वो राणिए,
कै कम बणे हमारे हां।
होर ता होर सब सौखी वो हुड़ूडेयो,
चम्बे मेरे पाणी दी औखी हां।
दुखी मत होये मेरी चम्बे दिये राणिए,
पाणी ता दिंग्गे बग्गाई हां।
सेइयो-सेइयो हुड़ूडे वो राणिए,
कुल्ह मलूणा जो भेजे हां।
पहली फट मारी वो हुडडेयां,
निकलेया धूड़ धुड़ेंना हां।
दुज्जी फट मारी वो हुडडेयां,
निकलेयां चिक्कड़ चैहला हां।
त्रीजी फट वाही वो हुड़ूडेयां,

सूही माता चम्बा

हिन्दी अनुवाद

खड़ी उठ मेरी विस्तर से रानी,
हो गई प्रभात की बेला है।
खड़ी तो उठ मेरी चम्बे की रानी,
हो गई नहाने की बेला है।
वही-वही रानी वो मनुष्यो,
छम-छम नैन से लगी रोने है।
और तो सब कुशल है मनुष्यो,
चम्बे में मेरे पानी की कमी है।
निचले देश के मिस्त्री जो आए,
रानी ने हाज़िर बुलाये हैं।
किस काम से बुलाये रानी ने,
क्या हुक्म बना हमारा है।
और तो और सब ठीक है,
चम्बे मे पानी की कमी है।
दुखी मत हो मेरी चम्बे की रानी,
पानी देंगे बहाई है।
वही-वही मिस्त्री रानी के,
कुल्ह मलूण को भेजे हैं।
पहली कुदाली मारी मिस्त्री ने,
निकली धूल ही धूल है।
दूसरी कुदाली मारी मिस्त्री ने,
निकला कीचड़ ही कीचड़ है।
तीसरी कुदाली मारी मिस्त्री ने,

निकली धूड़ी दी मुंडी हां।
मंगदी मनुखा दी मुंडी हां,
मंगदी मनुखा दी मुंडी हां।
सेइयो-सेइयो राणी वो माहणुओ,
राणी का हाजर जे होये न।
त्रीजी फट वाही जो राणिए,
निकली धुड़ी दी मुंडी हां।
हां-हां मंगदी मनुखा दी मुंडी,

निकला धूल का सिर है।
मांगती मनुष्य का सिर है,
मांगती मनुष्य सिर है।
वही-वही रानी के पास मनुष्य,
रानी के पास हाज़िर हुए न।
तीसरा वार किया रानी,
निकली धूल की मुंडी है।
हां मांगती मनुष्य का सिर है,

चम्बयाली

मनुखा दी हां-हां।
तां जे भेजणा राजा मैं अपणा,
न्याय कुण भाई करगां हां।
तां जें भेजणा घुंघरू बेटा,
राज खिल्ले पेई जाणा हां।
तां मैं भेजणी गुड्डी धियां,
दिसा खिल्ली पेई जाणी हां।
सददे ता हिन् कनेड़ु कहारा,
पालकी कसणा जो लाई हां।
सेइयो-सेइयो हटे वो राणिए,
कुल्ह मलूणा जो जाये हां।
रोआ-रोआ मत मेरेओ बच्चेओ,
कुल्ह पुजी घरे औणा हां।
सेइयो-सेइयो राणी वो माहणुओ,
कुल्ह मलूणा रेई जाई हां।
होर ता होर सब दबो वो महणुओ,
पैरा जो मत मेरे दबदे हां।
इल्ली ता इल्ली मेरी गुड्डियां धियां,
मोचड़ू पहनने होल्ले हां।
होर ता होर सब दबो वो माहणुऔ,
जंघ जो मत मेरी दबदे हां।
इल्ली ता इल्ली मेरी गुड्डियां ·बेटी,
सोथणू पहनने होल्ले हां।
होर ता होर सब दबो वो माहणुओ,
छाती जो मत मेरी दबदे हां।

हिन्दी अनुवाद

मनुष्य की हां-हां
जब मैंनें भेजना राजा अपना,
न्याय किसने भाई करना है।
जब मैं भेजुंगी घुघरू बेटा,
राज खाली पड़ जाना है।
जब मैं भेजूंगी गुडी बेटी अपनी,
दिशा खाली पड़ जानी है।
बुलाओ उन कनेड़ू कहारों को,
पालकी तैयार कर रहे हैं।
वही-वही मिस्त्री रानी के,
कुल्ह मलूण से लानी है।
रोओ तो रोओ मत मेरे बच्चो,
कुल्ह पहुंचकर घर आना है।
हां वही-वही रानी मनुष्यो,
कुल्ह मलूण जा पहुंची है।
और तो और सब दबा दो लोगो,
पैर को मेरे मत दबाना है।
आएगी तो आएगी मेरी गुड्डी बेटी,
जूते पहनने आनी है।
और सब दबा दो लोगो,
जांघें मेरे मत दबाना है।
आएगी तो आएगी मेरी गुड्डी बेटी,
मेरी सलवार पहने आनी है।
और सब दबा दो लोगो, छाती मेरे नहीं दबानी है।
आएगा तो आएगा मेरा प्यारा घुघरू बेटा,

इल्ला ता इल्ला मेरा घुंघरू बेटा,
मम्मे जो पीणे होल्ले हां
होर ता होर सब दबो वो महणुओ,
बीणी जो मत मेरी दबदे हां।
इल्ली ता इल्ली मेरी गुड्डियां बेटी,
सर पहरणा होल्ला हां।
सेइयो-सेइयो राणी वो माहणुओ,

स्तन पीने आना है।
और सब दबा दो लोगो,
चुटिया मेरे मत दबाना है।
आएगी तो आएगी मेरी गुड्डी बेटी,
मेरे बाल संवारने आनी है।
सेइयो-सेइयो रानी ओ लोगो,
छप-छप पानी लगा आने है।

चम्बयाली

छप्पी-छप्पी लगी जाणा हां।
राणी से छप्पी लगी जाणा माहणुओ,
पाणी से बग्गी लगा आणा हां।
तेरे से बच्चे राणी बता मंझ,
भालणा लगोरे हां।
तुसी ता सब आये चुगानुओ,
अम्मा इधी किनी आई हां।
अस्सी ता अग्गे चली आए ओ,
आई जनसालु दी हल्ले हां।
सुणा ता सुणा मेरे जनसालुओ भाइयो,
अम्मां इधी किनी आई हां।
अस्सी-अस्सी अगरे आए,
आई सैह भरमौरी दी टोली हां।
सुणा ता सुणा मेरे भरमौरियो भाईयो,
इधी अम्मा किनी आई हां।
सेइयो-सेंइयो बच्चे वो माहणुओ,
हटी से महलां जो आए हां।

हिन्दी अनुवाद

ढक कर छुपने लगी है।
रानी से छुप लगी जाना लोगो,
पानी की धार बहने लगी है।
तेरे वो बच्चे रानी रास्ते में,
इंतज़ार करने लगे हैं।
तुम तो सब आये चौगान वालो,
मां इधर क्यों नहीं आई है।
हम तो आगे चले आये,
वो जनसाली की टोली के साथ आ रही है।
सुनो तो सुनो मेरे जनसालु के भाईयो,
अम्मां इधर क्यों नहीं आई है।
हम तो सब आगे आए,
वह भरमौर वालों की टोली के साथ है।
सुनो-सुनो मेरे भरमौरियो भाईयो,
इधर मां क्यों नहीं आई है।
सेइयो-सेइयो बच्चे वो लोगो,
हट के महल को आये हैं।

सप्तम् अध्याय
लाहुल की देव भार्थाएं

धरती माता पट्टन

लाहुली पट्टनी

धरती मातायें त्रियें कूड़ी जामे जी हो,
धरती मातायें त्रियें कूड़ी जामे जी हो।
ज्येठा-ज्येठा कुड़िये नमु-नारेणा व्याही जी ओ,
ज्येठा-ज्येठा कुड़िये नमु-नारेणा व्याही जी ओ।
तेटी-कणा कुड़िये पंजा पांडुआ व्याही जी ओ,
तेटी-कणा कुड़िये पंजा पांडुआ व्याही जी ओ।
तेटे-कणा कुड़िये लचा चारूणी गेयी जी ओ,
तेटे-कणा कुड़िये लचा चारूणी गेयी जी ओ।
राहु डोमे यो चोरी कारी नेयी जी ओ,
राहु डोमे यो चोरी कारी नेयी जी ओ।
सूरज चन्दुरा-ये हेड़ेणु गेयी जी ओ,
सूरज चन्दुरा-ये हेड़ेणु गेयी जी ओ।
हेड़ेणु गेयां-ये पाछामा मुलुके गेयी जी ओ,
हेड़ेणु गेयां-ये पाछामा मुलुके गेयी जी ओ।
पाछामें मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ,
पाछामें मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ।
पेटेनु गेयी-से दाखाणा मुलुके जी ओ,
पेटेनु गेयी-से दाखाणा मुलुके जी ओ।
दाखाणा मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ,
दाखाणा मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ।
पेटेनु गेयी-ये पूरबाला मुलुके जी ओ,
पेटेनु गेयी-ये पूरबाला मुलुके जी ओ।
पूरबाला मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ,

धरती माता पट्टन

हिन्दी अनुवाद

धरती माता की तीन पुत्रियां पैदा हुई जी ओ,
धरती माता की तीन पुत्रियां पैदा हुई जी ओ।
वड़ी पुत्री नारायण संग व्याही जी ओ,
वड़ी पुत्री नारायण संग व्याही जी ओ।
उससे छोटी पुत्री पांच पांडवों के संग व्याही जी ओ,
उससे छोटी पुत्री पांच पांडवों के संग व्याही जी ओ।
उससे कनिष्ट पुत्री भेड़ बकरी चराने गई जी ओ,
उससे कनिष्ट पुत्री भेड़ बकरी चराने गई जी ओ।
राहु डोम अपहरण कर ले गया जी ओ,
राहु डोम अपहरण कर ले गया जी ओ।
सूरज चन्द्रमा शिकार को गये जी ओ,
सूरज चन्द्रमा शिकार को गये जी ओ।
शिकार करते हुए पश्चिम दिशा में गये जी ओ,
शिकार करते हुए पश्चिम दिशा में गये जी ओ।
पश्चिम देश में उन्हें मिरग नहीं मिला जी ओ,
पश्चिम देश में उन्हें मिरग नहीं मिला जी ओ।
देखते गये वो दक्षिणी देश को जी ओ,
देखते गये वो दक्षिणी देश को जी ओ।
दक्षिण देश में मिरग नहीं मिला जी ओ,
दक्षिण देश में मिरग नहीं मिला जी ओ।
ढूंढते गये वे पूरब देश को जी ओ,
ढूंढते गये वे पूरब देश को जी ओ।
पूर्व देश में उन्हें मिरग नहीं मिला जी ओ,

पूरबाला मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ।
पेटेनु गेयी-ये ऊतुड़ा मुलुके जी ओ,
पेटेनु गेयी-ये ऊतुड़ा मुलुके जी ओ।
ऊतुड़ा मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ,
ऊतुड़ा मुलुके-यो मिरगासु नायी जी ओ।
सूरजा चन्दुरा-ये भूखेनु भूखे जी ओ,
सूरजा चन्दुरा-ये भूखेनु भूखे जी ओ।
हेड़ेणु गेया-यो बिन्दरा बाणे जी ओ,

पूर्व देश में उन्हें मिरग नहीं मिला जी ओ।
ढूंढते गये वे उत्तर देश को जी ओ,
ढूंढते गये वे उत्तर देश को जी ओ।
उत्तर देश में मिरग मिला नही जी ओ,
उत्तर देश में मिरग मिला नही जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वे भूखे के भूखे जी ओ,
सूरज चन्द्रमा वे भूखे के भूखे जी ओ।
शिकार करते वो विन्दरा बन गये जी ओ,

लाहुली

हेड़ेणु गेया-यो बिन्दरा बाणे जी ओ।
सूरजा चान्दुरा-ये आखोरा बाणे जी ओ,
सूरजा चान्दुरा-ये आखोरा बाणे जी ओ।
आखोरा बाणे-यो मिरगासु मारी जी ओ,
आखोरा बाणे-यो मिरगासु मारी जी ओ।
मिरूगा मारी-ये चुली चौकी दिती जी ओ,
मिरूगा मारी-ये चुली चौकी दिती जी ओ।
चुली चौकी दिती-ये रासौणी पाड़ी जी ओ,
चुली चौकी दिती-ये रासौणी पाड़ी जी ओ।
रासौणी पाड़ी-ये रासुणी खायी जी ओ,
रासौणी पाड़ी-ये रासुणी खायी जी ओ।
रासौणी खायी-ये त्रीक्षा लगाई जी ओ,
रासौणी खायी-ये त्रीक्षा लगाई जी ओ।
सूरजा चन्दुरा-ये पाणी तोपोणी गेयी जी ओ,
सूरजा चन्दुरा-ये पाणी तोपोणी गेयी जी ओ।
बून्हे प्रेणाड़े-यो खादुरा पाणी जी ओ,
बून्हे प्रेणाड़े-यो खादुरा पाणी जी ओ,
सूरजा चन्दुरा-ये उपुके प्रेणाड़े गेयी जी ओ,
सूरजा चन्दुरा-ये उपुके प्रेणाड़े गेयी जी ओ।
ऊपुरू प्रेणाड़े-यो नीम्बुड़ा पाणी जी ओ,
ऊपुरू प्रेणाड़े-यो नीम्बुड़ा पाणी जी ओ।
लोंगा प्रेणाड़े-यो एका स्त्री आसे जी ओ,
लोंगा प्रेणाड़े-यो एका स्त्री आसे जी ओ।
सूरज चन्दुरा-ये पूछणी लागी जी ओ,
सूरज चन्दुरा-ये पूछणी लागी जी ओ।

हिन्दी अनुवाद

शिकार करते वो विन्दरा बन गये जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वो घनघोर जंगल गये जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वो घनघोर जंगल गये जी ओ।
घनघोर जंगल में उन्होंने मिरग मारा जी ओ,
घनघोर जंगल में उन्होंने मिरग मारा जी ओ।
मिरग मार के उन्होंने चुल्हा चौका दिया जी ओ
मिरग मार के उन्होंने चुल्हा चौका दिया जी ओ।।
चुलहा चौका देकर वे खाना बनाने लगे जी ओ,
चुलहा चौका देकर वे खाना बनाने लगे जी ओ।
भोजन पका के वे भोजन खाने लगे जी ओ,
भोजन पका के वे भोजन खाने लगे जी ओ।
भोजन खाके उन्हें प्यास लगी जी ओ,
भोजन खाके उन्हें प्यास लगी जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वो पानी तलाशने गये जी ओ,
सूरज चन्द्रमा वो पानी तलाशने गये जी ओ।
नीचे नाले में वो खदला पानी जी ओ,
नीचे नाले में वो खदला पानी जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वो ऊपर वाले नाले में गये जी ओ,
सूरज चन्द्रमा वो ऊपर वाले नाले में गये जी ओ।
ऊपर के नाले में निर्मल पानी जी ओ,
ऊपर के नाले में निर्मल पानी जी ओ।
मध्य नाले में एक स्त्री चुपचाप बैठी जी ओ
मध्य नाले में एक स्त्री चुपचाप बैठी जी ओ।
सूरज चन्द्रमा वे पूछने लगे जी ओ,
सूरज चन्द्रमा वे पूछने लगे जी ओ।

बाथेरी माणुये बाथे जोगू गाछे जी ओ,
बाथेरी माणुये बाथे जोगू गाछे जी ओ।
बोलो स्त्री री कुणु तेरी माता जी ओ,
बोलो स्त्री री कुणु तेरे पिता जी ओ।
बाथेरी माणुये क्याये पांजाणा लागी जी ओ,
बाथेरी माणुये क्याये पांजाणा लागी जी ओ।
सूरजा चन्दुरा-ये फिरी-फिरी पुछन्दायी जी ओ,

पथ के पथिक अपने रास्ते जाओ जी ओ,
पथ के पथिक अपने रास्ते जाओ जी ओ।
बोली स्त्री कौन तेरी माता जी ओ,
बोली स्त्री कौन तेरे पिता जी ओ।
ओ पथ के पथिक क्या प्रयोजन लगा जी ओ,
ओ पथ के पथिक क्या प्रयोजन लगा जी ओ।
सूरज चन्द्रमा पुनः पुनः पूछने लगे जी ओ,

लाहुली

सूरजा चन्दुरा-ये फिरी-फिरी पुछन्दायी जी ओ।
बोला स्त्री री कुणु तेरी माता जी ओ,
कुणु तेरी माता ये कुण तेरे पिता जी ओ।
विष्णु बराड़ी ये मेण्डुणे पिता जी ओ,
धरती माता ये मेण्डुणे माता जी ओ।
सूरजा चन्दुराये मुंहे-मुंहे हेरी जी ओ,
सूरजा चन्दुराये मुंहे-मुंहे हेरी जी ओ।
राहुरे घारओ क्याये कामा करिला जी ओ,
राहुरे घारेओ क्याये कामा करिला जी ओ।
नौपुरी तषुणये नौपूरी तुषुणा जी ओ,
नौपुरी तषुणये नवे पूरी तुषुणा जी ओ।
राहुरे घारेओ क्याये खाणा खायेला जी ओ,
राहुरे घारेओ क्याये खाणा खायेला जी ओ।
शिबराका कुटी-ये माण्डा पकाई जी ओ,
शिबराका कुटी-ये माण्डा पकाई जी ओ।
चन्दुरा भाईये अपुणी बौड़ी चीरी जी ओ,
चन्दुरा भाईये अपुणी बौड़ी चीरी जी ओ।
सूरजा चन्दुरा बहणी धरती माता लेई जी ओ,
सूरजा चन्दुरा बहणी धरती माता लेई जी ओ।

हिन्दी अनुवाद

सूरज चन्द्रमा पुनः पुनः पूछने लगे जी ओ।
बोलो स्त्री कौन तेरी माता जी ओ,
कौन तेरी माता कौन तेरे पिता जी ओ।
विष्णु बराह मेरे पिता जी ओ,
धरती माता मेरी माता जी ओ।
सूरज चन्द्रमा मुंह ताकने लगे जी ओ,
सूरज चन्द्रमा मुंह ताकने लगे जी ओ।
राहु के घर में क्या काम करती जी ओ,
राहु के घर में क्या काम करती जी ओ।
नौ मंज़िल को बुहारती नौ मंज़िल की लिपाई करती जी ओ,
नौ मंज़िल को बुहारती नौ मंज़िल की लिपाई करती जी ओ।
राहु के घर में क्या खाना खाती जी ओ,
राहु के घर में क्या खाना खाती जी ओ।
चकमक पत्थर पीसके मांडा (परांठा) पकाती जी ओ,
चकमक पत्थर पीस के मांडा (परांठा) पकाती जी ओ।
चन्द्रमा भाई ने अपनी जांघ चीर ली जी ओ,
चन्द्रमा भाई ने अपनी जांघ चीर ली जी ओ।
सूरज चन्द्रमा बहन को धरती माता के पास ले गई जी ओ,
सूरज चन्द्रमा बहन को धरती माता के पास ले गई जी ओ।

त्रिलोकीनाथ

पट्टनी (लाहुल)

तुंदे री राणा ये, पोहाला राखि जी हो।
हिणुसेरा ग्राएं ओ, पोहाला राखि जी हो।
टिण्डु पोहाला ये, भेड़ा-बाकुरी चारि जी हो।
भेड़ा बाकुरी ये, मेई-घेरी धारे जी हो।
रोज़े-रोज़े ओ, मेई-घेरी धारे जी हो।
मेई-घेरी धारे ओ, निजी-मूरता आसे जी हो।
निजी मूरता ओ, सता मूरति निगुती जी हो।
सता मूरति ओ, खेला खेलान-दे जी हो।
रोज़े-रोज़े ओ, भेड़ा-बाकुरी दुहन-दे जी हो।
दूधा दुह-न-दे ओ, स्नाना कीतिं जी हो।
पोहाला पुतुरा ओ, यादा बिसुरी जी हो।
रोज़े-रोज़े ओ, यादा विसुरी जी हो।
चूरूरे सींगे ओ, पथुरा बाणाई जी हो।
बोटी साहिवी णी, चुरू दुहने गयी जी हो।
पथुरा छूटी ये, डुगु-रू भणाई जी हो।
बोटी साहिबी णी, गाली पाबाड़ दीति जी हो।
पोहाला पुतुरा ओ, ये-काम्मा क्यारे जी हो।
शुणो-शुणो ये, मेरी अरजा शुणो जी हो।
पोहाला पुतुरा ओ, मेई-घेरी धारा जी हो।
मेई घेरी धारे ओ, निजी मूरति आसे जी हो।
निजी मूरति ओ, सता मूरति निगुती जी हो।
सता मूरति ओ, खेला-खेलान्दे जी हो।
तुंदेरी राणा ओ, हुकुमा दीति जी हो।

त्रिलोकीनाथ लाहुल

हिन्दी अनुवाद

तुंदे के राणा ने, पुहाल रखा जी हो।
हिणुसेरा गांववाले ओ, पुहाल रखा जी हो।
टिण्डु पुहाल ये, भेड़ बकरी चराता जी हो।
भेड़ बकरी ये, मेई-घेरी धार जी हो।
रोज़-रोज़ ओ, मेई घेरी धार जी हो।
मेई-घेरी धार ओ, एक मूर्ति मिली जी हो।
एक मूर्ति ओ, सात मूर्ति निकली जी हो।
सात मूर्ति ओ, खेल खेलने लगी जी हा।
रोज़ रोज़ ओ, भेड़ बकरी दूहती जी हो।
दूध दूहती ओ, स्नान करती जी हो।
पुहाल पुत्र ओ, याद भूला जी हो।
रोज़-रोज़ ओ, याद भूला जी हो।
चुरू के सींग ओ, पत्थर बांधा जी हो।
रानी साहिवा जी, चुरू दूहने गयी जी हो।
पत्थर छूटा ये, टुगरू दूध पात्र फोड़ी जी हो।
रानी साहिवा जी, गाली दी जी हो।
पुहाल पुत्र ओ, ये काम क्या किया जी हो।
सुनो-सुनो ये, मेरी प्रार्थना सुनो जी हो।
पुहाल पुत्र ओ, मेई घेरी धार जी हो।
मेई घेरी धारे ओ, मिली मूरत हम को जी हो।
एक मूर्ति ओ, सात मूरतियां निकली जी हो।
सात मूर्ति ओ, खेल खेलती जी हो।
तुंदे के राणा ओ, हुकम दिया जी हो।

काणा मूरति ये, पीठी चाकि आणे जी हो।
बोटी साहिवा णी, हेरूणी गई जी हो।
प्रभु किशुणा ये, साला मुखा देखि जी हो।
प्रभु किशुणा ये, कोना मुलुके आये जी हो।
तुंदेरी बोटी ये, दिवा संजवाटी चाढ़ि जी हो।
तुंदेरी बोटी ये, श्वे कोरो दीति जी हो।
तंदेरी बोटी ये, श्वे दण्डवाता कीति जी हो!
लोको दुनियां ये, खा बुरा भूये जी हो।

पट्ूटनी

लोको दुनियां ये, हेयणी आये जी हो।
प्रभु किशुणा ये, साला मुखा देखि जी हो।
लोको दुनिया ये, धूप दीप चढ़ाओ जी हो।
लोको दुनियां ये, श्वे कोरो दीति जी हो।
लोको दुनियां ये, श्वे दण्डवाता कीति जी हो।

बनी मूर्ति ये, पीठ उठाके लाई जी हो।
रानी साहिवा जी, देखने गई जी हो।
प्रभु किशन ये, सारा मुख देखा जी हो।
प्रभु किशन ये, किस मुलक से आये जी हो।
तुंदे री बोटी ये, दीपधूप चढ़ाओ जी हो।
तुंदे री बोटी ये, प्रणाम कर दो जी हो।
तुंदे री बोटी ये, प्रणाम दंडवत कर दो जी हो।
लोगो दुनियां ये, क्या बुरा हुआ जी हो।

हिन्दी अनुवाद

लोगो दुनियां ये, हेयणी आये जी हो।
प्रभु किशन ये, सब मुख देखो जी हो।
लोगो दनियां ये, दीपधूप चढाओ जी हो।
लोगो दुनिया ये, प्रणाम कर दो जी हो।
लोगो दनिया ये, प्रणाम दण्डवत करो जी हो।

अष्टम् अध्याय
मण्डी की देव भार्थाएं

काली नाग अनसर

मण्डियाली

सुरगा चुड़ू धौरती पौडू,
वासा पानी में किता फिर सौर समुद्रा।
काजली बिजली बोणै जाई बेठा,
हार पासा खेली बेठा।
एकी पासै हारी बेठा,
दूजै पासै जीती बेठा।
आगै चोहू पासै नज़र देई बेठा,
दिल्ली मोंझै जाई बेठा,
शाठ पराउली खोली बेठा,
शाठ पराउली बन्द केरी बेठा।
एक गुहांडणी खोली बेठा।
आगे नज़र दे बेठा।
गुम्में मोंझै एज़ी बैठा,
लूणोरी गटी कढ़ाई बेठा।
सुनेरी भेंट चढ़ाई बेठा,
तरामली तलाउ बणाई बेठा।
परगास देई वै धर्म देई बेठा।
आगे नज़र दे बेठा,
धारा कहु एज़ी बेठा,
उलटा सुलटा कौहू रगोई बेठा।
फिर चार पासै नज़र देई बेठा,
लाहुल कनाउर जाई बेठा।
चुरू चरवैंग वासते लागे,

काली नाग अनसर

हिन्दी अनुवाद

स्वर्ग से उतरा धरती पर पहुंचा।
रहना जल में किया फिर सर समुद्र,
काजली बिजली वन में जा बैठा।
जुआ पासा खेल बैठा,
एक पारी में हार बेठा,
दूसरी पारी में जीत बैठा।
आगे चारों तरफ नज़र दे बैठा,
दिल्ली के मध्य जा बैठा,
साठ दरवाज़े खोल बैठा,
साठ दरवाज़े बन्द कर बैठा।
एक परोल खोल बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
गुम्मा के पास आ बैठा,
नमक का पत्थर खोल बैठा।
सूने की भेंट चढ़ा बैठा।
तरामली तालाव बना बैठा,
प्रकाश देई को धर्म दे बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
धारा कहू आ बैठा,
उलटा सीधा कहू उगा बैठा।
फिर चारों तरफ नज़र दे बैठा,
लाहुल कनावर जा बैठा।
चुरू वैल हल चलाने लगे,

हां न जाणू तिनरी भाषा,
ते न जाणे मेरी भाषा।
भोट मरेच्छी होन्दी लागी,
आगे नज़र देई बेठा,
टुण्डा बकरू सहुण्डा सरू,
रस्ते में आगै भेजू।
फिरी कांगड़े मोंझै जाई बेठा,
उआर कांगड़ा पार लेंगड़ा केरी बेठा।

मैं न जानूं उनकी भाषा,
वे न जाने मेरी भाषा,
वाद-कुवाद होने लगी।
आगे नज़र दे बेठा,
बिना एक टांग का बकरा टांग वाला किया।
रास्ते मैंनें आगे भेजा।
फिर कांगड़ा के अन्दर जा बैठा
इधर कांगड़ा उधर लैंगड़ा कर बैठा

मण्डियाली

आगे नज़र देई बेठा
सोलंग नाला वासा केरी बेठा।
एक भान्दल मोंझै ठारह नाग,
ठारह नारायण,
बन्द केरी बेठा।
दूध धूप सुआणी रै हाथा में नई पी,
भांदल फूटी नाग नारायण बाहर निकलै।
मौहल गाड़ा एज़ी बेठा,
कुल्लू मण्डी बोण्डा कराई बेठा।
हाटा मोंझै एज़ी बेठा,
पांच पांडवा वै भवन बणाई बेठा।
आगे नज़र देई बेठा,
नगवाईं रौहै रोपै रूहणी कराई बेठा।
घोड़ै रै पंखै बदार जाई बेठा।
आगे नज़र देई बेठा,
शुका सर मोंझै एज़ी बेठा।
सौर समुद्र बणाणा लाऊ,
लफल कानी रै पाथरा रा किरडू पेरी बेठा।
ठारह बीहा राणै मारी बेठा।
सरठी मोंझै दादू वै सौर समुद्र बणाई बेठा।
जेठै चेलै रा पौहरा मनी बेठा।
आगे नज़र देई बेठा,
शुउला टांगरू एज़ी बेठा।
चुलू गाहणै अठारह पेड़ै शरापी बेठा।
आगे नज़र देई बेठा,

हिन्दी अनुवाद

सोलंग नाला में वास कर बैठा।
एक घड़े में अठारह नाग,
अठारह नारायण,
बन्द कर बैठा।
दूध धूप सुहागिन के हाथ मैंनें नहीं पिया,
घड़ा फाड़कर नाग नारायण बाहर निकले।
मौहल खडड के पास आ बैठा,
कुल्लू मण्डी बंटवारा करा बैठा।
हाट के अन्दर आ बैठा,
पांच पांडवों को भवन बना बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
नगवाईं राहतर रोपा में रूहणी करा बैठा।
घोड़े के पंख से बदार जा बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
सूखे सरोवर के पास आ बैठा,
सरोवर समुद्र बनाना शुरू किया।
लफल कानी के पत्थर का किलटा फैंक बैठा।
अठारह बीस राणाओं को मार बैठा।
सरठी के पास दादा को सरोवर समुद्र बना बैठा।
बड़े चेले का पहरा मान बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
शुउला टांगरू आ बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,
चुलू गाहणै अठारह पेड़े को श्राप दे बैठा।
आगे नज़र दे बैठा,

बागी बेवड़ी एज़ी बेठा,
कुणसे बेवड़ी जाई बेठा,
घोड़ा सुआरी केरी बेठा।
अनसरा मौंझै जाई बेठा,
अनसरा रा घोड़ा कुणसे बेंबड़ी,
कुणसे बेंवड़ी रा घोड़ा अनसर बेंबड़ी,
अलखरनी शलखणी पजेरी केरी बेठा।

बागी बेवड़ी आ बैठा,
कुणसे बावड़ी जा बैठा
घोड़ा सवारी कर बैठा।
अनसर के पास जा बैठा,
अनसर का घोड़ा कुणसे बावड़ी,
कुणसे बावड़ी का घोड़ा अनसर बावड़ी।
अलखरनी शलखणी पैदा कर बैठा।

मण्डियाली

बड़ै भाई वै मांहुरी गला ढुणी बेठा,
छोटे भाई न बड़े भाई पूजा कराणी,
बन्द कराई बेठा।
दूई भाई न कारी शरापणी होई बेठी,
अनसरा मोंझै सर समुद्रा बणाई बेठा।
पिण्डी पराण सिरझी बेठा,
गढ़ी वै हाक धवाक देई बेठा।
दूध-घी, बरखा-पाणी रा वरदान देई बेठा,
बागर-शौरू-बन्द कराई बेठा।
श्रावण महीने खीरे पोली खलाई बेठा,
काली कोलुश कराई बेठा।
मेरी भार्था सीठोरी बही,
दहैड़ी उड़ली राती भेंन्दी।

हिन्दी अनुवाद

बड़े भाई के साथ मधु की बातें कर बैठा।
छोटे भाई से बड़े भाई की पूजा करवानी,
बन्द करवाई बैठा।
दो भाईयों में कारी श्राप हो बैठी।
अनसर के पास सरोवर समुद्र बना बैठा,
पिण्डी पराण स्थापित कर बैठा।
गढ़िया को आवाज़ दे बैठा,
दूध-घी, वारिश-पानी का वरदान दे बैठा।
हवा-पानी-ओले बन्द करवा बैठा,
सावन महीने खीर रोटी खिला बैठा।
काली कलुश करा बैठा,
मेरी भार्था निरन्तर प्रवाह, जिसे सुनते सुनाते
दिन अस्त हो जाते हैं, रातें खुल जाती है।

ऋषि पराशर सौराधार

मण्डियाली

ब्रह्मा विष्णु महादेव पन्ने।
राजपाट पाणे वे झगड़ा पेया।
ब्रह्मा बोले राज मेरा।
विष्णु बोले राज मेरा।
ब्रह्मा बोले जैस समुद्रा रे,
उवारले बाढा गे पारले बाढा कुरूला पुजाणा,
तेस्सरा रा राज हुणा।
ब्रेह्म कुरूला केरा आधे समुद्रा पूजा।
दूजा कुरूला विष्णुए किता पारले बाढे पूजा।
ब्रह्मा बोले जेस्स काच्चा कोरा बकरा खाणा,
तेस्सरा राजपाठ होणा।
ब्रह्मा विष्णु काच्चे कोरे बकरे खांदे लगे।
ब्रह्मा बोले खाई निसा,
विष्णु कच्चा कोरा खाई बैठा।
राज पाठ विष्णु वै होन्दा लगा।
प्रथमे चार डण्डी पन्नी,
चऊं डण्डी ते चार पर्वत पन्ने,
चार पर्वतां ते गुरू गोरखनाथ पन्ने।
बाई आखी ते चन्द पन्ने रात प्रैशी किती।
देहणी आखी ते सूरज पन्ने ध्याड़ प्रैशी किती।
काना ते हूरवीर बागर पन्ने,
वासू ते वासुकी नाग पन्ने।
जिभा ते सारासुती पन्ने,

ऋषि पराशर सौराधार

हिन्दी अनुवाद

ब्रह्मा विष्णु महादेव प्रकट हुए,
राजपाठ पाने के लिए झगड़ा हुआ।
ब्रह्मा बोले राज मेरा,
विष्णु बोले राज मेरा।
ब्रह्मा बोले जो समुद्र के,
इस किनारे से उस किनारे कुल्ला पहुंचायेगा,
उसका राज होगा।
ब्रह्मा ने कुल्ला किया आधे समुद्र में पहुंचा।
दूसरा कुल्ला विष्णु ने किया पार किनारे पहुंचा।
ब्रह्मा बोले जो कच्चा कोरा मास खायेगा,
उसका राजपाठ होगा।
ब्रह्मा विष्णु कच्चा कोरा बकरा खाने लगे।
ब्रह्मा बोला खाया नहीं जा रहा।
विष्णु कच्चा कोरा मांस खा बैठा।
राज पाठ विष्णु का होने लगा।
पहले चार कमल नाल उत्पन्न हुए,
चार डण्डी से चार पर्वत निकले।
चार पर्वतों से गुरू गोरखनाथ निकले।
बाई आंख से चन्द्रमा निकले रात प्रकाशमान की।
दाई आंख से सूरज निकले दिन प्रकाशमान किया।
कान से झंझावात हवा निकली,
मसूड़ों से वासुकी नाग निकले।
जीभ से सरस्वती निकली,

गले ते गलेसर पन्ने।
पीठी ते पठेसर पन्ने,
हिक्का ते काकड़ी जीव रूप पन्ने।
घुण्डी ते घमेसरी पन्ने।
नौहां ते अष्टकपाल देवते पन्ने,
पैरा ते पंजहांडनु पन्ने।
सभी ते पहिले महाराजे,
कच्छपा वे पृथी साम्हणी लाई।
कच्छप बोले पृथी भीतरे मेरे,
सच्चे झूठे बचार होणे।
ऐसे गल्ले मेरे सामधी नी।
विष्णुए क्या किता जे,
नौखण्ड पथ्वीरे किते।
चलदी बैंहदी पातर भूमि आपू वे रखी,
टाहर टूंकर ब्रह्मे वे देई दिते,
श्मशान-सुनसान भूमि महादेवा वे।
ब्रह्मा लोपत हुआ।
चहुं कूयं भीतर ब्रह्मा तौपा,
ब्रह्मा कैती वि नि मिलया।
माहुरे मखरा कोई खांदे नि पींदे नी।
माहुरे बोला, मेरा मखरा खाले पीले शुद्ध केरलै,
मूं ब्रह्मा तोपी आणना।
महाराजे माहुरा मखरा शुद्ध किता,
सब खांदे-पींदे लगे।
महाराजे ब्रह्मा द्रभा री डाली हेठा गा,
तोपी केरी आन्दा।
महाराजे दाहणे हाथा रा फेरा,
छाती तरफा वे दिता।
ब्रह्मा बोले महाराज, उल्ट फेरा देणेंगे,
पूजा करी फल निष्फल होंदा।

गले से गलेसर निकले।
पीठ से पठेसर निकले,
छाती से जीव जन्तु निकले।
नाभि से नाभि कमल निकले,
इन्द्रियों से इन्द्रजीत निकले।
पट्ट से पटेसर निकले,
जान्हू से जनेश्वर निकले।
गोडे से गड़ेसर निकले,
एड़ी से घमेश्वरी निकली।
नाखूनों से अष्टकपाल देवते निकले,
पैर से पंजवीर निकले।
सबसे पहले महाराज ने
कच्छप को पृथ्वी सम्हालनी चाही।
कच्छप ने कहा, पृथ्वी के अन्दर मेरे,
सच्चे झूठे बिचार होंगे।
ऐसी बातें मेरे से सही नहीं जाएगी।
विष्णु ने क्या किया कि,
नौखण्ड पृथ्वी के बनाये।
चलती बहती पवित्र भूमि अपने को रखी,
पहाड़ ढंखार ब्रह्मा को दे दिए,
शमशान-सुनसान भूमि महादेव को।
ब्रह्मा लुप्त हो गए।
चारों किनारों में ब्रह्मा को ढूंढा,
ब्रह्मा कहीं भी न मिला।
मधुमक्खी का शहद कोई खाते नहीं पीते नहीं।
मधुमक्खी बोली, मेरा शहद खाएंगे पीएंगे शुद्ध करेंगे,
मैं ब्रह्मा ढूंढ निकालूंगी।
महाराज ने मधुमक्खी का शहद शुद्ध किया,
सब खाने पीने लगे।
महाराज ने कुशा की डाली ब्रह्मा के नीचे से,

महाराजे दूजा फेरा,
दाहने हाथे रा पिठी तरफा ते दिता,
परदच्छणा शुभ हुई।
ब्रेह्म चार वेद किते,
पन्द्रह तिथी शुकली,

तलाश करके लाई।
महाराज ने दाहिने हाथ का चक्कर,
छाती की तरफ को दिया।
ब्रह्मा बोले, महाराज! उल्टा चक्कर देंगे,
पूजा करके फल निष्फल होगा।
महाराज ने दूसरा चक्कर
दाहिने हाथ से पीठ की तरफ से दिया,
प्रदक्षिणा शुभ हुई।
ब्रह्मा ने चार वेद किए,
पन्द्रह तिथी शुक्ल पक्ष,

मण्डियाली

पन्द्रह तिथी कृष्ण किती।
नौग्रह देवते बनाये,
गणपति गणाधिराज बनाये।
बारह महीने, बारह महीने री एक बौर्ष बणाई।
एकसा बरशेरी चार रिती बणाई।
रूड़दी-चुड़दी-सर्दी-बसंन्त।
ब्रह्मा बोले, महाराज! दुनियां लोक मून्हें,
ब्रह्मा नि बोलदे भाट बोल्दे।
महाराज बोले, तू ही ब्रह्मा तू ही भाट।
कनैकता रोज़ भाटी खान्दा,
तवै भाट बोलदे।
फेरी महाराज, मच्छा वै सम्हालनी लाई,
मच्छे सात समुद्रारा पूरा पौहरा लेया।
महाराजे महादेवा वे सम्हाल्नी लाई,
महादेवे नौखण्ड पृथीरा,
रिज़क बांडणा किता।
महाराजे शेषनागा वै सम्हालनी लाई,
शेषनागे बोले मेरे शाहा री शूंक जैसी,
ता होरे वृख शूकै फिरने,
जिउन्दे जीव सभी मौरनै।
महाराजे बैल बाछे वै साम्हणी लाई
बैल वत्स, खुरे लाई खुरकी,
काफुए लाई तुलकी।
तोहागा पोरे,
एकी शिंगा ऊपरे साम्ही।

हिन्दी अनुवाद

पन्द्रह तिथि कृष्ण पक्ष किए।
नवग्रह देवते बनाये,
गणपति गणाधिराज बनाये।
बारह मास, बारह मास का एक बर्ष बनाया।
एक बर्ष की चार ऋतुएं बनाई,
गर्मी-बरसात-सर्दी-बसन्त।
ब्रह्मा बोला, महाराज!
दुनियां के लोग मुझे,
ब्रह्मा नहीं बोलते भाट बोलते।
महाराज बोले तू ही ब्रह्मा तू ही भाट।
व्रत अनुष्ठान में रोटी खाता,
तब भाट बोलते।
फिर महाराज ने, मत्स्य को संभालनी चाही।
मत्स्य ने सात समुद्र का पूरा पहरा किया।
महाराज ने महादेव को संभालनी चाही।
महादेव ने नौखण्ड पृथ्वी के
अन्न बांटने की जिम्मेदारी चाही।
महाराज ने शेषनाग को संभालनी चाही।
शेषनाग बोले, मेरी फनकार की फूंक से,
हरे वृक्ष सूख जायेंगे,
जीते जीव सब मरेंगे।
महाराज ने बैल वत्स को संभालनी चाही।
बैल वत्स ने, खुर से धरती को खोदा,
कन्धें से भार का अनुमान लगाया।
उसके बाद,

मधु कनकोरनु एक बहण थी, स्त्री थी।
भीमाकाली तेस्सारा नाओं थी।
तेस्सा स्त्री री भोरी,
छः महीने रा थाडंरू।
कौला रा फूल करामात पिण्डी दिती।
नोहोगी भीतरै पूजी, भरस भरी नदी।
नदी तेरे लांग्ही निसी!

एक सींग के पर थामी (सम्हाली)।
मधु कनकोरनी एक बहन थी, एक महिला थी,
भीमाकाली उसका नाम था।
उस स्त्री की गोद में छः महीने का शिशु था।
कमल का फूल और करामाती पत्थर-पिण्डी दी।
हनोगी के पास पहुंचे पानी भरी नदी,
नदी उसके लांघी न गई।

मण्डियाली

रूपी ठाकरा वै ध्यान सुनाई बठा।
रूपी ठाकरे तेस्स सूरता परतागा,
बारह वीहा तोर तुहण तैयार किते।
स्त्री नदी पार लंघाई दिती।
कमलोश धारा जाई बठा।
मड्घ्याल नांवे जगा रखी बठा,
देहणे कनारे नज़र दिती,
लाघ रौहण शुजदा लागा।
लाघ तेरे दादुए तौभे,
वांहदी पतरा रा भोग लगदा स्थल दिता।
वौंशा भीतर जाई बठा,
बाई आच्छे काफल तजी बठा।
बदार कदार जाई बठा,
बदार कदार हिका रूम करी बठा।
निसू पाहरनू जाई बठा,
वारा विहा वदारी जयकारी मनदे लगे।
तू भी जयकार देई निसा,
तियां बी मिठी पंघारी छाडी निसे।
मैंहणी रे मैंगण पोगलू,
चहुं दिशा जो सुटी दिते।
एक मैंगण पारवती वै दिता,
तू भी जयकार देई निसा,
तियां बी मिठी पंघारी छाडी निसे।
मडघ्याल गला पाई बेठा।
स्त्री री भोरी पात्थर बांधे,

हिन्दी अनुवाद

रूपी ठाकुर को ध्यान सुपना दिया।
रूपी ठाकुर ने उसे सुबह होने तक,
बारह बीस तोर तुहण बनाये,
कमलोश धार पर जा बैठा,
मड्ग्याल नामक जगह स्थापित कर बैठा।
दायें किनारे नज़र दी,
लाघ रौहण गांव दिखने लगे।
लहाघ गांव दादू (पराशर) ने तुझे,
बांहदी के पास भोग लगता स्थल दिया।
बोंशा गांव जा बैठा,
बाई पर आच्छा काफल त्याग बैठा।
बदार कदार जा बैठा,
बदारों को छाती बाल (दिल का प्यारा) बना बैठा।
निसू के मेहमान जा बैठा।
बारह बीस बदारी जयकार करने लगे।
मैंहणी के मैंगण पोगलू,
चारों प्रजा क्षेत्र के लोगोंको बांटे।
एक मैंगण पार्वती को दिया
तू भी जयकार दे न,
वहां भी मिठी पंघाड़ी छोड़ी नहीं।
मडघ्याड के गले पा बैठा।
स्त्री की गोद में पत्थर दिए।
तेरी करामात पिंडी बनाई,
वीरान जंगल व ढांक में फैंक दी।
स्त्री का मन भ्रमित हुआ,

तेरी करामात पिंडी बणाई,
वणखंडा वे चाहर ढूंकरा में शटी दिती।
स्त्री चित भ्रमित हुई,
साते ध्याड़े बलदी लगी।
तेस्स ध्याड़े ठारह करडू सिर बजीरी,
तेरे दादुए तौभै दिती।
ठारह करडू री नियमाचारी,

सातवें दिन बोलने लगी।
उस दिन ठारह करड़ू की सिर बजीरी,
तेरे दादू ने तुझे दी।
ठारह करड़ू की नियमाचारी

मण्डियाली

चंडोही वै दिती।
ठारह करड़ू री गलोलपाणी, देव वरनागा वै दिती।
ठारह़ करड़ू पालसूत्र, टेकरूनागा वै दिता।
चहुं धारे रा पहरा, बा वै दिता।
आप मराद तेरी भार्था सिधेरी वोही,
ध्याड उडली रात भ्याली हो देवा।
एक ध्याड़े तेरे दादुए तोभे शराप दिता।
तेवे काहरे क्याड़ूए तेरे दर्द हुआ।
तें फिरी आपणी देही री, दूई देही करनी लाई।
जेस्स जगा नदी कनारे,
व्यास ऋषि भीतरे न्हयाहुण केरना थिया।
तेस्स जगा वे ढाई हाथ डोर शेटी बठा।
ढाई हाथ डोरा भीतरे,
कौंला रा फूल करामाती पिण्डी,
छौ महीने रा था थाउंटूरी,
पाप हत्या तेरे दादू रै तेरे गोले तड़ी।
ओंग देऊ धारा धरणी सुरगा ते चूड़े,
तैं फिरी बापणी देही री दूई दही करनी लाई।
धरती पन्ने कौंलारा फूल दऊं।
हाखी बंधे महादेव पार्वती कथा देंदे।
धुन्धू धारा धुइयां कारा,
निहार घोर पृथ्वी जल थी,
सात समुन्दर पन्ने, सात समुद्रा ते सून पन्ने।
सुना सते गून पन्ने, गूणा ते ध्वन्छ पन्ने।
ध्वंछा ते धुज पन्ने,
धूजा ते पीपल पन्ने।
पिपला ते पडासर पन्ने,
पडासरा ते व्यास पन्ने।
व्यासा ते देउधारा धरणी पन्ने,

हिन्दी अनुवाद

चंडोही को दी।

ठारह करडू का पुला पहरा, देवता वरनाग को दिया।

ठारह करडू का पाल सूत्र, टेकरूनाग को दिया।

चारों धारों का पहरा ब्रा को दिया।

आप मुराद से तेरी भार्था सिद्ध की।

दिन उतरेगा रात खुलेगी देवता।

एक दिन तेरे दादू ने तुझे श्राप दिया।

तब कन्धे और गर्दन में दर्द हुआ,

तूने अपनी देह की, दो देह बनानी चाही।

जिस जगह नदी किनारे,

व्यास ऋषि ने स्नान करना था।

उस जगह में अढाई हाथ रस्सी फेंक बैठा।

अढाई हाथ रस्सी के अन्दर,

कमल का फूल करमाती मूर्ति।

छः मास के मिस्त्री की,

पाप हत्या तेरे दादा (पराशर) के गले में फंस गई।

शुकदेव मुनि धारा धरणी स्वर्ग से उतरे,

धरती पर आये कमल के फूल में बंधे।

आंख बन्द करके महादेव पार्वती कथा देते।

धुआं ही धुआं छाया।

घनघोर अन्धेरी पृथ्वी जल थल थी,

सात समुद्र निकले। सात समुद्र से शून्य निकला।

शुन्य से गुण निकले, गुण से बादल निकले।

बादल से धरती उभरीं

धरती से पीपल निकली,

पीपल से पराशर निकले।

पराशर से व्यास निकले।

व्यास से देवता धरा धरणी (शुकदेव) उपजे।

नवम् अध्याय
सिरमौर की देव भार्थाएं

शिरगुल महाराज चूड़धार

सिरमौरी

शाब तेरो शाबग राजा जन्मौरे ठाए।
उम्र तांई शिरगुला धान गोआ बोई।
एकी बीए बोई ओरू साते बीए लोई।
खौरिए काकिए चैली था खांदा।
चैली खै आणा तीएं सातुं रा पींडा।
कैई नि आणी काकिए हाथो धोणे की पाणे।
तेअरा तू ए पुरूषा तौ इथिए इही फटाले।
रोशे रे झुनजणो शिरगुलौ दे आए।
बीच खेच दे फानिए लाए।
लाए राजा फानिए पाणी बै कि फूटो।
खोलो बालदो दिती शिरगुले लेरौ।
छलाछल भरिए शाबगौ रे सैरो।
हाट खेडों शिरगुला कन्टु कराड़ौ।
जान्दे गोए बौन्दे धुन्धु रियाड़ो।
धुन्धु रियाड़ौ दे चितै लागे आए।
हाट लेओं शिरगुलै चितिए खाए।
देवे राजे शिरगुले दे रोशरे आए।
कुशरौ पौलो दी खाडणौ पलाए।
चार टुकड़े चिती रे काटियो पाए।
तेथिए शिरगुला दिल्ली खे जाए।
देवे राजे शिरगुले रसोए लाए पकाए।
पौरो गाशे टोकणा झौल थिए लाए।
दिल्ली रे मुगलौ कठै लागे आए।

शिरगुल महाराज चूड़धार

हिन्दी अनुवाद

शाब तेरे शाबग में राजा के घर जन्म लिया।
उम्र भर शिरगुल ने धान की फसल बीजी।
एक बार बीजी सात बार काटी।
सौतेली मां से चैली दोपहर का भोजन खाता।
दोपहर के भोजन को रखा उसने सतु का पेड़ा।
क्यों नहीं लाया काकी हाथ धोने को पानी।
अगर तू एक पुरूष है तो यहीं पानी निकाल ले।
रोष से गुस्सा शिरगुल को आया।
बीच खेत में पांव की एड़ी से मारा प्रहार किया।
एड़ी के प्रहार से पानी का फवारा फूटा।
खोले बैल दिए शिरगुल चीख पुकार की।
छलाछल भर गए शाबगो के खेत।
व्यापारी काफला शिरगुल चलते हुए।
चलते हुए पहुंचे धुन्धु पर्वत गुफा।
धुन्धु पर्वत गुफा में अजगर प्रकट हुआ।
व्यापारी लेकर शिरगुल ने अजगर खाए।
देवराज शिरगुल को गुस्सा आया।
पत्थर पर घिसकर तलवार तेज़ की।
चार टुकड़े अजगर के काट के किए।
वड़ां से शिरगुल दिल्ली को गए।
देवराज शिरगुल ने रसोई दी पकाई।
खीर का वर्तन पैरों के पर टिकाकर आंच थी लगाए।
दिल्ली के मुगल इकटठे थे आए,।

तैनिए मुगलै गा ले थे घाए।
देवराज शिरगुले दिते थे दहाऐ।
तैनिए मुगलै माने न दुहाऐ।
ग रे गले दी छुरी बिहाए।
खीरौ रे टिकणे दी लाते लगाए।
चार टुकड़े मुगलौं रे काटिये पाये।

वे मुगल गाय का हनन करने थे आए।
देवराज शिरगुल ने दिए थे ललकारे।
खीर का वर्तन लात से दूर फैंका।
वे मुगल माने नहीं ललकार।
ग की गर्दन छुरी से काटे।
मुगलों के काट के चार टुकड़े कर दिए।

संदर्भ ग्रंथ

हिंदी

1 किन्नर लोक साहित्य, डॉ बंशी राम शर्मा, ललित प्रकाशन लैहड़ी सरेल बिलासपुर हि.प्र. -1971

2 कुलूत देश की कहानी, लाल चंद प्रार्थी, नीलकमल प्रकाशन, कुल्लू हि.प्र.- 1971

3 पर्यटकों का स्वर्ग देवभूमि कुल्लू, डॉ सूरत ठाकुर, पुरातत्व चेतना संघ, कुल्लू हि.प्र. -1997

4 पहाड़ी संस्कृति मंजुषा, मौलू राम ठाकुर, रिलायन्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली -1996

5 पश्चिमी हिमालय में नाग परम्परा, सं. हीराल ठाकुर, विद्या शर्मा, देवप्रस्थ साहित्य एवं कला संगम कुल्लू हि.प्र. -2012

6 माण्डव्य प्रभा, डॉ. विद्याचन्द ठाकुर, पुरातत्व चेतना संघ मण्डी हि.प्र. -1990

7 लाहुल सिपति, सं. सुदर्शन वशिष्ट, सचिव हि. क. सं. भाषा अकादमी शिमला -2003

8 हिमाचल के पूजित देवी देवता, मौलू राम ठाकुर, ऋषभ चरण जैन एवं संतति नई दिल्ली -1981

9 हिमाचल की देव संस्कृति, डॉ0. सूरत ठाकुर, एच.जी. पब्लिकेशन्ज़ नई दिल्ली -2004

10 हिमालय की विस्मयभूमि लाहुल, डॉ. डी.डी. शर्मा, इरा प्रकाशन पंत कुटीर लक्कड़ बाज़ार सोलन हि.प्र.-1998

पत्र-पत्रिका

1 गिरीराजः सूचना एवं जनसंपर्क विभाग हिमाचल प्रदेश।

2 विपाषाः भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला हि.प्र.।

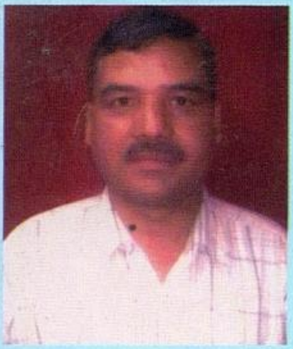
3 भृगुतुंगः कुलूत संस्कृति विकास मंच बबेली कुल्लू हि.प्र.।

4 सोमसीः हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी शिमला हि.प्र.।

5 हिमभारती: यथोपरी।
6 हिमप्रस्थ: सूचना एवं जनसंपर्क विभाग हिमाचल प्रदेश।

English Books

1 Distt Gazeteer of Kullu, Ed. T.C Janartha Govt. of H.P -2000
2 History of Punjab Hill States, J. Huchison & J.Ph. Vogel, Deptt of Languages and Culture H.P (Reprint) -1982
3 Himalayan Wonder Land, Manohar Singh Gill, Penguin Books India pvt. Ltd. Delhi-2010
4 The Himalayan Distt of Kolloo, Lahoul & Spiti, A.F.P. Harcout, Vivek Publications House Delhi (Reprint) 1972 -2010
5 Myths & Rituals of Himachal Pradesh, M.R.Thakur, Indus Publishing Company New Delhi -1997



डॉ. सूरत ठाकुर

लेखक का ज़न्म 7 अप्रैल 1960 को कुल्लू ज़िला के गांव शियाह में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गांव के स्कूल में ग्रहण करने के बाद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुल्लू से स्नातक तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से स्नातकोतर तथा पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इसके अतिरिकित प्रथम श्रेणी में सूचना एवं जनसंचार में स्नातकोतर डिप्लोमा और नेचुरापैथी में डिप्लामा पास किए।

लेखक का शोधकार्य में विशेष लगाव रहा है। अब तक लेखक की संगीत तथा हिमाचली लोक संस्कृति से सम्बन्धित 'हिमाचल प्रदेश के लोकवाद्य', 'हिमाचल की देव संस्कृति', 'संगीत मंजरी', 'पर्यटकों का स्वर्ग देवभूमि कुल्लू', 'युगद्रष्टा कर्मयोगी- स्व. ठाकुर वेद राम', तथा मलाणा की लोक-संस्कृति पर आधारित उपन्यास 'हारका', फोल्क म्युज़िकल इन्स्टुमैण्ट ऑफ हिमाचल प्रदेश आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा माईनर रिसर्च परियोजना के अन्तर्गत 'कुल्लू जनपद की देवपरम्परा में संगीत की भूमिका' नामक विषय पर शोधकार्य किया है। इसके साथ-साथ 'कुल्लू की ऋषि परम्परा, कुल्लू के सर-सरोवर तथा कुल्लू व लाहौल-स्पिति के वस्त्राभूषण एवं खानपान' नामक पुस्तकों का संपादन भी किया है। इसके अतिरिक्त लेखक के अनेकों शोध पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकओं में प्रकाशित हो चुके हैं। लेखक अब तक प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर के अनेकों सेमिनारों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत कर चुके हैं।

डॉ. सूरत ठाकुर साहित्य एवं कला परिषद कुल्लू के अध्यक्ष तथा देवप्रस्थ साहित्य एवं कला संगम कुल्लू के महासचिव हैं। लोक संस्कृति तथा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इन्हें कुल्लू पीपुल एसोसियेशन शिमला, ज़िला सहकारी संघ कुल्लू, ऑथर्ज़ गिल्ड ऑफ हिमाचल प्रदेश तथा

ISBN 978-93-82341-88-8
9 789382 341888

अक्षरधाम प्रकाशन
करनाल रोड, कैथल-136027 (हरि.)
फोन 01746-235862, 09215897365
email : akshardhamparkashan@gmail.com